उत्कृष्ट शंका–समाधान

'मानव मन को आन्दोलित करने वाले
लौकिक–पारलौकिक प्रश्नों के सटीक उत्तर'
(प्रथम भाग)

समाधानकर्ता

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक

सम्पादक

डॉ. राधावल्लभ चौधरी
(एम.बी.बी.एस.)

प्रकाशक

वानप्रस्थ साधक आश्रम

आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, जि. साबरकांठा (गुजरात) ३८३३०७
दूरभाष : (०२७७४) २७७२१७, (०२७७०) २५७२२४, २८७४१७
वानप्रस्थ साधक आश्रम : (०२७७०) २५७२२०
E-mail : darshanyog@gmail.com • Website : www.darshanyog.org

पुस्तक	: उत्कृष्ट शंका–समाधान (प्रथम भाग)
उपदेशक	: स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक
संपादन एवं संकलन	: डॉ. राधावल्लभ चौधरी (एम.बी.बी.एस.)
प्रकाशन तिथि	: सितम्बर 2010 भाद्रपद 2067
संस्करण	: प्रथम
मूल्य	: 30 रुपये
मुख्य वितरक	: आर्य रणसिंह यादव द्वारा डा. सद्गुणा आर्या 'सम्यक्', सरकारी कर्मचारी सोसायटी के पास, गांधीग्राम , जूनागढ, (गुजरात) 362 001

प्राप्ति स्थान

1. **आर्यसमाज मंदिर,** महर्षि दयानन्द मार्ग, रायपुर दरवाजा बाहर, कांकरिया, अहमदाबाद।
2. **विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द** 4408,नई सड़क, दिल्ली–6
3. **आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय,** खर्राघाट, नर्मदापुरम्, होशंगाबाद (म.प्र.)
4. **ऋषि उद्यान,** आना सागर, पुष्कर रोड, अजमेर (राजस्थान)
5. **गुरुकुल आश्रम,** आमसेना, खरियार रोड,जिला नवापारा, (उड़ीसा)
6. **श्री चंद्रेश आर्य,** 310, वार्ड नं. 11–बी, साधु वासवाणी सोसा. गोपालपुरी, गाँधीधाम, कच्छ (गुज.) ।
7. **आर्य समाज मंदिर,** पोरबंदर, राजकोट भरुच, मोरबी, टंकारा, जूनागढ़, गाँधीनगर, आणंद, जामनगर, भावनगर आदि।
8. **आर्य प्रतिनिधि सभा,** 15, हनुमान रोड, दिल्ली।
9. **श्रुति न्यास,** सी–73, सै.–15, राउरकेला (उडीसा)

विषय सूची

प्रकाशकीय

मनुष्य को जब तक किसी वस्तु का पूर्ण तथा स्पष्ट ज्ञान नहीं होता, तब तक उसके मन में उस वस्तु से विषय में भ्रान्ति तथा संशय बना रहता है। ऐसी स्थिति में वह उस वस्तु का समुचित उपयोग करके उससे पूर्ण लाभ उठाने की बात तो दूर रही, उसके मन में उस वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा भी उत्पन्न नहीं होती है। आज लोगों की यही स्थिति ईश्वर, धर्म, ध्यान, यज्ञ, सेवा, त्याग, दान-पुण्य, पूजा-पाठ, जप-तप आदि के विषय में बनी हुई है। न तो वे इन सूक्ष्म आध्यात्मिक पदार्थों के स्वरूप को ठीक प्रकार से समझ पा रहे हैं, न ही इनसे पूरा लाभ उठाकर अपने जीवन को शांत, सुखी, सम्पन्न और सन्तुष्ट बना पा रहे हैं।

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक ने अपने निर्देशन में सैंकड़ो क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया। उन्होंने इन शिविरों में लोगों के मन में उठने वाली आध्यात्मिक शंकाओं का समाधान करने की परम्परा प्रारम्भ की। वे शिविरार्थी के द्वारा पूछी गयी शंका का समाधान तर्क, युक्ति, प्रमाण व उदाहरणों के साथ किया करते थे। इससे लोगों के मन में वर्षों से बनी हुई मिथ्या-धारणाएं दूर होती थीं और परिणाम स्वरूप ईश्वरोपासना में उनकी अद्‌भुत रूप से प्रगति होती थी।

वर्षों से मेरी इच्छा थी कि आर्यवन, रोजड़ स्थित दर्शन योग महाविद्यालय एवं वानप्रस्थ साधक आश्रम के शिविरों में पूछी जाने वाली शंकाओं और उनके समाधान से सम्बन्धित एक पुस्तक प्रकाशित की जाये। मैनें स्वामी विवेकानन्द जी से निवेदन भी किया किन्तु उनके पास समय न होने के कारण वे लिख नहीं सके। यह कार्य डॉ. राध ाावल्लभ जी ने बड़े उत्साह, परिश्रम, तन्मयता और पुरुषार्थ के साथ प्रभावशाली रूप में लेखबद्ध कर सम्पन्न किया है। इस पुस्तक का प्रकाशन करते हुवे मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। पाठकों को निश्चित ही इस पुस्तक को पढ़कर ऐसा लगेगा, जैसे कि हमने थोड़े से समय में बहुत कुछ पा लिया है।

ईश्वर की कृपा से हमारी सभी शंकाएँ और भ्रम दूर हों, ताकि हम निर्भ्रान्त होकर अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। इसी आशा एवं विश्वास के साथ...

वानप्रस्थ साधक आश्रम
श्रावण कृ.6/2067 (01-08-2010)

शुभेच्छुक
ज्ञानेश्वरार्य

शंका समाधान कर्ता की ओर से स्पष्टीकरण

इस पुस्तक में मुझसे ध्यान–योग शिविरों में श्रोताओं द्वारा पूछी गयी शंकाओं के समाधान हैं। शंकाओं में शब्दावली लगभग यूँ की यूँ रखी गई है, एकाध जगह पर कुछ शब्दों में प्रश्न के स्पष्टीकरण के लिए भले ही कोई शब्द बदला हो। समाधान में भी वही भाषा छापी गयी है, जो शिविर में शंका–समाधान के लिए बोली (रिकार्ड की) गई थी।

जब व्यक्ति सामने बैठा हो तो कुछ उसके स्तर की भाषा बोलनी पड़ती है। जब उसे पुस्तक रूप दिया जाता है, तो कुछ अलग स्थिति होती है। इसलिए बोलने और लिखने में अंतर आ जाता है। फिर भी शंकाओं के जो समाधान किये गए हैं, उनको छापते समय भी हमने भाषा में कहीं कुछ थोड़ा बहुत अंतर किया है, जो कि विषय को समझने की दृष्टि से आवश्यक था।

वैसे तो मैं हिन्दी ही बोलने की प्रेरणा देता हूँ। परन्तु जिन लोगों में मैं काम करता हूँ, वे लोग शुद्ध हिंदी समझते नहीं हैं। इसलिए मैं भी इसी खिचड़ी भाषा का प्रयोग अधिक करता हूँ। हाँ, जहाँ मुझे हिंदी, संस्कृत समझने वाले और बोलने वाले मिलते हैं, वहाँ पर मैं शुद्ध हिंदी, संस्कृत में भी बात करता हूँ, परन्तु यह शंका–समाधान का कार्यक्रम क्योंकि सामान्य लोगों में हुआ था, इसलिए इसकी भाषा भी वही खिचड़ी है।

संपादक श्री (डॉ). राधावल्लभ चौधरी के द्वारा भी विषय को और अधिक सरल तथा जनसामान्य की समझ के अनुरूप बनाने के लिए पुस्तक की भाषा में और प्रस्तुतिकरण में थोड़ा बदलाव किया है।

भाषा अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाने का एक माध्यम है। यदि श्रोता मेरी भाषा को समझता ही नहीं है, तो मेरा बोलना व्यर्थ समय नष्ट करना है। यह श्रोताओं के साथ अन्याय है। इसलिए श्रोता जिस भाषा को समझता हूँ, मैं वही भाषा बोलने का प्रयास करता हूँ। जब श्रोता मेरी बात समझ कर लाभ उठा लेता है, तो मुझे अपना परिश्रम भी सार्थक लगता है। इसलिए मैंने इन समाधानों में खिचड़ी भाषा का प्रयोग किया है।

दूसरी बात, मैं एक ईमानदार योगाभ्यासी हूँ, यम–नियमों का पालन श्रद्धापूर्वक करता हूँ, मैं कोई सर्वज्ञ नहीं हूँ,। इसलिए मेरे द्वारा किये गए समाधानों में यदि अल्पज्ञता से कहीं कोई भूल रह गई हो और वह मुझे समझ में आ जाएगी, तो मैं उसे दूर करने का प्रयत्न करूँगा। शेष इन समाधानों में जो बातें मैंने कही या बताई हैं, वे सब वेद आदि शास्त्रों के आधार पर प्रमाणिक हैं। आशा है, बुद्धिमान लोग इन समाधानों से लाभ उठाएँगे और दु:खों से छूट कर सुख की प्राप्ति करने का प्रयत्न करेंगे।

आपका शुभचिंतक

स्वामी विवेकानंद परिव्राजक

मेरे अपने भाव

करीब पन्द्रह वर्ष पूर्व जब मैं अपने कहे जाने वाले लोगों की उपेक्षा, तिरस्कार, परिचितों के विश्वासघात और अपनी अज्ञानता, अयोग्यता, विपन्नता और रोगों से पीड़ित होकर दु:ख और निराशा के गहरे समुन्दर में गोते लगाता हुआ इनसे पीछा छुड़ाने का असफल प्रयत्न कर रहा था कि तभी प्रभु कृपा से परम कारुणिक आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी का मुझे सहारा मिला। उन्होंने मुझे दर्शन योग महाविद्यालय में ड़ेढ़ माह अपने सान्निध्य में रहने की अनुमति दी। इस दौरान मैं जैसे–जैसे महाविद्यालय के नियमानुसार सुबह चार बजे जागरण, स्नान, व्यायाम, ध्यान, यज्ञ, स्वाध्याय, सत्संग आदि नियमित दिनचर्या के अंगो का पालन करता चला गया, दु:खद स्मृति, चिंता, अज्ञानता, अयोग्यता और रोग घटते चले गए तथा सहनशीलता, सुख, शांति, एकाग्रता, बुद्धि, स्मृति, ज्ञान और वैराग्य बढ़ते चले गए, शारीरिक उन्नति भी होती चली गई। इसके बाद तो साल में एक बार एक–दो माह विद्यालय में ही रहने का नियम बना लिया।

मैं सोचता था कि कितना अच्छा होता कि जो लोग यहाँ नहीं आ पाते हैं, उन्हे भी यह लाभ मिलता। उन्हे भी संसार की वास्तविकता का ज्ञान मिल सके ताकि वे भी अपने को दु:खी होने से बचा सकें और मस्ती से अपनी जिन्दगी को जी सकें। मैं पूज्य आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी का हमेशा आभारी रहूँगा, जो उन्होंने अपने, स्वामी विवेकानंद जी के और आचार्य सुमेरु प्रसाद जी के मेरे द्वारा संपादित प्रवचनों को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने की अनुमति दी। श्रद्धालुजन धर्म प्रचार के इस कार्य की गति को तीव्र करने हेतु अपनी सामर्थ्यानुसार आश्रम को सहयोग कर पुण्य–लाभ अर्जित कर सकते हैं।

पुस्तक निर्माण में आचार्य सुमेरू प्रसाद जी, ब्रह्मचारी अरुण कुमार 'आर्यवीर' जी (संपादक–सांतसा), मेरी धर्मपत्नी श्रीमती (डॉ.) रेखा चौधरी, मित्र श्री सुरेन्द्र दुबे (वरिष्ठ पत्रकार), एवं श्री दीपक दीक्षित (सी.ओ.) ने सहयोग प्रदान किया, जिसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। पुस्तक निर्माण के प्रेरक ब्र. दिनेश जी और प्रकाशन में सहयोगी ब्र. प्रियेश जी को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। उत्कृष्ट शंका–समाधान तीन भागों में प्रकाशित होगी। प्रस्तुत भाग में कोई त्रुटि हो गई हो तो पाठकगण मुझे अवगत कराने का उपकार करने की कृपा करें, ताकि अगले संस्करण में उसे शुद्ध किया जा सके।

दिनांक 15 जुलाई, 2010

संपादक

डॉ राधावल्लभ चौधरी
14, सरगम अपार्टमेन्ट, राईट टाउन,
जबलपुर (म.प्र.) मो. 09424306170
E-mail: cdrradhavallabh@yahoo.in

ओ...म्

उत्कृष्ट शंका–समाधान

(प्रथम भाग)

1. शंका– 'शंका–समाधान' क्या है, इससे क्या लाभ होते हैं। कृपया इसके नियम बताइए?

☯ ***समाधान***– 'शंका–समाधान' एक आवश्यक कार्यक्रम है। महर्षि दयानंद सरस्वती ने यजुर्वेद के भाष्य में एक स्थान पर लिखा है कि, ***जब–जब विद्वानों के समीप जाएं, तब–तब सबके कल्याण के लिए प्रश्नोत्तर अवश्य करें।*** ''*जब–जब विद्वानों के समीप जाएं, तब–तब सबके कल्याण के लिए*'' यह वाक्यांश खास ध्यान देने का है। अपने और सबके हित के लिए प्रश्न पूछें। इससे अपनी शंका का समाधान तो होगा ही, साथ ही दूसरों को भी लाभ मिलेगा। इस दृष्टि से प्रश्नोत्तर कर सकते हैं।

'शंका–समाधान' कार्यक्रम के बारे में कुछ बातें भूमिका के रूप में समझें। दरअसल, इसमें दो हिस्से हैं। एक हिस्सा है– शंका पूछना, और दूसरा हिस्सा है – उसका समाधान करना यानि कि उत्तर देना।

सवाल उठता है कि, इसमें से कौन सा हिस्सा सरल है? वस्तुतः ***शंका पूछना सरल है, जबकि उत्तर देना कठिन।*** सरल काम आपके हिस्से में है, और कठिन काम मेरे हिस्से में है, क्योंकि उत्तर मुझे देना है।

कोई भी काम अगर नियमपूर्वक किया जाए, तो उसमें बहुत लाभ होता ही है। यदि नियम तोड़कर काम करेंगे, तो उससे लाभ तो होगा नहीं, उलटे नुकसान ही होगा। कार्यक्रम 'शंका–समाधान' आपके लाभ के लिये शुरु किया गया है। अतः स्पष्ट है कि –

यदि 'शंका–समाधान' के नियमों का पालन करेंगे, तो बहुत लाभ होगा। इसके विपरीत, विहित नियमों का पालन नहीं करेंगे, तो नुकसान होगा।

भगवान की कृपा से, गुरुजनों के आशीर्वाद से मुझे काफी कुछ सीखने को मिला है। उसके आधार पर मैं आपके प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करूँगा। पर हम दोनों इस बात का ध्यान रखेंगे कि 'शंका–समाधान' के नियमों का पालन हो।

शंका समाधान के मोटे–मोटे नियम बताता हूँ :–

- शंका पूछने वाला व्यक्ति ***'जिज्ञासा भाव'*** से प्रश्न पूछे कि – ''हम तो बस जानना चाहते हैं।'' ***अपनी समस्या को सुलझाने के लिए प्रश्न होना चाहिए।*** उत्तर देने वाला व्यक्ति भी इसी भावना से उत्तर दे कि सामने वाले की शंका दूर करनी है, उसकी समस्या को सुलझाना है। वह किसी और भावना से उत्तर नहीं दे।

  आपकी जो समस्या जहाँ अटकी है, उसको सुलझाने के लिए ही उत्तर दिया जाएगा। उत्तर देने वाला भी इसी भावना से उत्तर दे कि मुझे इसकी शंका का समाधान करना है। जो समस्या अटक रही है, उसको सुलझाना है। ***उसका मार्ग स्पष्ट करना है, वो कहाँ अटका हुआ है, उसकी वो उलझन दूर करनी है। इस भावना से उत्तर देना चाहिए।***

- पूछने वाला व्यक्ति कभी–कभी अपनी भावनाएं गलत बना लेता है। ऐसा व्यक्ति सोचता है कि – ''मैं ऐसा प्रश्न पूछूँगा, जिसका सामने वाले को उत्तर ही नहीं सूझे।'' वे लोग गलत सोचते हैं कि ''हम ऐसा कठिन, टेढ़ा–मेढ़ा सवाल पूछेंगे कि सामने वाला जिसका उत्तर ही नहीं दे पाएगा। और जब वो उत्तर नहीं दे पाएगा, तब सब तमाशा देखेंगे। सब लोग उस पर हँसेंगे, तो बड़ा मजा आएगा। ''याद रखें कि ऐसी भावना से प्रश्न पूछने से लाभ नहीं होता, बल्कि नुकसान ही होता है। इसलिए ऐसी भावना से प्रश्न पूछना ठीक नहीं है।

- आप भी एक गारंटी दें कि आप प्रश्न 'जिज्ञासा–भाव' से पूछेंगे और मन में कोई गलत उद्देश्य नहीं बनायेंगे।' ***दुःख देने के लिए, हार–जीत के लिए, सामने वाले को अपमानित करने के लिए, उसको नीचा और अपने को ऊँचा दिखाने के लिए प्रश्न–उत्तर नहीं करना है।*** मैं आपको अपनी ओर से गारंटी देता हूँ कि, आपकी समस्याओं को

सुलझाने के लिए ही आप के प्रश्नों के उत्तर दूँगा। किसी को दु:ख देना, अपमानित करना आदि एक प्रतिशत भी मेरा उद्देश्य नहीं है।

- कभी–कभी ऐसे प्रश्न भी सामने आ सकते हैं कि पूछने वाले ने एक प्रश्न पूछ लिया और बताने वाले को उत्तर समझ में नहीं आया। वहाँ पर मान–अपमान के कारण उसको झूठ नहीं बोलना चाहिए। उल्टा–पुल्टा कोई भी जवाब दे दें, ऐसा भी नहीं करना चाहिए। ***उत्तर नहीं सूझता तो साफ बोल दें – ''भई, हमको उत्तर समझ में नहीं आया।''***

पहले से मेरा स्पष्टीकरण सुन लीजिए। उत्तर मालूम है तो बता देंगे, नहीं मालूम तो साफ बोल देंगे कि, नहीं आता। झूठ नहीं बोलेंगे, जानबूझकर धोखा नहीं देंगे, यह गारंटी है। उत्तर आता नहीं है और तोड़मरोड़ करते रहें, ऐसा काम हमें नहीं आता है। ऐसा करना यम–नियम के विरुद्ध है।

- गुरुजी ने मुझे बहुत मजबूत बना दिया है। इसलिए मुझे तो कोई फर्क नहीं पड़ता। जिस प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं पता है, मैं तो साफ बोल देता हूँ कि इस प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं आता। ***प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने की कोई गारंटी नहीं है।***

जिस प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं आता तो भविष्य में और पढ़ेंगे, सीखेंगे और कभी उत्तर समझ में आ जाएगा तो फिर आपको बताएंगे। जितना समझ में आएगा, उतना बता देंगे। यह हमारी ओर से गारंटी है। पक्की बात बताएंगे, पूरा जोर लगाएंगे।

हम बुद्धि से, तर्क से, शास्त्रों के आधार पर प्रामाणिक बात बताएंगे, ठीक बताएंगे, धोखा नहीं देंगे, छल नहीं करेंगे, गलत उत्तर नहीं देंगे। हाँ, अनजाने में कोई भूल हो जाए, तो वो एक अलग बात है।

- ***अज्ञानतावश कोई भूल हो गई, बाद में समझ में आ गई कि, यह तो गलत बात कह दी, तो उसका सुधार कर उसको ठीक कर देंगे।*** हम जानबूझकर गलत बात नहीं कहेंगे।

- योग–शिविर में प्रश्न लिखकर भेंजे तो अच्छा रहेगा। प्रश्न पूछने वाले प्रश्न के नीचे अपना नाम अवश्य लिखें, जिससे कि जरूरत पड़े तो पूछा जा सके कि– ''भई, यह प्रश्न तो मुझे समझ में नहीं आया। इसका स्पष्टीकरण दीजिए।''
- हो सकता है कि, आपके विचारों और हमारे विचारों में अंतर हो। कई बातों में विरोध भी हो सकता है, टकराव हो सकता है, लेकिन कोई बात नहीं। आपने अब तक जैसा सुना–सीखा, आप वैसी बात जानते–मानते हैं। हमने जैसा सुना–सीखा, हम वैसा जानते–मानते हैं। परस्पर कुछ विचारों में अंतर हो सकता है। उसकी कोई चिंता नहीं। फिर भी आप प्रेमपूर्वक अपनी शंका पूछें और उतने ही प्रेमपूर्वक उसका उत्तर भी सुनें।

मान लो कि कोई बात आपने 20–30 साल से सुन रखी है, और वो बात आपको ठीक लगती है। और हमने यहाँ उसके विरुद्ध कोई बात बता दी कि, यह बात ठीक नहीं है। अत: आपको हमारी वो बात जचती नहीं है।

आपको बात समझ में नहीं आई तो कोई बात नहीं। उसके दो विकल्प हैं। पहला– या तो अलग से बैठकर कुछ विस्तार से बातचीत कर लेंगे। आगे और बताने का प्रयास करेंगे, प्रमाण देंगे, तर्क देंगे। हो सकता है कि बात कुछ समझ में आ जाए।

- समझाने पर भी समझ में नहीं आया तो झगड़ा नहीं करेंगे। आपकी ओर से भी ऐसी गारंटी मिलनी चाहिए कि आप भी झगड़ा नही करेंगे, ***झगड़े के लिए प्रश्न नहीं पूछेंगे।*** आप केवल जिज्ञासा–भाव से प्रश्न पूछेंगे।
- दूसरा विकल्प है – जो बात समझ में नहीं आई, उसको साइड में विचाराधीन (पेंडिंग) के रूप में रख दें। आगे उस पर और विचार करते रहेंगे। ***जरूरी नहीं कि हर एक बात आपको समझ में आ ही जाए।*** आपने प्रश्न पूछा, हमने उत्तर दिया। हम इस बात की कोई गारंटी नहीं लेते कि आपको हमारी सारी बातें आज ही समझ में आ जाएंगी। ऐसा बिलकुल नहीं होगा।

- कुछ ऐसी बातें होती हैं, जिनको समझने में समय लगता है। जो बात समझ में न आये, तो कोई बात नहीं। यह न कहें कि, आपका उत्तर गलत है। आपका यह कहना अनुचित है। यह आपका अधिकार नहीं है।
- ***अगर आप मुझसे यह कहते हैं कि 'आपका उत्तर गलत है', तो इसका मतलब यही हुआ कि सही उत्तर क्या है, वह आप पहले से जानते हैं।*** और जब आप सही उत्तर जानते हैं, तो फिर प्रश्न पूछा क्यों? मेरी परीक्षा लेने के लिए नहीं आए आप। यह गलत बात है। यदि आप परीक्षा लेने की भावना से प्रश्न पूछेंगे, तो आपको नुकसान हो सकता है। इसलिए ***परीक्षा लेने के उद्देश्य से कोई प्रश्न न पूछें।*** अपनी समस्या को सुलझाने के लिए पूछें और इसी भावना से मैं आपको प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करूँगा।
- ***उत्तर समझ में आया तो बहुत अच्छा, नहीं आया तो चिंतन करें, विचार करें।*** जो लोग कुछ स्वाध्याय करते हैं, शास्त्रों को पढ़ते हैं, अध्ययन करते हैं, कुछ पृष्ठभूमि बनी हुई है, उनको हमारी बात जल्दी समझ में आएगी। जो स्वाध्याय नहीं करते, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, दर्शन, उपनिषद्, वेद, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों का अध्ययन नहीं करते, तो उनको बात समझने में देर लगेगी। उनका बैकग्राउण्ड नहीं है। ***अगर आपने पहले से कुछ स्वाध्याय किया है, आपका कुछ पूर्वचिन्तन है, तो हो सकता है कि बात आज ही आज आपको समझ में आ जाए। अगर स्वाध्याय कम है तो हो सकता है कि आज समझ में नहीं आए।***
- आज आप उस बात को सुनें, उस पर विचार करें, लेकिन फिर भी समझ में नहीं आए। हो सकता है कि एक हफ्ते में समझ में आ जाए। समझने में अधिक समय भी लग सकता है। दो हफ्ते, पन्द्रह दिन, एक माह, दो माह, छह माह भी लग सकते हैं। कोई–कोई बात ज्यादा कठिन होती है कि, वो छह महीने में भी समझ में नहीं आती। ऐसी कठिन–कठिन बातें भी होती हैं, जिनको समझने में कई–कई वर्ष लग जाते हैं। ***कुछ बातें दिमाग में कई वर्षों के बाद बैठती हैं।***

- बात समझ में नहीं आयी, तो कोई चिंता की बात नहीं है। झगड़ा नहीं करना, यह नहीं कहना कि आपका उत्तर गलत है। यह कहना ठीक है कि – ''आपने उत्तर दिया, मगर वो हमारी समझ में नहीं आया। इस पर हम और सोचेंगे, विचार करेंगे, पढ़ेंगे, अध्ययन करेंगे। धीरे–धीरे समझ में आएगा।''

एक उदाहरण दे रहा हूँ। प्रश्न है – ***संसार में व्यक्ति को सम्मान की इच्छा करनी चाहिए या अपमान की इच्छा करनी चाहिए?*** प्रायः सबका उत्तर यही होगा कि सम्मान की इच्छा करनी चाहिए। यह उत्तर गलत है। सही उत्तर है– अपमान की इच्छा (आध्यात्मिक व्यक्ति को) करनी चाहिए। दरअसल, यह बात आपकी समझ में आज तो नहीं बैठेगी। इसको दिमाग में बैठाने के लिए कई साल चाहिए। ***कई साल तपस्या करनी पड़ेगी, तब यह बात समझ में आएगी कि अपमान की इच्छा करनी चाहिए।*** यह मेरे अपने घर की बात नहीं है। यह महर्षि मनु जी की बात है। मनुस्मृति में कहा है –

सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव।
अमृतस्येव चाकाङ्.क्षेदवमानस्य सर्वदा।।

''ब्राह्मण, योगाभ्यासी सम्मान से ऐसे डरता रहे, जैसे व्यक्ति विष से डरता है। जैसे जहर से डर लगता है, ऐसे ही व्यक्ति को सम्मान से डरना चाहिये। अपमान की इच्छा ऐसे करनी चाहिए, जैसे व्यक्ति अमृत की इच्छा करता है।'' यह बात समझने में बड़ी कठिन है।

ऐसे ही और भी बहुत सी बातें होंगी जो आपको आज समझ में न आएं, तो इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं है। वो बातें सच्ची हैं, प्रमाणिक हैं। धीरे–धीरे समझ में आएंगी। ***कुछ सरल बातें होती हैं, कुछ कठिन बातें होती हैं। सरल बातें जल्दी समझ में आ जाती हैं, कठिन बातों को समझने में समय लगता है।*** यही सिद्धांत है।

- 'शंका–समाधान' का एक नियम यह है कि प्रश्न पूछने वाला व्यक्ति शंका के रूप में अपनी बात को रखे कि – ''यह बात हमारी समझ में नहीं आयी। कृपया हमको समझाइए।'' इस तरह से बात नहीं रखे कि – ''मैं ऐसा–ऐसा मानता हूँ।'' इसका मतलब यह कि आपने

तो अपने पक्ष की स्थापना कर दी, यह तो 'शंका–समाधान' नहीं रहा। इसका नाम है – 'शास्त्रार्थ'।

जब आप अपने पक्ष की स्थापना करते हैं कि ''मैं ऐसा मानता हूँ'', तो फिर यह शास्त्रार्थ हो गया। आप ऐसा मानते हो और मैं ऐसा मानता हूँ, तो फिर दोनों के विचारों में टक्कर है। यहाँ टक्कर नहीं करनी है।

अगर किसी को टक्कर करने का शौक है, तो अलग से बैठकर करेंगे। मैं टकराने के लिए भी तैयार हूँ, डरता नहीं हूँ। पर इस समय टकराने का काम नहीं है। इस समय तो 'शंका–समाधान' का काम है। इसी उद्देश्य से हम इस कार्यक्रम को चलाएंगे। इस प्रकार इन नियमों का पालन करें। आपको बहुत लाभ होगा।

2. शंका– क्या संसार में कहीं सुरक्षा नहीं है। माँ की गोद में भी नहीं?

☯ **समाधान**– संसार में कहीं भी सुरक्षा नहीं है। पूरी सुरक्षा केवल 'मोक्ष' में है। तीन प्रकार से हम पर आपत्ति आ सकती है :–

(1) एक तो अपनी मूर्खता से, अपनी गलतियों से हम नुकसान उठा लेते हैं। सड़क पर चलते हुए दुकान या बोर्ड देख रहे हैं। जिससे सड़क पर पड़े ऊँचे–नीचे पत्थरों पर हमने ध्यान नहीं दिया और पाँव टकराया, धड़ाम से गिरे, हाथ–पाँव टूट गए। किसकी गलती हुई? हमारी गलती। सड़क पर केले का छिलका आ गया, हमने उस पर ध्यान नहीं दिया, पाँव पड़ गया, धड़ाम से गिर गए और कमर की हड्डी टूट गई। किसकी गलती से? हमारी गलती से।

इस तरह ***एक क्षेत्र ऐसा है, जहाँ हम अपनी गलतियों से नुकसान उठाते हैं। अपनी मूर्खता से जो गलतियाँ की, उससे जो दु:ख मिला, उसका नाम है– 'आध्यात्मिक दु:ख'।***

(2) दूसरा क्षेत्र ऐसा है, जहाँ दूसरे प्राणियों की गलतियों से हमको दु:ख भोगना पड़ता है। आपका प्रश्न है कि क्या माँ की गोद

में हमको नुकसान हो सकता है? उत्तर है कि – ***माँ ने कोई गलत दवा या खान–पान में कुछ गलत चीज खा ली तो बच्चे को नुकसान हो गया। पिता की भूल से हमको नुकसान हो सकता है। किसी पड़ोस के बच्चे ने क्रिकेट में बॉलिंग की और उसकी बॉल हमारी आँख में लगी। पूरी आँख बेकार हो गई।*** उसकी गलती से जीवन भर के लिए हमको नुकसान हो सकता है। सड़क पर चल रहे हैं। पीछे से चुपचाप एक कुत्ता आया और उसने टाँग काट ली। स्कूटर वाला, कार वाला हमको ठोंक दे। दारू के नशे में धुत्त अभिनेता सलमान खान ने मुबंई के फुटपाथ पर सो रहे तीन–चार लोगों पर कार चढ़ा दी। उन बेचारों का क्या दोष था? हम ऐसे किसी गलत गुरु–आचार्य के पल्ले पड़ गए और उसने हमको उल्टे पाठ पढ़ा दिए और मोक्ष के मार्ग से कहीं और भटका दिया। उससे भी हमको नुकसान हो सकता है।

दूसरे व्यक्तियों के कारण से, साँप से, बिच्छुओं से, शेर आदि दूसरे प्राणियों के कारण से, इनके अन्याय से भी हमको दु:ख भोगने पड़ सकते हैं। इसे 'आधिभौतिक–दु:ख' कहते हैं।

(3) तीसरी हैं – प्राकृतिक दुर्घटनाएं। जैसे – भूकंप, तूफान, बाढ़, आँधी, चक्रवात, सूखा, अकाल, वर्षा आदि। मकान गिर जाते हैं, बाढ़ का पानी भर जाता है। ***प्राकृतिक दुर्घटनाओं से भी हमको नुकसान उठाना पड़ता है तो दु:ख होता है। इसी का नाम है– 'आधिदैविक–दु:ख'।***

उपरोक्त तीन प्रकार के दु:ख हैं। ***आपने जन्म ले लिया तो कहीं भी सुरक्षा नहीं। कोई न कोई दु:ख आएगा ही।***

महर्षि कपिल कहते हैं – 'कुत्रापि कोऽपि सुखी न'। सीधा सरल वाक्य है। ***धरती पर कहीं भी कोई भी व्यक्ति पूरा सुखी नहीं है।*** एक सुख मिलता है, उसके पीछे चार दु:ख आते हैं तो सौदा मँहगा पड़ता है। चार रुपए की खरीदी और बिक्री मूल्य एक रुपया। ये

कैसा घाटे वाला व्यापार है। सुख मिलता है – 'एक' और दुःख मिलते हैं – 'चार'। इसलिए चारों ओर दुःख ही दुःख है। धरती पर कोई भी पूर्ण सुखी नहीं है। दार्शनिक दृष्टि से सारे दुःखी हैं।

दर्शन शास्त्र मानसिक सुख–दुःख की बात कर रहा है। मन में अविद्या, क्रोध, लोभ आदि के कारण सारे लोग दुःखी हैं। इस दृष्टि से दुःख अधिक है।

'सत्यार्थ प्रकाश' में महर्षि दयानंद जी ने लिखा है कि संसार में सुख अधिक है। उनका तात्पर्य है कि – शारीरिक स्तर पर, बाह्य स्तर पर सुख अधिक है। महर्षि दयानंद बाह्य स्तर की बात कर रहे हैं और महर्षि कपिल, महर्षि पतञ्जलि आन्तरिक स्तर की बात कह रहे हैं। दोनों ठीक कह रहे हैं।

बाह्य स्तर पर तो सुख अधिक है और मानसिक स्तर पर दुःख अधिक है। शारीरिक और मानसिक दोनों दुःख की तुलना करते हैं तो मानसिक ज्यादा हानिकारक है। और मानसिक स्तर पर दुःख अधिक है। इसलिए कपिल मुनि जी कहते हैं – तीन दुःखों से छूटो।

यह मनुष्य का सबसे ऊँचा लक्ष्य है। पूरी सुरक्षा केवल मोक्ष में है। इसलिए फटाफट मोक्ष में सरक जाओ।

3. शंका– सृष्टि (जगत्) में सभी जीव, परमात्मा के लिए संतानवत् हैं तो परमात्मा प्राकृतिक प्रकोप के द्वारा क्या दर्शाना चाहता है–दयालुता या न्यायकारिता? कई जीव पृथ्वी पर पैर रखते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। ऐसा क्यों?

☯ ***समाधान–*** प्रश्नकर्ता ने पूछा है कि इससे ईश्वर अपनी दयालुता दिखाना चाहता है या न्यायकारिता। इसका अर्थ कहीं न्यायकारिता हो सकता है और कहीं यह भी हो सकता है कि भगवान ने पहले ही कह रखा था कि मैं सृष्टि बनाऊँगा और इसमें दुर्घटनाएं होंगी। आपका काम है, दुर्घटना से बच के चलना।

एक इंजीनियर ने कार बनाकर उससे सम्बन्धित पूरा विवरण बुकलेट में छापकर खरीददार को दे दिया। खरीददार को बता दिया

गया कि पहले बुकलेट पढ़नी है और इसको समझ के फिर कार का इस्तेमाल करना है। बुकलेट में पहले से ही यह सूचना दे रखी है कि जब कार का इंजन स्टार्ट होगा तो इंजन में गर्मी बढ़ेगी। और जब गर्मी बढ़ेगी तो उसके रेडिएटर में कूलेन्ट डालकर रखना, उसका इंजन ठंडा रखना और मीटर पर देखते रहना कि कितना तापमान है? पेट्रोल इंजन में अगर सौ डिग्री से ऊपर तापमान गया, तो इंजन में आग लगेगी।

कार चलाने वाला व्यक्ति कूलेंट तो डाले नहीं, रेडिएटर को चेक करे नहीं, मीटर देखे नहीं कि तापमान कितना बढ़ रहा है, इस अवस्था में अगर कार में आग लगती है, तो इसमें किसका दोष है? यह ड्राइवर और कस्टमर का दोष है। कार बनाने वाले इंजीनियर का दोष तो नहीं है।

इसी प्रकार से भगवान ने जब यह सृष्टि बनाई, तो उसने कहा– इस सृष्टि के अंदर भूकंप, तूफान, आँधी, सुनामी, टोरनेडो जैसी कई प्राकृतिक विपदाएं आने की सम्भावना है। ***आपका काम है – सावधानी से चलते रहना।*** पता लगाना हमारा काम है कि कहाँ तूफान आ सकता है, कहाँ भूकंप आने वाला है, कहाँ बाढ़ की स्थिति बन सकती है, फिर उससे बच के रहना। अगर हम ध्यान न दें तो किसकी गलती, हमारी या ईश्वर की? हमारी गलती। इसलिए ईश्वर पर दोष नहीं आता है।

हमारा काम है, दुर्घटनाओं से बचना। जब हम सड़क पर चलते हैं तो मोटर गाड़ी से बचकर चलते हैं। ऐसे ही संसार में रहते हैं तो प्राकृतिक दुर्घटनाओं से बचकर चलना भी हमारा ही काम है।

भूकंप के लिए भी पता लगाओ, यह कब आएगा। उसके लिए साइंटिस्ट लोग लगे हैं, रिसर्च कर रहे हैं। दो–चार साल में, पाँच साल में, बीस साल में वो सफल हो जाएंगे। पहले पता लग जाएगा कि कहाँ भूकंप आने वाला है और कितनी तीव्रता से आएगा। चौबीस घंटे पहले भूकंप का पता लग गया तो ठीक है, अपनी जान बचा

के भाग जाएंगे। सोए हुए हैं और रात को एक बजे भूकंप आएगा, तो मरेंगे ही। यदि पहले पता लग जाए कि रात को एक बजे भूकंप आएगा तो लोग बाहर भाग जाएंगे या मकान से बाहर सोएंगे, मकान में नहीं सोएंगे।

इस प्रकार से अपनी रक्षा करना हमारा काम है। भगवान ने इसीलिए तो बुद्धि दी है कि सावधानी से चलो। इसीलिए तो कहा जाता है कि– मनुष्य जन्म प्राप्त किया है, तो ***संसार मे पड़े–पड़े दु:ख मत भोगो।*** समाधि लगाओ, शास्त्र पढ़ो, समाज की सेवा करो, निष्काम कर्म करो और मोक्ष में चले जाओ।

4. *शंका– क्या ज्यादा धन कमाना ठीक नहीं है? यदि सच्चाई के साथ यम–नियमों के पालन का पूर्ण प्रयास करते हुए कमाया जाए तो?*

☯ ***समाधान***– अच्छे कामों के लिए धन तो आवश्यक है ही। धन कमाना चाहिए परन्तु यम–नियम का पालन करते हुए, ठीक ईमानदारी से, मेहनत से धन कमाएं, तो कमा सकते हैं, अधिक भी कमा सकते हैं।

- यहाँ नियम यह है कि – ***''जितना अधिक कमाएंगे, उतनी आपकी समस्या बढ़ती जाएगी। आवश्यकता से अधिक धन जमा करेंगे, तो फिर वो आपके लिए बाधक बनेगा।''***

पहले तो समय अधिक खर्च करना पड़ेगा।

वह खुद भी खाएगा नहीं, जमा करता रहेगा। जमा किया हुआ धन, फिर उसके लिए कार्य में बाधक होता है। वो 'परिग्रह' का पालन करता रहता है।

फिर उसकी सुरक्षा की चिन्ता हो जाएगी। और बस उसकी सुरक्षा में ही लगा रहेगा।

कोई धन छीन ले जाए तो दु:खी, कोई चुरा ले जाए तो दु:खी, कोई उधार ले जाए और लौटाए नहीं तो दु:खी। इसलिए एक विद्वान ने बड़ा अच्छा श्लोक लिखा है – ***''अर्थानाम् अर्जने दु:खम् अर्जितानां च रक्षणे। आये दु:खं व्यये दु:खं धिगर्थान् कष्टसंश्रयान्।।''*** अर्थात्

पैसा कमाने में दु:ख उठाओ, और कमाए हुए धन की रक्षा करने में दु:ख उठाओ। इस तरह ***इन्कम हो तो दु:ख, और खर्चा हो तो और दु:ख।*** जो धन हमेशा कष्ट ही देता है, ऐसे धन को धिक्कार है। ऐसा धन क्या करेंगे? इसलिए हमारे अनुभव से लाभ उठाईए, अधिक मत कमाइए।

हम पूरे देश में घूमते हैं। बड़े–बड़े सेठ लोगों के यहाँ जाते हैं। ***हमारा अनुभव यह है कि – 'जो जितना बड़ा सेठ है, वो उतना अधिक दु:खी है'।*** जितने बड़े सेठ से मैं मिला, उसे उतना ज्यादा दु:खी पाया। ऐसा मुझे उन सेठों ने अपनी जुबानी कहा है। एक सेठ ने मुझे कहा – ''मेरा नाम तो है शाँतिलाल, लेकिन मुझे आधा घंटा भी शाँति नहीं है।'' इसलिए ज्यादा धन मत कमाइए, आवश्यकतानुसार कमाइए।

- ***आपको जितनी आवश्यकता है, उतना धन कमाइए।*** और फिर जितनी समय–शक्ति शेष बचती है, उसको आध्यात्मिक–क्षेत्र में लगाइए।
- धन के पीछे मत पड़िए। वो तो बुद्धि खराब ही करता है। ***जब व्यक्ति के पास पैसे नहीं होते तो उसका विचार कुछ और होता है, और जब जेब में पैसे आ जाते हैं, तो उसका विचार बदल जाता है। कैसे?***

एक व्यक्ति के पास बहुत पैसे नहीं थे, तो वो सोचता था – ''हे भगवान! मेरी दस लाख रुपये की लॉटरी लग जाए तो पाँच लाख दान कर दूँगा।'' यह विचार तब तक है, जब तक दस लाख रुपये जेब में नहीं आ जाते हैं। और कल्पना कीजिए, दस लाख रुपये की लॉटरी लग गई। अब वो पाँच लाख रुपये भी दान में नहीं देना चाहेगा, अब उसका विचार बदल जाएगा। लॉटरी से कमाना तो वैसे ही गलत है, क्योंकि वो तो जुआ है।

मेहनत से, ईमानदारी से भी जब व्यक्ति धन कमा लेता है, तो भी उसकी बुद्धि बदल जाती है, विचार बदल जाते हैं। ***पहले सोचता था–जितना कमाऊंगा, उसमें से बीस, पच्चीस, पचास प्रतिशत दान कर दूंगा। लेकिन जब प्रैक्टिकली जेब में पैसे आ जाते हैं, तो विचार बदल जाता है। अब दान का प्रतिशत दो–तीन***

पर आकर फिसल जाता है। वो भी मुश्किल से, घिस–घिस करके दान देगा। इसलिए इतना धन न कमाएं कि उपयोग ही न कर सकें।

5. शंका– धन का उपयोग 'सत्कर्म' में भी तो कर सकते हैं?

☯ ***समाधान–*** उत्तर है :–

- 'सत्कर्म' में धन का उपयोग कर सकते हैं, परन्तु प्रायः करते नहीं हैं। कारण कि, ***पैसा हाथ में आते ही बुद्धि घूम जाती है।***
- वेद यह कहता है कि ***खूब धन कमाओ। पर केवल परीक्षण करने के लिए कि क्या धन से हमारी तृप्ति हो सकती है?*** धन ऐश्वर्य के स्वामी बनो। ऐसा इसलिए कहा गया है कि, मनुष्यों को यह शंका है कि धन मिला तो सब कुछ मिला। खूब धन कमाने से मनुष्य सुखी हो जाता है।
- धन का परीक्षण करना चाहिए। यदि बहुत सा धन कमा कर भी वह सुख नहीं मिला, जिसकी कल्पना की थी तो परिणाम निकालो कि भोगों में सुख नहीं है। भोग–विलास में सुख एक है और दुःख चार हैं। इस परिणाम के आधार पर मोक्ष की तैयारी करो।
- ***जब तक व्यक्ति इस संसार में भोगों से दुःख प्राप्त नहीं कर लेगा, भोगों से थक नहीं जाएगा, तब तक मोक्ष की इच्छा उत्पन्न नहीं हो सकती।***

वेद में धन कमाने और वैराग्य प्राप्त करने, इन दोनों बातों की चर्चा है। पर लोग वैराग्य को भूल जाते हैं, और धन कमाने की बात याद रखते हैं। जब भोग–विलास में सुख नहीं मिलता, तब वेद की दूसरी बात भी तो याद करनी चाहिए। और राजा भर्तृहरि व राजा जनक के समान वैराग्य ले लेना चाहिए। नचिकेता ने अपने पिछले जन्म में भोग किया, पर उसे सुख नहीं मिला। और जब वह अपने नचिकेता वाले जन्म में आया, तो गुरुजी ने उसे बहुत से प्रलोभन दिए, पर उसने कहा कि 'धन से कोई तृप्त नहीं हुआ।' अतः सार यह है कि –

- ***धन उतना कमाओ, जिससे मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इससे अधिक कमाएंगे, तो मोह–माया में फँस जाएंगे।***

विदेशियों ने खूब धन कमाया, भोग किया, और अंत में सुख नहीं मिला तो वे भारत की ओर आने लगे कि यहाँ ऋषि–मुनि रहते हैं, और इन्हीं से सुख प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु भारत के लोग विदेशियों की नकल कर रहे हैं। वे भोग–विलास, धन–ऐश्वर्य के पीछे भाग रहे हैं, पर उनके परिणाम को नहीं देख रहे हैं। इस प्रकार, जिन लोगों ने संसार का सुख भोग लिया है, वे वैराग्य को प्राप्त करेंगे, और जिन्होंने अभी कुछ भोगा नहीं है, वे पहले भोगेंगे और फिर वैराग्य और मोक्ष को प्राप्त करेंगे।

6. शंका:– ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है, फिर ईश्वर ने ऐसा संसार क्यों नहीं बनाया, जिसमें केवल सुख ही होता, दुःख बिल्कुल न होता। भौतिक सुखों में दुःख क्यों है?

☯ ***समाधान–*** संसार में सुख के साथ–साथ दुःख भी भोगने को मिलता है। कारण कि :–

(1) पहली बात– इसका एक कारण प्रकृति है। प्रकृति जो बेसिक मैटीरियल (मूल द्रव्य) है। प्रकृति से इस संसार को बनाया गया है।

- ***प्रकृति के तीन पार्टिकल्स (अवयव–कण) हैं। एक है– सत्त्व गुण, दूसरा है– रजो गुण, तीसरा है– तमोगुण।***
- संसार को बनाने वाले इन तीनों कणों की प्रापर्टीज (विशेषताएँ) अलग–अलग हैं। ***सत्त्व गुण का स्वभाव हैं–सुख देना। रजो गुण का स्वभाव है– दुःख देना। तमो गुण का स्वभाव है– मूर्खता, पागलपन पैदा करना।***

अब देखिए, प्रकृति रूपी मैटीरियल ही ऐसा है कि उसमें सुख भी मिलता है, दुःख भी मिलता है, और मूर्खता भी पैदा होती है। तो भगवान इसमें क्या करे? तीनों पार्टीकल्स में अच्छा केवल एक ही है–सत्त्व गुण। रजो गुण बेकार है, क्योंकि वो दुःख देता है। और तमोगुण भी बेकार है, क्योंकि वो पागलपन और नशा पैदा करता है। तीन कण में से दो तो खराब हैं, केवल एक ही

अच्छा है। तैंतीस प्रतिशत मैटीरियल अच्छा है, षड़सठ प्रतिशत तो बेकार है। इसलिए उसमें दु:ख तो मिलना ही मिलना है।

- ***भगवान ने तो इतनी अच्छी कलाकारी दिखाई कि, इस बेकार मैटीरियल से इतनी बढ़िया दुनिया बना दी। ऐसी प्यारी दुनिया, कि अधिकांश लोग इस दुनिया को छोड़ने के लिए तैयार ही नहीं हैं।***
- भगवान ने इतनी अच्छी दुनिया बना कर कह दिया:– तुमको संसार का सुख लेना हो, ले लो। जब तक इसमें दु:ख समझ में नहीं आए, तब तक संसार का सुख भोगो। और जब समझ में आ जाए, तब इसको छोड़ देना। फिर मेरे पास आ जाना। मैं मोक्ष का बढ़िया आनन्द दे दूँगा।

(2) दूसरी बात– भौतिक सुखों में दु:ख होने का दूसरा कारण हमारे कर्म हैं। हमने 'सकाम कर्म' किये। 'सकाम कर्म' अर्थात् सांसारिक सुख को लक्ष्य बनाकर अच्छे और बुरे कर्म किये। ***जब हमारे कर्म ही अच्छे और बुरे हैं, तो फल भी दोनों (सुख व दु:ख) ही होंगे।*** केवल सुख फल कैसे हो सकता है? इसलिये संसार में सुख के साथ–साथ दु:ख भी मिलता है।

यदि केवल सुख चाहिए, तो मोक्ष में जाओ। वहाँ केवल सुख मिलता है।

(3) तीसरी बात– यदि आप कहते हैं कि, ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, वो ऐसा संसार बना दे, जिसमें दु:ख हो ही न। इसका उत्तर यह है कि, सर्वशक्तिमान का अर्थ यह नहीं कि ईश्वर नियम के विरुद्ध, जो चाहे सो कर दे। यदि आप ऐसा मानते हैं कि ईश्वर जो चाहे, सो कर सकता है, तो मैं आपसे पूछता हूँ कि, क्या ईश्वर बिना प्रकृति (उपादान कारण) के भी जगत् को बना सकता है? नहीं।

जैसे ईश्वर बिना प्रकृति के जगत् को नहीं बना सकता। ऐसे ही वह प्रकृति की विशेषताओं (सत्त्व–सुख देना, रज–दु:ख

देना, तम–नशा उत्पन्न करना आदि) को भी नहीं बदल सकता। इसीलिए वह दु:ख–रहित, केवल सुखमय, संसार को नहीं बना सकता।

7. शंका– सृष्टि का प्रयोजन जीवात्माओं को लौकिक सुख और मोक्ष का सुख देने के लिए है। किन्तु योग–दर्शन में कहा गया है कि लौकिक सुख, दु:ख से मिश्रित है, इसलिए लौकिक सुख हेय–कोटि में आते हैं। इस विरोधाभास को सुलझाने का प्रयत्न करें?

☯ ***समाधान–*** शास्त्रों में यह बात कही गई है कि यह संसार, लौकिक सुख के लिए और मोक्ष प्राप्ति के प्रयोजन से बनाया गया है। योगदर्शन में भी कहा गया है कि जो संसार का सुख है, वो शुद्ध सुख नहीं है। उस सुख में दु:ख मिश्रित है। इसमें थोड़ा विरोधाभास जैसा प्रतीत होता है। यह प्रश्न है।

इसका समाधान यह है कि :–

- एक व्यक्ति को भूख लगी थी, उसने अच्छी तरह से पेट भरकर खाना खा लिया। दूसरा व्यक्ति अभी भूखा बैठा है, उसने अभी खाया नहीं। दोनों के सामने फिर से भोजन रख दिया जाए, तो दोनों व्यक्ति अलग–अलग व्यवहार करेंगे। जो खा चुका है, वो तो नहीं खाएगा। और जिसने नहीं खाया, वो खाएगा। वही भोजन, एक जैसा भोजन, एक व्यक्ति खा रहा है, लेकिन दूसरा नहीं खा रहा है। क्योंकि उन दोनों की आवश्यकता अलग–अलग है। जो खा चुका, उसका पेट भर गया, इसलिए अब वो नहीं खाएगा। और जिसको भूख लगी है, खाना नहीं खाया है, वो खाएगा।
- इसी प्रकार से संसार में जो सुख है, वो दु:ख से मिश्रित है, यह बात बिल्कुल सत्य है। लेकिन हर व्यक्ति का ज्ञान–विज्ञान का जो स्तर है, वो अलग–अलग है। एक व्यक्ति कहता है कि मुझे सुख चाहिए। इन्द्रियों से जो भोगा जाता है, मुझे तो वो लौकिक सुख चाहिए। जैसे – खाना, पीना, घूमना, फिरना आदि, इन चीजों से जो सुख मिलता है, वो मुझे चाहिए। इससे स्पष्ट है कि उस व्यक्ति को संसार में केवल सुख ही दिखता है, दु:ख दिखता ही नहीं।

- ***यद्यपि संसार में सुख भी है और दु:ख भी है। लेकिन उसको केवल सुख ही दिखता है। अब यहाँ पर दृष्टिकोण का अन्तर है। जिसको संसार में सुख ही दिखता है, वो उस सुख को भोगेगा। लेकिन जिसका ज्ञान बदल गया, उसको दु:ख भी दिखने लगा तो वो भोगना बंद कर देगा।*** अब वो बोलेगा–''ये नहीं चाहिए। मुझे शुद्ध सुख चाहिए, लेकिन यह सुख, दु:ख मिश्रित है। यह बात मुझे समझ में आ गई।'' इसलिए अब वो उस सुख को नहीं भोगेगा।
- जब लोग कहते हैं कि हमको प्राकृतिक सुख चाहिए, तो भगवान तो फिर देने वाला है न। वो तो यह सृष्टि बनाकर देगा ही। शास्त्रों में यह जो कहा है कि लौकिक–सुख को भोगने के लिए यह संसार बनाया गया। उसका अर्थ है कि हम सांसारिक सुख–दु:ख को भोगने वाले, सकाम कर्म कर चुके हैं। उन कर्मों का फल भोगना है। आपने ऐसे कर्म किए। इसलिए उसका सुख भोगो, खाओ–पियो, घूमो–फिरो, सभी इन्द्रियों का सुख लो। पिछले कर्मों का फल भोगने के लिए यह संसार बनाया। जैसा कर्म है, वैसा ही तो ईश्वर फल देगा। अच्छे कर्म किए, उसका सुख ले लो, बुरे कर्म किए उसका दु:ख भी भोगो। और खाते–पीते, भोगते आपको जब इस सांसारिक सुख में दु:ख दिखने लगे, तब इसको छोड़ देना और मोक्ष को पकड़ लेना। तब आपका लक्ष्य बदल जाएगा। पर जब तक आपको इसमें दु:ख नहीं दिखता, तब तक यही आपका लक्ष्य है।
- एक उदाहरण से बात और समझ में आएगी। मान लीजिए, अहमदाबाद में एक बहुत अच्छी हलवाई की दुकान से कोई बढ़िया सी मिठाई लेकर आए और प्लेट में आपके सामने रख दे। और बोले–''लो जी खाओ, बड़ी स्वादिष्ट, सुगंधित और देखने में भी सुन्दर मिठाई है।'' आपको उसमें सुख दिखता है, इसलिए अब आपने उसे खाने के लिए हाथ बढ़ाया। इतने में उस दुकान का एक नौकर, दौड़ता–दौड़ता आया, और कहने लगा– ''ठहरो....ठहरो....ठहरो, जो मिठाई आप हमारी दुकान से लाए हैं, उस मिठाई में थोड़ा सा पोटैशियम सायनाइड मिला है।'' अब बताइए, क्या आप मिठाई खा सकते हैं ? अब आपको

क्या दिखने लग गया? अब आपको उसमें दु:ख दिखने लग गया। पहले सुख दिख रहा था। प्लेट वही, मिठाई वही, केवल आपका विचार, आपका ज्ञान और आपकी दृष्टि बदल गई। पहले जो चीज आपको सुखदायी दिख रही थी, वही अब दु:खदायी दिख रही है। इसलिए अब आप उसे नहीं भोगेंगे। अब आप कहेंगे–यह दु:ख मिश्रित मिठाई है, हमें यह नहीं चाहिए। हो सकता है–आप तीव्रता से, उग्रता से उसका नाम ही बदल दें। आप कहेंगे– यह मिठाई नहीं है, यह तो जहर है। कोई कहेगा–''भाई ! जहर क्यों बोलते हो, यह मिठाई ही तो है।'' आप कहेंगे–''श.. श.... मिठाई का नाम मत लो, इसे जहर बोलो।''

जहर बोलेंगे, तो इच्छा नहीं होगी, छूट जाएगी। मिठाई बोलेंगे, तो खाने की इच्छा होगी। फिर खाएँगे, फिर परिणाम भोगना पड़ेगा।

इस प्रकार जिस व्यक्ति की मिठाई खाने की इच्छा है, उसको पता नहीं कि इसमें पोटैशियम सायनाइड है, वो खाएगा और मरेगा। जिसको मालूम है कि इसमें पोटैशियम सायनाइड है, न खाएगा, न मरेगा, वह तो बच जाएगा।

संसार के, इन्द्रियों से भोगे जाने वाले, जो भी लौकिक–सुख हैं, ये दु:ख से मिश्रित हैं। इनमें दु:ख का जहर मिला हुआ है। जिसको वो जहर नहीं दिखता है, जिसको वो दु:ख नहीं दिखता है, वो इनका सुख भोगेगा, और इसलिए उसे दु:ख भी भोगना होगा। वो मिठाई भी खाएगा और जहर भी खाएगा।

भगवान ने तो उनको सावधान कर रखा है–''ऐ भाई, इनके पीछे मत पड़ो, नहीं तो तुम्हें परिणाम में दु:ख भोगना पड़ेगा। एक सुख के बदले चार–चार दु:ख भोगने पड़ेंगे।'' अब लोग न पढ़ें, न सुनें, इस बात पर ध्यान न दें, तो भगवान क्या करे? उसका दोष थोड़े ही है, यह लोगों का दोष है।

- ***यदि वेद–शास्त्रों को पढ़ेंगे तो पता चलेगा कि उसमें मोक्ष को ही अंतिम लक्ष्य बताया है,*** कोई और लक्ष्य बताया ही नहीं।

अब मोक्ष वाले निष्काम कर्म करो, तो ईश्वर आपको मोक्ष का सुख भी देंगे।

- लोगों की योग्यता कम है, ***लोगों के ज्ञान का स्तर कम है, इसलिए उन्हें ऐसा लगता है कि खाने–पीने में बड़ा सुख है। इसलिए वे खाने–पीने के, भौतिक–सुखों के पीछे पड़ जाते हैं।***

एक और उदाहरण देता हूँ। जब हम छोटे बच्चे थे, तो हमारी खुशी के लिए हमारे माता–पिता क्या करते थे? छोटे–छोटे खिलौने लाकर देते थे। बच्चा उन खिलौनों से खेल सकता है, और उसमें खुश हो सकता है। मगर बीस साल के जवान को वही गुड्डे–गुड़िया, वगैरह दो, तो क्या वह उनसे खेलेगा, और उनसे खुश हो जाएगा? नहीं होगा न। वे खिलौने छोटे बच्चे को प्रसन्न कर सकते हैं, युवा और वृद्ध व्यक्ति को प्रसन्न नहीं कर सकते। इसी तरह से जो ज्ञान की दृष्टि से छोटा है, ज्ञान का स्तर जिसमें कम है, जिसको संसार में सुख दिखता है, उसको तो ये संसार की वस्तुएँ सुख दे सकती हैं, बिल्कुल खिलौनों की तरह।

जिसका ज्ञान विकसित हो गया, वो बीस साल का युवा व्यक्ति जैसा हो गया। खाना–पीना, घूमना–फिरना, गपशप मारना, संगीत सुनना, इसमें जो सुख ले रहे हैं, यह तो बच्चों की खिलौनों वाली बात है। हमारी उम्र बीस साल की हो गई, अब ये खिलौने हमको खुश नहीं कर सकते। अब तो हमको भगवान का सुख चाहिए। यह दुनिया का सुख तो बच्चों के खिलौने वाला जैसा सुख है। यह हमको नहीं चाहिए। हमको ये चीजें ज्यादा आकर्षित नहीं कर सकतीं। यह ज्ञान के स्तर की बात है।

- जिस–जिस व्यक्ति को यह समझ में आ जाता है कि ये संसार के सुख, खिलौनों की तरह हैं। अब मुझे ये नहीं चाहिए, मैं इनसे थक गया हूँ, मुझे तो ईश्वर का मोक्ष वाला सुख चाहिए। वह सांसारिक सुख भोगना छोड़ देता है। जब सांसारिक सुख छोड़ देता है, तो उसके साथ जो दुःख मिल रहा था, वह भी छूट जाता है। फिर वो ईश्वर को पकड़ता है और समाधि लगाकर मोक्ष में चला जाता है।

- इस तरह ***ईश्वर ने पिछले कर्मों का फल भुगवाने के लिए और मोक्ष की प्राप्ति कराने के लिए यह सृष्टि बनाई।***

8. शंका– इन्द्रियों के सुखों को भोगकर उनसे तृप्त होना अच्छा है, दमन (सप्रेशन) करना अच्छा नहीं, ओशो, फ्रायड ने ऐसी बातें कही हैं। क्या सही है?

☯ ***समाधान***– हम कहते हैं–ओशो, फ्रायड आदि का यह कहना गलत है। कारण कि:–

- सारी दुनिया भोगों को भोग कर इन्द्रियों को तृप्त करने की कोशिश कर रही है। ***सारी दुनिया यही तो कर रही है। और क्या कर रही है? सुखों को भोगकर क्या किसी की तृप्ति हो गयी?*** क्या सुख से मन पूरी तरह भर गया?
- क्या यह हमारा पहला जन्म है? पहले कितने ही जन्म हो गए। पिछले जन्मों में हमने और क्या किया? यही तो किया, खाया–पिया और भोगा। ***पिछले सैकड़ों–हजारों जन्मों से आज तक तो तृप्ति हुई नहीं।*** आगे और दो सौ, पाँच सौ, हजार जन्म ले लो, और भोग लो भोगों को, क्या तृप्ति हो जायेगी? नहीं, इसलिए ओशो, फ्रायड की बात गलत है।
- ऋषि लोग और मैं भी यही कहता हूँ कि– ***''भोगों को भोगने से इच्छाएं शांत नहीं होतीं बल्कि और भड़कती हैं, और बढ़ती जाती हैं।''*** इसलिए इन लोगों का कहना ठीक नहीं है। यह ऋषियों के, वेद के, मनोविज्ञान के विरुद्ध है। हाँ, अगर कोई परीक्षा की दृष्टि से विषयों का सेवन करे, तो अलग बात है।
- सुख–भोग के दो दृष्टिकोण हैं। एक होता है – अधाधुंध सुख भोगना, यह मानकर भोगना कि विषयों में बहुत सुख है। इस भावना से कभी भी तृप्ति (संतुष्टि) नहीं होगी। और दूसरी पद्धति यह है कि विषयों का परीक्षण किया जाए कि– इनमें कितना सुख है। इन विषयों के भोग से तृप्ति होती है कि नहीं होती?

अगर कोई परीक्षण करने की दृष्टि से विषयों का सेवन करे, तो उसको 'सत्य' समझ में आ जाएगा। तब तो सुख का

भोग करने में लाभ है। दो बार, पाँच बार, पच्चीस बार, पचास बार परीक्षण करेगा और उसको समझ में आ जाएगा कि इनमें तृप्ति नहीं है। इस दृष्टि से तो भोग कर सकते हैं। इसमें आपत्ति नहीं है, पर जैसा कि यहाँ प्रश्न में लिखा है, वो पद्धति ठीक नहीं है। ऐसे कोई तृप्ति नहीं होती।

9. शंका– मानव तो उन्नति कर रहा है, अतः भगवान को तो खुश होना चाहिए?

☯ ***समाधान–*** आज जो हो रहा है, वह उन्नति नहीं है।

- उन्नति की सही परिभाषा है कि:–***''जिससे लौकिक सुख बढ़े, दु:ख–तनाव कम हो, और 'मोक्ष' की सिद्धि (प्राप्ति) हो, वह उन्नति है।''***

आधिभौतिक उन्नति वहाँ तक करो, जहाँ तक मोक्ष प्राप्ति में सहायता मिले। जो ऐश्वर्य और मोह–माया आपको मोक्ष तक जाने से ही रोक दे, वह उन्नति नहीं है। ऐश्वर्य उतना ही बढ़ना चाहिए, जितना कि वह मोक्ष प्राप्ति में सहायक हो, और संसार को सुचारु रूप से चला सकने में समर्थ हो।

- आज तो ऐसा देखने में नहीं आ रहा। आज तो ***सम्पत्ति से लोगों का सुख नहीं बढ़ रहा। दु:ख–तनाव, असंतोष, अशांति एवं अपराध ही बढ़ रहे हैं।***
- यह स्थिति मोक्ष–प्राप्ति में भी सहायक नहीं है। इसलिए आज की स्थिति को हम 'उन्नति' नहीं कह सकते।
- स्वामी दयानंद जी ने कहा है कि–***''जब ऐश्वर्य मात्रा से अधिक बढ़ता है, तो मनुष्य में प्रमाद और आलस्य आदि दोष उत्पन्न होते हैं।''*** महाभारत युद्ध का कारण भी यही था। उस समय शक्ति और ऐश्वर्य अधिक बढ़ गया था। इसलिए युद्ध हुआ। ***महाभारत युद्ध का परिणाम हम आज तक भुगत रहे हैं।*** अतः अधाधुंध धन बढ़ाते जाना उन्नति नहीं है।

10. शंका– संसार की घटनाओं से हमें कैसे और क्या सीखना चाहिए? क्या संसार में प्राप्त होने वाले सुख–दु:ख को हमें याद रखना चाहिए या भूल जाना चाहिए?

☯ ***समाधान–*** सीखने वाला व्यक्ति हर घटना से सीखता है, फिर चाहे वह सुखदायक हो या दु:खदायक। इसलिए सुख को याद भी रखो और भूल भी जाओ। इसी प्रकार दु:ख को याद भी रखो और भूल भी जाओ। उदाहरण के लिए, ***यदि किसी व्यक्ति ने हमें दु:ख दिया, तो हमें यह याद रखना चाहिए कि इसने हमारा नुकसान किया है। अतः भविष्य में इससे सावधान रहा जाए।*** यदि इस दृष्टि से याद रखें, तो ठीक है। पर ***यह सोचकर याद नहीं रखना चाहिए कि वह बड़ा खराब है, यदि मौका मिला, तो मैं इससे बदला जरूर लूँगा। इस प्रकार के दु:ख को याद नहीं रखना चाहिए। इससे द्वेष पैदा होता है।*** इसलिए इसे भूल जाना ही बेहतर है।

इसी प्रकार यदि ***हम संसार की वस्तुओं को यह सोचकर भोगेंगे कि इसमें बड़ा सुख है और यह हमें बार–बार प्राप्त होना चाहिए, तो ऐसा करना गलत है। इस प्रकार सोचने पर हमें राग हो जाएगा और हम माया के जंजाल में फँस जायेंगे। इसलिए सुख को इस रूप में याद रखो कि हमने पदार्थों का उपभोग किया और स्वस्थ जीवन जिया।*** इसी का नाम सामान्य सुख है।

जीवन में केवल सामान्य सुख याद रखना चाहिए, बस। बाकी जो इंद्रिय–सुख है, उसे भूल जाना ही बेहतर है। ऐसा करने पर ही 'वैराग्य' होगा और 'मोक्ष' की ओर बढ़ना संभव हो पाएगा।

11. शंका– 'आत्मा' और 'शरीर' बुरी तरह एक दूसरे में घुले–मिले हैं, इनको अलग–अलग कैसे मानें?

☯ ***समाधान–*** 'आत्मा' और 'शरीर' को अलग–अलग मानने के लिए कुछ मोटी–मोटी बातें अवश्य समझ लें। सवाल उठता है कि – क्या 'आत्मा' उत्पन्न होती है? जवाब है, नहीं। क्या 'शरीर' उत्पन्न

होता है? जवाब है, हाँ। *'आत्मा' न उत्पन्न होती है, न मरती है, जबकि 'शरीर' उत्पन्न होता है और मरता है। इसी तरह आत्मा बूढ़ी नहीं होती, शरीर बूढ़ा होता है। आत्मा आँख से दिखती नहीं, शरीर आँख से दिखता है।* इस तरह हो गए न, दोनों अलग–अलग।

12. *शंका– एक वाक्य लिखा है कि मेरी आत्मा नहीं मानती। यह वाक्य कौन कहता है–मेरी आत्मा नहीं मानती। इसका मतलब, मैं आत्मा से भी अलग चीज हूँ?*

☯ ***समाधान***– प्रश्न यह उठाया है कि यह वाक्य बोला जाता है कि– 'मेरी आत्मा नहीं मानती'। इससे फिर शंका पैदा होती है कि 'मैं' आत्मा से भी कोई और अलग चीज हो गया। जैसे 'मेरा पेन', 'मेरा शरीर', ऐसे ही 'मेरी आत्मा'। इसका समाधान है:–

- मेरे हाथ में पेन है। मैं एक वाक्य बोलता हूँ– यह मेरा पेन है। इस वाक्य का अर्थ क्या हुआ? ***क्या मैं पेन हूँ या पेन से अलग हूँ ?***

  उत्तर है – ***मैं पेन से अलग हूँ।***

  दूसरा वाक्य है – यह मेरी घड़ी है। तो क्या मैं घड़ी हूँ?

  उत्तर है – नहीं, घड़ी से अलग हूँ।

  ऐसे ही तीसरा वाक्य – यह मेरा हाथ है। क्या मैं हाथ हूँ?

  उत्तर है – नहीं, हाथ से अलग हूँ।

  ऐसे ही चौथा वाक्य – ***यह मेरा शरीर है। क्या मैं शरीर हूँ?***

  उत्तर है – ***नहीं, मैं शरीर से अलग हूँ।***

  तो मैं कौन हूँ? उत्तर है – ***मैं आत्मा हूँ।***

  जैसे यह मेरा पेन है, यह मेरी घड़ी है, यह मेरा हाथ है, यह मेरा शरीर है। चारों जगह पर 'मेरा' शब्द है। यह मेरा पेन है, मैं पेन से अलग हूँ। यह मेरी घड़ी है, मैं घड़ी से अलग हूँ। यह मेरा हाथ है, मैं हाथ से अलग हूँ। यह मेरा शरीर है, मैं शरीर से अलग हूँ, तो फिर शरीर से अलग रहने वाला मैं कौन हूँ? मैं आत्मा हूँ।

- यह जो शंका लिखी है कि मेरी आत्मा नहीं मानती, यह वाक्य गौण है। यह मुख्य कथन नहीं है। ***अपने भाषा साहित्य में दो प्रकार के वाक्य होते हैं:– एक मुख्य और दूसरे गौण।*** मुख्य–वाक्य का मतलब होता है, जिस वाक्य का सीधा–सीधा अर्थ लिया जाए और गौण–वाक्य का मतलब होता है, जिसका सीधा अर्थ नहीं ले सकते। थोड़ा अर्थ बदल करके लेना पड़ता है। उसमें सीधा–सीधा अर्थ लागू नहीं होता। कैसे? 'जैसे लोहे के चने चबाना' एक मुहावरा है। अब लोहे के चने मुँह में डाल के दाँत के नीचे चबाएंगे क्या? फिर भी यह एक प्रचलित मुहावरा है।

  कुछ बोलचाल में ऐसे अजीब–अजीब शब्द होते हैं लेकिन उन वाक्यों का सीधा–सीधा अर्थ नहीं लिया जाता। आप लोग मुम्बई से रेलगाड़ी में बैठे। जब रेलगाड़ी अहमदाबाद पहुँच गई तो आपने क्या बोला, चलो–चलो उतरो, अहमदाबाद आ गया। क्या अहमदाबाद आ गया? अरे ! अहमदाबाद तो वहीं खड़ा है। अहमदाबाद कहाँ चलकर आया? आप चल करके आए हैं अहमदाबाद। दिल्ली वाले भी अहमदाबाद आए, मुम्बई वाले भी अहमदाबाद आए। और बोलते क्या हैं कि उतरो–उतरो अहमदाबाद आ गया। वो तो वहीं खड़ा है, मुम्बई वहीं खड़ी है, दिल्ली वहीं खड़ी है। कोई भी नहीं चलता, पर हम बोलने में ऐसा बोलते हैं। इसको बोलते हैं, गौण–भाषा। यह मुख्य भाषा नहीं है। यहाँ पर अर्थ बदलना पड़ता है। जब आपको ऑटो–रिक्शा पकड़ना होता है, तो क्या आवाज लगाते हैं, ओ रिक्शा! रिक्शा सुनता है क्या? फिर किसको बोल रहे हैं, ओ रिक्शा! जैसे यह गौण कथन है। यह वास्तविक नहीं है, वैसे ही – 'मेरी आत्मा नहीं मानती' यह भी गौण कथन है। मुख्य कथन है कि – ***''मैं'' मानने को तैयार नहीं हूँ। मैं ही तो 'आत्मा' हूँ, मेरी आत्मा मुझसे कोई अलग वस्तु नहीं है।***

13. *शंका– जो हम चाहते हैं, वो हमें नहीं मिलता। जो हम नहीं चाहते, वो हमें मिल जाता है। ऐसा क्यों?*

☯ ***समाधान***– ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि:–

- हम सर्वशक्तिमान नहीं हैं। हम इस दुनिया के मालिक या राजा नहीं हैं। ***सब लोग हमारे आधीन नहीं हैं कि, जैसा हम चाहें, वैसा ही हो।***
- ***हम जो नहीं चाहते, दूसरे वो हमको जबरदस्ती थोप देते हैं।*** हमें वो काम करना पड़ता है। क्या करें, हम सबसे बड़े नहीं हैं। हम कईयों के नीचे रहते हैं। छोटे हैं तो हमें बड़ों की बात माननी पड़ती है, चाहे हमारी इच्छा हो, या न हो।
- ***दूसरे लोग स्वतंत्र हैं, इसलिए वो अपनी इच्छा से काम करते हैं। हम जैसा चाहते हैं, वे वैसा सहयोग नहीं देते।*** यह उनकी अपनी स्वतंत्र इच्छा है। इसलिए सब कुछ हमारी इच्छानुसार नहीं हो सकता।

14. शंका– सारे लोग हमारी इच्छा के अनुकूल व्यवहार करें, क्या ऐसा हो सकता है?

☯ ***समाधान***– बिल्कुल नहीं हो सकता। कारण यह कि:–

- हर एक का अपना–अपना स्वभाव है। हर एक की बुद्धि दूसरे से अलग है, हर एक के विचार अलग हैं, हर एक के संस्कार अलग हैं, हर एक का ज्ञान–विज्ञान का स्तर अलग है। किन्हीं दो व्यक्तियों के विचार सौ प्रतिशत एक समान नहीं हो सकते। उसमें दो, पाँच, दस, पंद्रह, बीस, पच्चीस प्रतिशत यानि कुछ न कुछ तो अंतर रहेगा ही।
- ***जिस व्यक्ति के साथ व्यवहार कर रहें हैं, उसके सिर में आपका दिमाग नहीं रखा है, तो फिर वह आपकी इच्छा के अनुकूल व्यवहार कैसे करेगा?*** उसके सिर में उसका दिमाग है, इसलिए वह अपने ढंग से व्यवहार करेगा और आपके सिर में आपका दिमाग है, इसलिए आप अपने ढंग में व्यवहार करेंगे। जिसकी जितनी बुद्धि, उतना ही तो वह करेगा।

हाँ, अगर ऐसा हो जाए कि आपकी बुद्धि उसके दिमाग में फिट कर दी जाए, फिर तो जैसा आप चाहते हैं, वैसा व्यवहार भी वह कर ले, लेकिन ऐसा तो हो नहीं सकता।

- चाहे कहीं भी रहो, परस्पर विचार–भिन्नता और लड़ाई, झगड़े होंगे। घर–परिवार में राग–द्वेष, अविद्या अधिक होती है। इसलिए वहाँ कलह ज्यादा होती है।

एक आदमी घर में पंद्रह साल रहा। जहाँ–जहाँ विचारों में टकराव आता था, वहाँ–वहाँ उसने समझाने का प्रयास किया लेकिन वो नहीं सुधरे।

घर में रहते हुए समाधान नहीं मिल पाया, इसलिए उसने थोड़ा विचार किया कि – ''भई, घर की स्थिति देखते–देखते चार–पाँच साल हो गए। वो अब सुधरने वाली नहीं है। इसलिए वहाँ रहने से कोई लाभ नहीं है। चलो, आश्रम चलते हैं।'' आश्रम में वे नई स्थिति में आ गए, नए लोगों के बीच में आ गए। जब वे इनसे थोड़ा व्यवहार करेंगे, तब झगड़ा तो यहाँ भी होगा, लेकिन थोड़ा कम होगा। क्योंकि साथ रहने वाले मनुष्य ही तो हैं। और सारे मनुष्यों में कुछ न कुछ अविद्या तो अभी बची हुई है। अगर अविद्या खत्म हो गई होती तो इस संसार में जन्म नहीं होता, तब मोक्ष ही मिल जाता। अविद्या अभी बाकी है तो राग–द्वेष भी होंगे ही।

अब चाहे दूसरे नगर में जाओ, गाँव में जाओ, जंगल में जाओ, जिन भी व्यक्तियों के साथ रहेंगे,उनमें थोड़ा बहुत राग–द्वेष तो रहेगा ही। अंतर इतना ही है कि घर में ज्यादा अविद्या, राग–द्वेष और झगड़ा था, आश्रम में रहने आ गए तो थोड़े कम अविद्या, राग–द्वेष वाले लोग मिले तो, कम झगड़ा हुआ। यहाँ भी सहन (एडजस्टमेंट) नहीं किया तो लोगों से फिर तनातनी हो गई। फिर गुस्सा आ गया, तो फिर झगड़ा हो गया। अब व्यक्ति वहाँ भी नहीं टिकेगा।

बहुत लोगों को घूमते देखा है हमने। घर छोड़े बीस साल हो गए, फिर भी बेचारे आज तक एक जगह से दूसरी जगह भटक ही रहें हैं। एक भी स्थाई जगह नहीं बन पाई। वे कहीं खाने की व्यवस्था में, कहीं प्रबंध व्यवस्था में, कहीं आचार्य के विषय में, कहीं शोर–शराबे के विषय में दोष निकालते रहते हैं। वे कहीं भी 'एडजस्ट' नहीं कर पाते।

इसलिए मानकर के चलो, व्यक्ति कोई भी हो, वह कुछ न कुछ ऊँचा–नीचा व्यवहार तो करेगा ही।

- *दो व्यक्तियों के विचारों में कुछ न कुछ अंतर रहेगा ही। दरअसल, उसी को तो हमें समझना है। जो इस अंतर को समझ लेता है, सहन कर लेता है, समायोजन कर लेता है, वो सुखी है, सफल है, उसका जीवन ठीक है, वह आगे बढ़ जाएगा, उन्नति कर पाएगा। इस अन्तर को हमें सहन करना है, वस्तुतः यही 'तपस्या' है। इससे व्यक्ति की गाड़ी चल निकलेगी।*
- प्रतिकूलता को सहन नहीं करना टकराव पैदा करेगा, झगड़े पैदा करेगा। तो वो उन्हीं झगड़ों में उलझकर के रह जाएगा, आगे नहीं बढ़ पाएगा। उसकी वास्तविक उन्नति नहीं हो पाएगी। अपने विचारों का समायोजन (एडजस्टमेंट) झगड़े से बचने का मुख्य उपाय है।

15. शंका– रेलगाड़ी और शरीर दोनों ही जड़ पदार्थ हैं। शरीर की वृद्धि होती है, गाड़ी की वृद्धि क्यों नहीं होती?

☯ **समाधान–** शरीर की वृद्धि इसलिए होती है कि उसमें चेतन 'आत्मा' है। गाड़ी में आत्मा है नहीं, इसलिए उसकी वृद्धि नहीं होती है। गाड़ी में इंजन होता है, वह भी जड़ (चेतना–रहित) है।

16. शंका– स्व–स्वामी संबंध अर्थात् मैं इस शरीर का स्वामी नहीं हूँ। यह बात तो ठीक है, लेकिन मैं अपने मन का स्वामी हूँ, यह कैसे ठीक हुआ?

☯ **समाधान–** 'स्वामी' का एक अर्थ होता है 'मालिक'। जबकि दूसरा अर्थ होता है – कार्य में उपयोग करने का अधिकारी, यानि 'ऑपरेटर'। एक होता है – 'ऑपरेटिंग राइट' और दूसरा होता है – 'ओनिंग राइट'। *मालिक होना और कार्य का अधिकारी होना, इन दोनों में बहुत अंतर है।*

एक सेठ ने बहुत बड़ी फैक्ट्री लगाई। बहुत सारे श्रमिक, कुछ क्लर्क, कुछ ऑफीसर और एक मैनेजर रख लिया। उस प्रबंधक (मैनेजर) को यह अधिकार दे दिया कि यह तुम्हारा ऑफिस है,

यह मोटर–गाड़ी है, यह टेलीफोन है, यह स्टेशनरी है, यह फर्नीचर है, तुम इन सबका उपयोग करो। हमारी फैक्ट्री का प्रबंधन करो।

जिस सेठ ने फैक्ट्री लगाई है, वह उसका मालिक है। और जो उसका सहायक है, प्रबन्धक है, वो है उसका 'ऑपरेटिंग मैनेजर'। वो केवल उन वस्तुओं का प्रयोग करने का अधिकारी है।

वास्तव में वो प्रबंधक उनका मालिक नहीं है, लेकिन उसको अधिकार दिया गया है कि वो इन सब चीजों का फैक्ट्री के प्रबंध के लिए प्रयोग कर सकता है। जैसे उन सारी चीजों का असली मालिक तो सेठ है। उसी ने सारा प्रबंध करके, फैक्ट्री सेटअप करके, ऑफिस बनाकर के मैनेजर को दिया। ठीक उसी प्रकार से जब यह कहा जाता है कि 'मैं इस शरीर का मालिक नहीं हूँ' तो इसका अर्थ है कि ''मैं सेठ की तरह नहीं हूँ, बल्कि उस मैनेजर की तरह हूँ।''

जब यह कहा जाता है कि *''मैं अपने मन रूपी साधन का स्वामी हूँ,' तब भी अर्थ वही है, कि 'मैं आत्मा नामक मैनेजर, मन का प्रयोग करने का अधिकारी हूँ।'' तो प्रश्न हुआ – कि फिर सेठ कौन है? उत्तर– ईश्वर। सेठ ने फैक्ट्री लगाकर मैनेजर को प्रबंधन करने के लिए दी। ऐसे ही ईश्वर ने हमें शरीर, मन आदि बनाकर प्रयोग करने के लिए दिए।*

जब बाहर का कोई दूसरा आदमी ऑफिस में कुर्सी तोड़ने लगता है, तब मैनेजर कहता है – ''ऐ! कुर्सी मत तोड़ना, यह मेरी कुर्सी है।'' वो किस अधिकार से ऐसा कह रहा है? वो ऑपरेटिंग मैनेजर है, इसलिए ऑपरेट करने के अधिकार का प्रयोग कर रहा है। वह उपयोग करने का मालिक है, वास्तव में मालिक नहीं है।

जैसे मैनेजर उस ऑफिस की वस्तुओं का अपनी इच्छानुसार प्रयोग करता है। इसी प्रकार से यह जीवात्मा आपरेटिंग मैनेजर है। इसलिए वो सब उपयोग करेगा, क्योंकि उसका अधिकार ईश्वर ने जीवात्मा को दिया है। मालिक यानि ईश्वर के अभिप्राय के अनुसार ही, वो इन सब चीजों का प्रयोग करेगा। दोनों वाक्यों का तात्पर्य

एक ही है। दोनों परिस्थितियों में स्मरण रहे कि हम इन वस्तुओं का प्रयोग करने के अधिकारी हैं। लेकिन हम इसके असली मालिक (ओनर) नहीं हैं।

17. शंका– आत्मा हाड़–मांस से बने इस शरीर में रहना क्यों पसंद करती है?

☯ ***समाधान– आत्मा को अविद्या के कारण यह हाड़–मांस का शरीर बहुत अच्छा लगता है।*** जब उसे समझ में आ जाता है तो उसकी अविद्या दूर होनी शुरु हो जाती है। जब अविद्या दूर हो जाती है तो आत्मा इस शरीर में नहीं रहना चाहती। प्रश्न उठता है कि कहाँ जाना चाहती है? उत्तर यह है, फिर 'मोक्ष' में जाना चाहती है।

❖ ***संपादकीय टिप्पणी***–*अठारहवें कठिन प्रश्न और उसके उत्तर को समग्र रूप से समझने के लिए इस संसार में मौजूद शरीर, दौलत, शोहरत, परिधान और कोठी आदि सब चीजों को विद्या–अविद्या के दृष्टिकोण से देखना पड़ेगा। इन्हें विवेकपूर्वक देखने से यह ज्ञात होगा कि–तकरीबन सब के सब लोग इन शरीर, शोहरत आदि चीजों को हासिल करने के पीछे लगे हुए हैं, और इनके पीछे लगने की वजह से इन व्यक्तियों के पीछे दु:ख लगा हुआ है। और एक दु:ख नहीं, बल्कि एक के पीछे दूसरा, और दूसरे के पीछे तीसरा दु:ख लगा हुआ है। आइए, इसे समझें:–*

- ***पहली बात यह है कि –*** *प्रथम दु:ख तो इस* ***'अनित्य–संसार' के 'अस्थायी' रहने का 'दु:ख'*** *है। वस्तुत: यह अपनी हरेक पसंदीदा चीजों के* ***'बदलने'*** *और* ***'न रहने का'*** *दु:ख है।*

  इसके बाद इन ***'अस्थायी–चीजों' से 'लगातार' सुख न मिलने का 'दु:ख'*** *और लगातार सुख लेने के प्रयास में लगे रहने पर उनसे* ***'ऊबने' का 'दु:ख'*** *है।*

  इस दु:ख की वजह यह है कि – सभी सांसारिक वस्तुओं से सुख मिलना थोड़ी देर के बाद बन्द हो जाता है। इसके बाद आगे उस वस्तु के सम्पर्क से व्यक्ति ऊबने लगता है। यह तो 'अनित्यता' की वजह से सांसारिक वस्तुओं से मिलने वाले दु:ख की चर्चा हुई।

- ***दूसरी बात यह है कि–*** *सभी सांसारिक वस्तुओं को कमाने, उन्हें खर्च करने (भोगने), उनकी रक्षा करने और उनकी बढ़ोत्तरी करने का जो काम किया जाता है, वह मेहनत भी कष्टदायक होती है।* ***'मेहनत' करने से 'कष्ट'*** *मिलता है। मेहनत चाहे शारीरिक हो या मानसिक, सबको कष्ट देती है।*

  इसी तरह सांसारिक वस्तुओं की ***'अशुद्धता' के कारण 'दु:ख'*** *मिलता है। जैसे – मनुष्य शरीर के पसीने, मल आदि से निकली बदबू आदमी को दु:खी कर देती है।*

  सुखदायक वस्तुओं का भोग करने से राग, द्वेष और अभिनिवेश नामक 'क्लेश' पैदा होते हैं। और उनसे फिर हिंसा, झूठ आदि वितर्क पैदा होते हैं। व्यक्ति इन्हें 'हितकर' मानकर ग्रहण करता है।

  इन ***राग, द्वेषादि क्लेशों से और हिंसादि वितर्कों से उसे 'हानि'*** *होती है। उस* ***हानि से उसे इस जीवन में 'दु:ख'*** *मिलता है। साथ ही उनसे* ***जाति, आयु और भोग रूपी 'दु:ख'*** *भी मिलता है। जाति यानी संसार में* ***'जन्म' लेने से फिर दोबारा आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक 'दु:ख'*** *मिलता है। यह सारे दु:ख संसार की, सांसारिक वस्तुओं की 'अशुद्धता' और 'अहितकरता' के कारण से मिलने वाले दु:ख हैं।*

- ***तीसरी बात यह है कि –*** *अर्जित किए गए अनित्य और अशुद्ध सांसारिक भोगों में सुख लेने के कारण भोगों में अतृप्ति होती है। इस* ***'अतृप्ति' से 'दु:ख'*** *महसूस होता है। फिर इस अतृप्ति के कारण उस भोग को और ज्यादा मात्रा में भोगने की इच्छा होती है। उस* ***'बढ़ी हुई इच्छा' की मौजूदगी से भी 'दु:ख'*** *प्राप्त होता है, और उस बढ़ी हुई इच्छा की* ***'पूर्ति न होने से' भी 'दु:ख'****। यह दु:ख 'परिणाम दु:ख' कहलाता है।*

  इन सुखदायक पदार्थों को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहने पर भी कई बार उनकी प्राप्ति में कोई न कोई बाधा आ जाती है तो इस ***'अड़ंगे' के आने पर व्यक्ति 'दु:खी'*** *हो जाता है। यह दु:ख 'ताप दु:ख' कहलाता है।*

चूँकि सारा संसार अनित्य है, इसलिए संसार की कोई भी चीज चाहे वह सजीव हो या निर्जीव या दूसरे से बने हमारे संबंध, चाहे वे पारिवारिक हों या व्यावसायिक, वे सब के सब स्थायी नहीं हैं। इसलिए हमें जो सुख और सुख–साधन पहली बार मिला, वही आगे भी मिले, यह जरूरी नहीं है। **'सुख के दोबारा न मिलने' पर 'दु:ख'** यानी उससे वंचित होने पर फिर दु:ख मिलता है। इस प्रकार के दु:ख को 'संस्कार दु:ख' कहते हैं।

एक वस्तु के प्रति परस्पर दो तरह के विचार मन में पैदा होने के कारण, **'विरोधी विचारों' की वजह से अन्तर्द्वन्द्व या मतभिन्नता होने से हमें 'दु:ख'** होता है। इसे 'गुण वृत्ति विरोध' दु:ख कहते हैं। यह तीसरे प्रकार की अविद्या यानी 'दु:ख को सुख मानने' से प्राप्त होने वाले दु:ख हैं।

- **चौथी बात यह है कि –** जो पत्नी, पुत्र, रिश्तेदार, धन, सम्मान, मकान आदि वस्तुएं हमारी आत्मा का हिस्सा नहीं हैं, उन्हें अपनी आत्मा का हिस्सा मानकर, उनके नष्ट होने पर व्यक्ति **अपने आत्मा को 'नष्ट' व 'लुटा–पिटा' मानकर 'दु:खी'** होता रहता है।

  इतना ही नहीं, अपने माने गये इन पुत्र आदि संबंधियों के पुत्र, पौत्रों, और उनके पास में मौजूद धन–सम्पत्ति और मान–प्रतिष्ठा आदि को भी वह अपना मानता है। जब उनके पुत्र, धन आदि नष्ट होते हैं तो उनके साधनों को अपने साधन मानने वाला वह व्यक्ति **'पराए के लुटने' को अपना लुटना मानकर, 'दु:ख'** मनाता है। यह चौथी अविद्या यानी 'अनात्मा को आत्मा' मानने के कारण उत्पन्न होने वाला दु:ख है।

- **पाँचवी बात यह है कि:–** जीवात्मा 'अविकारी' यानी 'अपरिणामी' होने से उसकी मूल स्थिति में कभी भी कोई **'बदलाव नहीं'** होता है। आत्मा तो दूर से ही सुख व सुखदायक वस्तु को देखता भर है, **उसका ज्ञान–मात्र प्राप्त करता रहता है,** पर वह उसे अपने अन्दर बिल्कुल भी नहीं लेता है।

इस प्रकार **जो भी सुखदायक वस्तु का हम सेवन कर रहे हैं, वह वस्तु तो ज्ञान–इन्द्रिय तक, और उस वस्तु का ज्ञान केवल बुद्धि तक आकर के बाहर ही वहीं पर रुक जायेगा। वहाँ से आत्मा के भीतर जाकर नहीं घुसेगा। आत्मा केवल उसे दूर से देखेगा।**

यह जो दूध, घी, मिठाई, फल आदि हम खा रहे हैं। इनका कुछ भी हिस्सा हमारी आत्मा में नहीं जाता है। सुख का कोई साधन या उससे मिलने वाला सुख आत्मा में कुछ भी संग्रह नहीं होता है। अब चाहे एक किलो दूध पी लो या आधा किलो, एक गुलाबजामुन खा लो या फिर दस खा लो, सुन्दर रूप देख लो, पसंदीदा गाना सुन लो, आत्मा में तो कुछ नहीं घुसने वाला। इनको खाने–देखने से आत्मा जरा भी मोटी–ताजी नहीं होगी।

अगर वह सुखद वस्तु या उसका सुख आत्मा से जुड़ जाता तो आत्मा में सदा आनंद बना रहता, पर वह पदार्थ आत्मा में नहीं घुसता, मिश्रित नहीं होता। यही वजह है कि सुखदायक वस्तु से हमारा सम्पर्क खत्म होते ही उससे मिलने वाला आनंद भी समाप्त हो जाता है।

लौकिक सुख–दु:ख, हानि–लाभ जो होते हैं, वे हमारी बुद्धि में घटित (चित्रित) हो रहे होते हैं। लेकिन व्यक्ति उसे अपनी आत्मा में घटित मानता है। इसलिए **सुखद विषय–वस्तु में मौजूद सारे गुण उसे अपने लगने लगते हैं।** इसलिए व्यक्ति जब खीर आदि पदार्थों को खायेगा तो महसूस करेगा कि यह जो खीर वह खा रहा है, वह मेरी आत्मा में प्रविष्ट हो रहा है। वह मानने लगता है कि – इसका सुख मेरे अन्दर यानी मेरी आत्मा के अन्दर पहुँचकर, मेरे अन्दर ही मुझे अनुभव हो रहा है। सोचता है – यह सुख मेरे भीतर ही है। तब वह बुद्धि में सुख आया न बोलकर, आत्मा में सुख आया बोलता है। इस प्रकार वह **बुद्धि के विकार को आत्मा का विकार मान कर झूठ–मूठ सुखी–दु:खी होकर अपनी सारी जिन्दगी बिता देता है।**

मरते समय जब शरीर और सुख–साधन छूट कर आत्मा से अलग हो जाते हैं तो उसे पता चलता है कि ''सुख और सुख–साधनों के घटने–बढ़ने से मैं आत्मा छोटा–बड़ा, सुखी–दु:खी नहीं होता हूँ।''

*इस प्रकार **संसार के चक्कर में पड़कर जीवात्मा सब तरफ से लुट–पिटकर लक्कड़ जैसा हतप्रभ खड़ा रह जाता है,** भौंचक्का रह जाता है।*

इतनी भूमिका को जानकर आइए, अब अगली शंका को समझने की ओर रुख करें :–

18. शंका– मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम–कृति है। वह इस संसार में रहते हुए मोक्ष प्राप्ति का प्रयत्न करता है। तब 'यह संसार मूढ़ व्यक्ति के लिए है' यह बात कैसे उचित हुई?

☯ ***समाधान***– ये दो अलग–अलग बातें हैं। प्रश्नकर्ता ने इन दोनों को मिला दिया है। इस संसार में मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। यह एक अलग बात है, अलग प्रसंग है।

- ***गाय, घोड़े, कुत्ते, बिल्ली, सुअर, मक्खी आदि की तुलना में मनुष्य सबसे उत्तम है,*** यह बात ठीक है। इसमें कोई आपत्ति नहीं है।
- अब दूसरी बात देखिए कि– ***क्या मनुष्य पूरी तरह से सुखी है ?*** सारी पृथ्वी पर राज्य करने वाला कोई चक्रवर्ती राजा ही क्यों न हो, चाहे बुश जैसा हो या बिलगेट्स जैसा हो, चाहे कितना ही बलवान हो, कितना ही प्रतिष्ठित हो, क्या वो पूरी तरह सुखी है? नहीं है न।
- ***क्या मनुष्य सब दु:खों से छूट गया है?*** नहीं। जो भी मनुष्य शरीरधारी है, कहीं न कहीं, कुछ न कुछ दु:ख उसको भोगने ही पड़ते हैं।
- ***अब आपको यह सुनकर बड़ा आश्चर्य होगा कि 'संसार में रहना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है।'*** क्यों नहीं है, समझ लीजिए। क्या दु:ख

भोगना बुद्धिमत्ता है या सुख भोगना? सुख भोगना बुद्धिमत्ता है। और क्या संसार में सुख मिलता है? नहीं। ***संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है, जो पूरी तरह सुखी हो।*** इसका अर्थ हुआ कि – पूर्ण बुद्धिमान तो कोई हुआ ही नहीं। तो बताओ, संसार में रहना बुद्धिमत्ता कैसे हुई!

- संसार में दु:ख मिलता है। ***दु:ख भोगना बुद्धिमत्ता नहीं है।*** इसलिए कहा जाता है कि – ''यह संसार मूढ़ व्यक्तियों के लिए है।'' क्योंकि ***जिसने संसार में जन्म लिया, उसने कुछ न कुछ दु:ख भोगा ही है।*** दु:ख भोगना ही पड़ेगा। उसने संसार में जन्म लेकर दु:ख भोगा है, तो इसका मतलब हुआ कि अभी उसमें कुछ न कुछ मूढ़ता अर्थात कुछ अविद्या बाकी है।
- ***अविद्या को मारने के लिए ही हमें मनुष्य जन्म मिला है।*** मनुष्य जन्म प्राप्त किया है, तो समाधि लगाओ, शास्त्र पढ़ो, समाज की सेवा करो, निष्काम कर्म करो और मोक्ष में जाओ। ***संसार मे पड़े–पड़े दु:ख मत भोगो।***

जो अपनी अविद्या को यहाँ पर मार डालता है, उखाड़ देता है, फिर वह पूर्ण बुद्धिमान हो जाता है। फिर उसकी मुक्ति हो जाती है। जब मुक्ति हो जाती है, तो वो इस दु:खमय संसार से छूट गया।

- मुक्ति में उसको शाश्वत सुख मिलता है। ***मनुष्य अविद्या को यहाँ पर उखाड़ कर पूर्ण बुद्धिमान होकर मोक्ष में जाकर पूर्ण सुख भोगता है।***
- और जो संसार में बाकी बच गए, वो मूढ़ बार–बार जन्म लेकर दु:ख भोगेंगे। ***इन मूढ़ व्यक्तियों में से जो बुद्धिमान हो जाता है, वह संसार में जन्म नहीं लेना चाहता, मुक्ति में जाता है।*** इसलिए कहा जाता है कि संसार मूढ़ व्यक्तियों के लिए है, बुद्धिमानों के लिए नहीं है। संसार में जन्म लिया अर्थात् अभी मूढ़ता बाकी है। उसको दूर करना है। यही तो मनुष्य जीवन का उद्देश्य है।

19. शंका– ईश्वर ने मनुष्यों और अन्य प्राणियों को सुख–दु:ख भोगने के लिए जन्म दिया है। ऐसा क्यों है?

☯ **समाधान**– इसका समाधान है कि:–

- सुख–दु:ख भोगने के लिए *मनुष्यों को* संसार में ईश्वर ने जन्म दिया है। जन्म हमारे सकाम कर्मों का फल है। हम पर भगवान ने कुछ थोपा नहीं है। ***पुण्य कर्म किए हैं तो सुख भोगो। पाप कर्म किए हैं तो दु:ख भोगो। निष्काम कर्म किए हैं, तो मोक्ष में जाओ।***
- भगवान कब कहता है, कि आप संसार में पड़े रहो। भगवान कहता है – निष्काम कर्म करो, मोक्ष में जाओ। क्यों बार–बार संसार में जन्म लो?
- ***संसार में नहीं, मोक्ष में रहना 'बुद्धिमत्ता' है।*** क्योंकि मोक्ष में सुख मिलता है। यहाँ संसार में दु:ख मिलता है। इसलिए जितना जल्दी हो सके, मोक्ष में जाओ। योगी समाधि में थोड़ी देर के लिए सुख भोगते हैं। लेकिन इस शरीर से पीछा छुड़ाना चाहते हैं, इसलिए बैठकर समाधि लगाते हैं।
- यहाँ एक व्यक्ति ने पूछा – संसार मे रहना अच्छा है। संसार में तो हम काम करते हैं। मोक्ष में निकम्मे बैठकर क्या करेंगे? तो मैंने कहा– मोक्ष में काम नहीं करना है। वहाँ मौज–मस्ती करनी है। इसे निकम्मापन नहीं कह सकते। मोक्ष वास्तव में छुट्टियाँ मनाने का अवसर है।

संसार में रहते हुए, पता नहीं कितने जन्म हो गए। ***यहाँ रहते–रहते इतने लाखों–करोड़ों साल हो गए। थक गए, बोर हो गए। इसलिए अब इससे मुक्ति चाहिए।*** इसे इस तरह समझिए–

आप पाँच दिन काम करते हैं, तो दो दिन छुट्टी क्यों मनाते हैं? उसे आप निकम्मापन कहते हैं क्या? विदेशों में फाइव डेज वीक होता है। अपने यहाँ छह दिन काम करते हैं, एक दिन छुट्टी मनाते हैं। तो क्या छुट्टी को निकम्मापन कहेंगे? नहीं, वो निकम्मापन नहीं है। वो फ्रेश होने के लिए जरूरी है। आप सातवें दिन, आठवें

दिन काम नहीं कर सकते। छह दिन आदमी काम कर–करके थक जाता है। एक दिन छुट्टी मनाने को चाहिए। मौज मस्ती करो, फ्रेश हो जाओ, आठवें दिन काम करेंगे।

20. शंका– क्या वेदों में नाचने (डांस) का विधान है? अगर है, तो किसलिए?

☯ **समाधान**– वेद में सिर्फ इतना नहीं लिखा कि सारे बस मोक्ष में ही जाओ। वेद में ऐसा नहीं लिखा कि डांस मत करो, धंधा भी मत करो। वेद में सब विहित कर्मों का विधान है अर्थात् नौकरी करो, व्यापार करो, खेती करो, उद्योग–धंधे चलाओ, फैक्ट्रियाँ चलाओ, कारखाने चलाओ, विद्वान बनो, राजा बनो, क्षत्रिय बनो, साइंटिस्ट बनो, पायलट बनो, शादी करो, बच्चे पैदा करो, उनका पालन करो, विद्वान बनाओ, उनको देशभक्त बनाओ, ईमानदार बनाओ और गीत भी गाओ, संगीत बजाओ और डांस भी करो।

इन सारे कार्यों को करो, पर इनकी सीमाएं हैं और विकल्प (ऑप्शन) हैं। ***जिसको यहाँ संसार के सारे सुख लेने हों, वो संसार का सुख ले और जिसको मोक्ष में जाना हो, वो मोक्ष में जाए।*** दोनों के लिए अलग–अलग विकल्प हैं। सबके लिए सारे काम अनिवार्य (कम्पलसरी) नहीं हैं। जिसकी डांस करने की इच्छा नहीं है, उस पर थोपा–थोपी नहीं है कि तुम्हें डांस करना ही पड़ेगा। जिसकी मोक्ष में जाने की रुचि नहीं, तो उसके लिए भी कोई जबरदस्ती नहीं है कि तुमको मोक्ष में जाना ही पड़ेगा। आपकी इच्छा है, मत जाओ।

डांस करने की भी सीमा है। अपने जो प्राचीन भारतीय नृत्य होते थे – शास्त्रीय नृत्य, उनकी परंपरा अभी भी कुछ बची हुई है। जैसे कि कत्थक कली, भरत नाट्यम। इस तरह के जो शास्त्रीय नृत्य (क्लासिकल डांस) होते हैं, वो अच्छे होते हैं। उनकी तो वेदों में छूट है। ऐसे डांस कर सकते हैं। उसमें सभ्यता भी होती है, शरीर भी अच्छी तरह से ढका होता है, कपड़े भी ठीक पहने होते हैं और अच्छी सुंदर व्यवस्था भी होती है। सब अच्छी तरह से करते हैं, वो अच्छा लगता है।

जिसकी अभी मोक्ष में रुचि नहीं है, जिसको वैराग्य नहीं हुआ, तो वह अपना टाइमपास कैसे करेगा? उसको ***अपना टाइमपास करने के लिए मनोरंजन चाहिए।*** वो अच्छे गीत गाए और अच्छे डांस करे। वेस्टर्न वाले डांस नहीं। ऐसे उल्टे–सीधे, वो हड्डियाँ–वड्डियाँ तोड़ के करते हैं, वैसा ब्रेक–डांस नहीं करना। उससे मन, बुद्धि खराब होती है।

जो अपने भारतीय ढंग के डांस हैं, वे अच्छे हैं। उससे चित्त शुद्ध रहता है। अपने भारतीय संगीत हैं, शास्त्रीय संगीत (क्लासिकल म्यूजिक) हैं। जिनमें राग–भैरवी, बागेश्वरी और इस प्रकार अच्छे–अच्छे मालकौंस आदि राग हैं, वे सब गा सकते हैं। उनमें भी प्रधानता ईश्वर–भक्ति की रहनी चाहिए। भरतनाट्यम्, कत्थककली और दूसरे कुच्ची–पुड़ी आदि भारतीय डांस होते हैं, इनमें बहुत सारी ईश्वर उपासना की बातें होती हैं। इनमें बहुत सारी धार्मिक लोककथाओं के माध्यम से ईश्वर–भक्ति का मंचन होता हैं अर्थात् भरतनाट्यम् आदि डांस में जो हाव–भाव दिखाए जाते हैं, वे हमें ईश्वर की ओर श्रद्धा–भक्ति उत्पन्न करते हैं। वे पश्चिमी नृत्यों की तरह काम–वासना को नहीं जगाते। इसलिए जिनकी डांस में रुचि हो, वे ऐसे अच्छे डांस कर सकते हैं।

21. शंका– क्या सोचने में दोष होने से, व्यक्ति सुख से जीना चाहने पर भी, सुख से नहीं जी सकता?

☯ ***समाधान***– हाँ, यह बिल्कुल ठीक बात है। अगर सोचने में दोष है, सोचना ठीक से नहीं आता तो आप कितना ही सुख से जीना चाहें, इच्छा आपकी कुछ भी हो, लेकिन सुख से नहीं जी सकते। सोचने को पहले ठीक करना पड़ेगा।

- ***जिसका सोचने का ढंग ठीक है, वो सुखी है।*** और जिसका सोचने का ढंग गलत है, वो दु:खी है।
- प्रश्न उठता है कि – सोचने का सही ढंग क्या है? उत्तर है– वही तीन शब्द ***"कोई बात नहीं"***। आपने 'गीता सार' पढ़ा होगा कि–

''क्या हो गया, उसने तुम्हारा क्या छीन लिया, जो कुछ लिया, यहीं से लिया और जो कुछ दिया, यहीं पर दिया, तुम क्या लाये थे, जो तुम्हारा खो गया, तुम्हारा क्या चला गया, तुम क्यों रोते हो, कुछ नहीं गया, सब भगवान का था और छीन लिया तो भगवान का गया, आपका कुछ नहीं गया।''

- ये ध्यान रहे कि, ***यहाँ आध्यात्मिक–भाषा चल रही है। इसको लौकिक–भाषा में फिट मत कर देना, नहीं तो गड़बड़ हो जाएगी।*** आप कहेंगे कि पाकिस्तान, कश्मीर को छीन कर ले गया, तो तुम्हारा क्या ले गया। ***वहाँ यह नियम नहीं चलेगा।*** वो लौकिक–क्षेत्र है। वो क्षेत्र अलग है, आध्यात्मिक क्षेत्र अलग है।
- हम जब संसार में आए, जन्म लिया, हमारे पास कुछ भी नहीं था। खाली हाथ आए थे और जब जाएंगे, तब खाली हाथ जाएंगे। फिर हमारा तो कुछ था ही नहीं। **आध्यात्मिक दृष्टि से तुम्हारा कुछ नहीं था।** और अगर किसी ने थोड़ा बहुत छीन भी लिया, तो भगवान बैठे नहीं हैं क्या? वे देखते नहीं हैं क्या?
- आप संध्या में छह बार तो सुबह बोलते हैं और छह बार शाम को बोलते हैं – "योस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः" अर्थात् जो हमसे द्वेष करते हैं, हम पर अन्याय करते हैं, जो भी गड़बड़ करते हैं, उसको हम ईश्वर के न्याय पर छोड़ देते हैं। ***आप अपने साथ किए गए अन्याय को ईश्वर के न्याय पर तभी तो छोड़ेंगे, जब आप बोलेगें–''कोई बात नहीं।''*** यह उसी का अनुवाद है। भगवान बैठे हैं, नुकसान या द्वेष को ईश्वर के न्याय पर छोड़ दो। **भगवान अपने आप न्याय करेगा।**
- ***हम झगड़े में पड़ेंगे तो हमारा योगाभ्यास बिगड़ जायेगा।*** हम ध्यान नहीं कर पायेंगे। हर समय हमारे मन में वही व्यक्ति याद आएगा, जिसने हम पर अन्याय किया, जिसने हमसे द्वेष किया। हम बस उसी को याद करते रहेंगे, और संध्या, ध्यान आदि कुछ नहीं होगा।

सीख यही है कि, ठीक ढंग से सोचेंगे, तो हम सुख से जिएंगे। और गलत ढंग से सोचेंगे, तो हम कितना ही सुख से जीना चाहें, नहीं जी पाएंगे। आओ हम, पहले सोचने का दोष ठीक करें।

22. शंका– सूक्ष्म–इच्छाओं से मुक्त कैसे हुआ जाए। क्या संसार में रहते हुए यह संभव है?

☯ ***समाधान***– वस्तुतः चाहे स्थूल इच्छाएँ हों, चाहे सूक्ष्म इच्छाएँ, दोनों के पीछे एक मनोविज्ञान (साइकोलॉजी) है। पहले यह जानिए कि इच्छा की उत्पत्ति क्यों होती है? उस साइकोलॉजी को पकड़िए, फिर उत्तर समझ में आएगा:–

- दरअसल, जहाँ हमको सुख दिखता है, ***जिस वस्तु में हमको सुख प्रतीत होता है, जहाँ हमको सुख मिला है या भविष्य में सुख मिलने की आशा है, वहाँ उस–उस वस्तु को प्राप्त करने की हमारी इच्छा होती है।***
- अगला प्रश्न उठता है कि, ***इच्छा से छूटें कैसे? उत्तर है – इससे उल्टा काम करो। जहाँ–जहाँ सुख दिखता है, वहाँ–वहाँ दुःख देखना शुरु करो।*** जब दुःख देखना शुरु करेंगे, तो इच्छा स्वतः खत्म हो जाएगी। कैसे? जैसे कि एक व्यक्ति ने सोचा कि:–

''बढ़िया आठ लाख की होंडा–सिटी कार खरीदेंगे। एयरकंडीशन कार है, बढ़िया चमकदार है। ठाठ से जाएंगे। लोग भी वाह–वाह करेंगे कि– देखो साहब, इसके पास बढ़िया गाड़ी है। प्रशंसा भी होगी, कार का सुख भी मिलेगा, धूप में, गर्मी में नहीं मरना पड़ेगा, बस में धक्का नहीं खाना पड़ेगा, आराम से जाएंगे।''

कार में सुख देखकर उसने कार खरीद ली। जब कार खरीद ली, तो फिर आया दुःख। क्या दुःख आया?

जब वो हाइवे पर चल रहा था, तो उसको टेंशन हो गई, पीछे से एक ट्रक ड्राइवर बेहिसाब ट्रक चला रहा है, वो कहीं पीछे से कार को ठोंकेगा तो नहीं? उसको हर समय डर लगता है। कोई दांई ओर से ठोंकेगा, कोई बायीं ओर से ठोंकेगा, कोई पीछे से

ठोंकेगा, कोई आगे से। क्योंकि इनका कोई भरोसा नहीं, सब आजकल बेहिसाब गाड़ी चलाते हैं।

फिर कार पार्किंग में खड़ी कर दी। और गए शॉपिंग–मॉल में सामान खरीदने। तब यह डर लगता है कि पीछे से कार चोरी न हो जाए। फिर कहीं पार्क के पास खड़ी कर दी। और गार्डन में सैर करने गए, तो तीसरा डर यूँ लगता है कि वो छोटे–छोटे बच्चे आए हैं, वो कार पर लकीर (स्क्रेच) न मार दें। वे इतनी बढ़िया कार की हालत बिगाड़ देंगे।

शरारती बच्चों को समझ तो है नहीं, वे तो अपना खेल समझते हैं। वे यह थोड़ी जानते हैं कि गाड़ी आठ लाख की है, इसमें लकीर नहीं मारनी चाहिए। जैसे वे दीवार पर लकीर मारते हैं, वैसे कार पर भी मार देंगे।

फिर उसके पड़ोस में एक मित्र के परिवार में, उसके बेटे की शादी थी। एक और टेंशन आ गई। मित्र के घर में शादी है। यह मित्र तीन–चार दिन के लिए कार उधार माँगने आएगा। अब बोलिए, कार में सुख दिख रहा है, कि दुःख दिख रहा है? दुःख दिखाई दिया न। बस ऐसे ही दुःख देखना शुरु करो, तो आपकी कार खरीदने की इच्छा खत्म हो जाएगी। इसलिए अगर आप मिश्रित दुःख–सुख भोगना नहीं चाहते, तो कार की इच्छा छोड़ दो।

- ***आपके सामने कुल तीन विकल्प (ऑप्शन) हैं:–***

पहला है – केवल 'सुख' मिलना चाहिए।
दूसरा है – केवल 'दुःख' मिलना चाहिए।
तीसरा है – 'सुख और दुःख' दोनों मिश्रित होने चाहिए।

बताइए, तीन में से कौन सा विकल्प आपको स्वीकार है ? पहले वाला, केवल सुख। तो कार में केवल सुख मिलता है क्या? नहीं मिलता न। या तो दुःख मिलेगा या फिर सुख–दुःख दोनों मिश्रित (मिक्स) मिलेंगे।

एक बार मैंने भी कार खरीदी थी और दो साल कार चलाई। यह सारा दुःख मेरी समझ में आ गया। मैंने कहा–'निकालो इसको,

यह 'कार' नहीं 'बेकार' है।' निकाल दी। अब मैं सुखी हो गया हूँ। अब कार नहीं है, खूब शाँति और आराम से जी रहा हूँ।

कार वाला बनने में सुख तो है, पर उसके साथ भीषण दु:ख भी है। मैं मना थोड़ी कर रहा हूँ। मैं सिर्फ बता देता हूँ कि कार खरीदोगे, तो ये दु:ख भी आएँगे। जिसको दु:ख भोगना हो वह कार खरीद ले। और जिसको दु:ख से छूटना हो, वो कार छोड़ दे। मुझे छूटना था, मैंने कार छोड़ दी। अब मैं सुखी हो गया।

- मैं जहाँ जाता हूँ, वहीं कार मिल जाती है। बोलो, क्या घाटा है ? आपके पास तो घर में दो कारें होगी, तीन कारें होंगी। मेरे पास तो एक हजार कारें हैं। जिस नगर में जाता हूँ, वहीं सामने छह कारें खड़ी रहती हैं। एक व्यक्ति कहता है—आप मेरी गाड़ी में बैठो, दूसरा कहता है—मेरी गाड़ी में बैठो। अब आप ही बताओ, मुझे क्या कमी है? फिर मैं क्यों कार खरीदूँ। समझ में आई बात।
- आप सोचते होंगे – हम भी ऐसा ही कर लेंगे। अगर ऐसा करना है, तो ***मेरी तरह 'संन्यासी' बनना पड़ेगा। यह घर—बार छोड़ना पड़ेगा, वैराग्य उत्पन्न करना पड़ेगा, तपस्या करनी पड़ेगी। इतनी सारी कारें ऐसे ही नहीं मिलती हैं।***

इच्छाओं को इस तरह से जितना हो सके, कम करें। संसार में सुख नहीं, दु:ख देखें। केवल मोक्ष में, ईश्वर में सुख देखें। इसके अलावा इच्छाओं से छूटने का और कोई तरीका नहीं है।

23. शंका— सुंदर शरीर, कपड़े, गाड़ी, सुंदर काले बाल, पूरी लंबाई का क्या महत्व है?

☯ ***समाधान***— सुंदर शरीर, सुंदर कपड़े, गाड़ी, चमकदार मकान, बँगला, काले बाल और अच्छी हाइट (लंबाई) इसका महत्व है कि :—

- इसको देखकर व्यक्ति संसार में फँसता है। ***चमक—दमक वाली चीजों को देखकर व्यक्ति का दुनिया में राग बढ़ता है। जो कि बन्धन में बाँधने वाला है।*** अगर भगवान ने हमको सुंदर शरीर दिया है तो वो हमारे कर्मों का फल है। पर यह इसलिए नहीं दिया

कि हम फैशन कर—करके दुनिया को फँसाते रहें, संसार के लोगों को यहाँ बंधन में डालते रहें। इसलिए ऐसा काम नहीं करना चाहिए।

- एक अन्य दृष्टि से ***शरीर अच्छा हो, बलवान हो, स्वस्थ हो, तो उससे व्यक्ति तेजी से काम करेगा,*** अच्छा काम करेगा।
- ***अच्छा शरीर इसलिए दिया है, ताकि पौष्टिक भोजन खाओ, शरीर को स्वस्थ बनाओ, बलवान बनाओ, मोक्ष प्राप्ति करो, समाज की सेवा करो, समाधि लगाओ।*** यह है इसका लाभ।

24. शंका— आत्मा हर समय सुविचारों को ही क्यों नहीं उठाता, क्योंकि आत्मा को पवित्र बताया गया है? मन में अशुद्ध विचार जैसे – चोरी—व्यभिचार, हिंसा, असत्य आदि अनुचित विचार क्यों आते हैं?

☯ ***समाधान***— *यहाँ प्रश्न पूछा है कि आत्मा मन के द्वारा अपने विचारों को प्रकट करता है। सुना है कि आत्मा नित्य है, शुद्ध है, बुद्ध है, इसलिए मन में अच्छे ही विचार आने चाहिए। आत्मा अपने स्वरूप से शुद्ध व पवित्र है तो हमारे मन में बुरे विचार क्यों आते हैं?* इसके बहुत सारे कारण हैं:—

- अपनी इच्छा से जीवात्मा खराब काम नहीं करना चाहता, गलती नहीं करना चाहता। स्वयं तो वो अच्छी बात ही चाहता है, सुख ही चाहता है, अच्छे काम ही करना चाहता है।
- 'अविद्या' नाम का एक दोष है, जो जीवात्मा के साथ जुड़ जाता है। ***आत्मा यद्यपि स्वरूप से शुद्ध है। शुद्ध होते हुए भी, आत्मा के पास जो ज्ञान है, वह कुछ शुद्ध है, कुछ अशुद्ध है। यानी आत्मा में कुछ तो विद्या है और कुछ उसमें अविद्या भी है। अविद्या (उल्टे ज्ञान) के कारण वो मलीन हो जाता है।***
- यह दोनों ***विद्या—अविद्या नैमित्तिक हैं*** यानि कि यह बाहर से जीवात्मा में आती हैं। कहीं वह अड़ोस—पड़ोस के लोगों से कुछ बुरी बातें सीख लेता है। उसके कारण बुरे विचार करता है। कुछ टेलीवीजन से, कुछ कंप्यूटर से, कुछ मोबाईल से, कुछ इंटरनेट से, कुछ

पढ़ाई–लिखाई के सिलेबस से, कुछ मित्र–मण्डली से, कुछ सरकार के कानूनों से, ऐसे–ऐसे बहुत सारे कारण हैं, जिनसे व्यक्ति बुरे विचार भी कर लेता है। प्राकृतिक रजोगुण, तमोगुण की वजह से भी जीवात्मा में यह अविद्या, राग–द्वेष आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इस गड़बड़ी के कारण कभी–कभी वो बुरे विचार उठा लेता है, बुरे काम भी कर लेता है, गलत भाषा भी बोल देता है।

- जब यह अविद्या ऊपर से चिपक जाती है, तो उस अविद्या के कारण, उन संस्कारों के कारण जीवात्मा बुरे विचार यानी गड़बड़ विचार (उल्टी सोच) करता है। इसी अविद्या के दोष के कारण वो अच्छे विचार भी उठा लेता है और बुरे विचार भी उठा लेता है। ***अविद्या के कारण उसमें राग और द्वेष उत्पन्न हो जाते हैं।*** इस प्रकार कुछ विद्या भी है और कुछ अविद्या भी है।
- ***अविद्या के प्रभाव से प्रेरित होकर जीवात्मा झूठ बोलता है, चोरी करता है, व्यभिचार करता है, अन्याय करता है, शोषण करता है, छल–कपट करता है, हिंसा करता है, निंदा– चुगली करता है। अविद्या जीवात्मा को लपेट लेती है, क्योंकि जीवात्मा अल्पज्ञ है।*** जीवात्मा बेचारा कमजोर है, इसलिए अविद्या उसको आकर दबा लेती है, वो बेचारा पिट जाता है। अविद्या के नीचे दबकर जीवात्मा उल्टे–सीधे काम करता है।
- ईश्वर सर्वज्ञ है, उसको अविद्या नहीं लपेट सकती, उसको अविद्या नहीं दबा सकती। उसमें ज्ञान की पराकाष्ठा होने से अविद्या उसे नहीं सताती।
- अनेक जन्मों से अविद्या हमारे अंदर चली आ रही है। जब व्यक्ति अविद्या को दूर कर लेता है तो हर समय सुविचार ही उठाता है।
- कोशिश करनी चाहिए कि बुरे विचारों से बचें, बुरे विचारों को रोकें, अच्छे विचार करें, अच्छी भाषा बोलें, अच्छे कर्म करें। ऐसा हमको पूरा प्रयत्न करना चाहिए। इसका उपाय है–वेदों का अध्ययन, ईश्वर का ध्यान और निष्काम–सेवा करना।

25. *शंका– ज्ञान बिना कर्म नहीं, तो मोक्ष के लिए पतंजलि निर्दिष्ट अष्टांग योग पढ़ना, समझना, आचरण में लाना क्यों काफी नहीं है? हर एक दर्शन, वेद पढ़ना क्यों जरूरी है? इसमें तो काफी समय लगेगा?*

☯ ***समाधान–*** इन दो प्रश्नों के उत्तर निम्नलिखित हैं:–

- मुक्ति भी कोई जल्दी थोड़े मिलने वाली है। ***मुक्ति प्राप्त करने में समय तो लगेगा।***
- सारे दर्शन पढ़ना होगा। केवल योग–दर्शन से काम नहीं चलेगा। ***केवल एक शास्त्र पढ़ने से हमारा ज्ञान–विज्ञान उतना विकसित नहीं होता।*** उसका ज्ञान बहुत संक्षिप्त और सीमित रहता है। बहुत सी बातें समझ में नहीं आतीं। मन में प्रश्न उठेंगे– ईश्वर को क्यों मान लो, पुनर्जन्म को क्यों मान लो, मुक्ति को क्यों मान लो। इन प्रश्नों का उत्तर कहाँ से लाएंगे? इनका उत्तर योग–दर्शन तो नहीं देगा। और योग–दर्शन देगा तो, सीधा–सीधा वाक्य बोल देगा– हाँ भाई, ईश्वर होता है, सबका गुरु है, अनादिकाल से है, अनंतकाल तक रहेगा। इतने में तो आपको संतोष नहीं होगा।
- आज तो साइंस का विद्यार्थी पहले पूछता है कि 'क्यों' मान लें ? क्यों का उत्तर, योग–दर्शन नहीं देगा। उसका उत्तर देगा–'न्याय दर्शन'। अगर आपको 'क्यों' का उत्तर नहीं मिलेगा, तो आपको 'संतोष' नहीं होगा। बात आपके दिमाग में जमेगी नहीं।

  आप कहेंगे– ''यह तो बस ऐसे ही थोपा–थोपी वाली बात है। मान लो, हाँ, भगवान है, मान लो, अगला जन्म है। भई, हमको नहीं जँचती, यह "मान लो वाली" बात। इतने से बात नहीं बनेगी। क्यों मान लो? उसका कारण हमको स्पष्ट होना चाहिए। दिमाग में बैठना चाहिए, तब मानेंगे। ''

  इसके लिए व्यक्ति को अन्य दर्शन भी पढ़ने होंगे। इसमें कोई शंका नहीं है कि– पढ़ने में लंबा समय लगेगा और वो समय लगाना पड़ेगा, आपको भी और मुझे भी मेहनत करनी है, कीजिए।
- प्रश्न यह भी किया है कि जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति ही है तो क्या संस्कृत पढ़ना, चारों वेद पढ़ना, सभी दर्शन पढ़ना जरूरी है?

सारे न भी पढ़ो तो कम से कम **इतना तो पढ़ लो कि दुनिया समझ में आ जाए, ईश्वर समझ में आ जाए, जीव समझ में आ जाए।**

इतना तो व्यवहारिक रूप से समझ में आना चाहिए कि –

''तीन वस्तुएं अनादि हैं, तीनों के गुण, कर्म, स्वभाव ये–ये हैं। प्रकृति दुःखदायी है, चारों ओर दुःख ही दुःख है।''

महर्षि पतंजलि लिखते हैं – 'दुखमेव सर्वम् विवेकिनः'। बुद्धिमान व्यक्ति की दृष्टि में चारों ओर दुःख ही दुःख है। और इतना समझने के लिए **भले ही आप चारों वेद न भी पूरे पढ़ें, परन्तु कुछ दर्शन, कुछ संस्कृत, कुछ उपनिषद्, कुछ वेद तो पढ़ना ही होगा। इसके बिना बात नहीं बनेगी।**

- सांख्य दर्शन का पहला सूत्र है – *'अथ त्रिविध दुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः।''अर्थात* तीन प्रकार के दुःखों से पूरी तरह छूट जाना, यह मनुष्य का सबसे अंतिम लक्ष्य है। इसलिए दुःखों से छूटो और मोक्ष की प्राप्ति करो। बार–बार शुरू से आखिर तक सभी दर्शन, वेद, उपनिषद्, यही कहते हैं।

अष्टांग–योग का पालन करिए। थोड़ी संस्कृत भाषा सीख लीजिए। चार–पाँच दर्शन पढ़ लीजिए। इतना तो जरूरी है बाकी अपना योगाभ्यास कीजिए, समाज की सेवा कीजिए, मोक्ष मिल जाएगा।

26. शंका– क्या मुक्ति के लिए मनुष्य योनि ही अनिवार्य है? अन्य योनियों में मुक्ति नहीं हो सकती?

☯ **समाधान–** मुक्ति केवल मनुष्य योनि में ही होती है और किसी प्राणी के शरीर से मुक्ति नहीं होने वाली है। गाय के शरीर से डायरेक्ट मुक्ति नहीं होगी। **मनुष्य शरीर में भी केवल संन्यासी का मोक्ष होता है**, और किसी का नहीं होता है।

27. शंका– क्या कीट–पतंग, सर्प, जीव–जंतु आदि मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं, यदि हाँ तो कैसे?

☯ **समाधान–** नहीं, क्योंकि:–

- कीड़े–मकोड़े, पशु–पक्षी, जीव–जंतु कोई भी हों, वे योगाभ्यास, यम–नियम का पालन नहीं करते। **वे इस योनि से सीधे मोक्ष में नहीं जा सकते।** मोक्ष के लिए सबका एक ही रास्ता है। सबको उसी रास्ते से चलना पड़ता है। ईश्वर का न्याय सबके लिए एक समान है। वहाँ कोई अन्याय नहीं, कोई पक्षपात नहीं।
- ये कीड़े–मकोड़े, पशु–पक्षी अपने कर्मों का दण्ड भोगकर लौटकर वापस मनुष्य बनेंगे। पशु–पक्षी अपना दंड भोगकर के जब मनुष्य योनि में आएंगे, तो किसके घर में जन्म लेंगे?

ये कीड़े–मकोड़े जब मनुष्य बनेंगे तो पहले–पहले शूद्र परिवार में (शूद्र माता–पिता के घर में) जन्म लेंगें। शूद्र परिवार में, जिसको फोर्थ क्लास बोलते हैं, उन मजदूर, चपरासी आदि के घर में जन्म लेंगे। फिर वहाँ अच्छे कर्म करेंगे, तो प्रमोशन हो जाएगा।

- **शूद्र व्यक्ति जब पुण्य–कर्म जमा करेंगे, तो फोर्थ क्लास से थर्ड क्लास–वैश्य परिवार में आ जाऐंगे। फिर आगे और अच्छे कर्म करेंगे तो सेकण्ड क्लास–क्षत्रिय परिवार में प्रमोशन हो जाएगा। उसके बाद और अच्छे काम करेंगे, तो फर्स्ट क्लास–ब्राह्मण परिवार में जन्म होगा।** ब्राह्मण में भी और ऊँचे ब्राह्मण के यहाँ जन्म ले लेंगे, जब और अच्छे काम करेंगे। उसको फर्स्ट क्लास सुपर बोलते हैं। **और अच्छे काम करेंगे, तो फिर संन्यासी बन जाऐंगे। और संन्यासी बनकर के समाधि लगाएंगे। तब मोक्ष मिलेगा।** सबके सब लोगों को इसी एक रास्ते पर चलना है।
- **लोग अच्छे कर्म करेंगे, तो अच्छे घर में जन्म मिलेगा।** वहाँ से और अच्छे संस्कार मिलेंगे। फिर और अच्छे कर्म करेंगे। एक बच्चे ने न्यायाधीश के घर में जन्म लिया और एक बच्चे को धोबी के घर में जन्म मिला। क्या यह दोनों का कर्म फल नहीं है? है न। तो उनके कर्मों में कुछ ऊँचा–नीचापन तो होगा ही। उसको ऊँचे परिवार में जन्म क्यों मिला? उसने पूर्व जन्म में अच्छे काम किए होंगे। अब इस न्यायाधीश के घर में जन्म लेकर उसे बचपन

से ही अच्छे बुद्धिमान माता–पिता मिल गए। वे उसको अच्छे संस्कार देंगे। अच्छी बात सिखाएंगे और वो खूब तेजी से आगे बढ़ेगा। और जिसको धोबी के घर में जन्म मिला, उसने अच्छे कर्म नहीं किए। इसलिए अच्छे परिवार में जन्म नहीं मिला। यह है पूर्व जन्म में किए कर्मों का फल।

- ***जिसने जितना कर्म किया, उतना उसको फल मिला। आगे उसको नया चान्स है। फिर आगे पुरुषार्थ करें।*** इस प्रकार से पशु–पक्षी, कीट–पतंग भी मनुष्य बनकर मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

28. शंका– मोक्ष से लौटने के बाद पहला जन्म शूद्र परिवार में क्यों मिलेगा?

☯ ***समाधान***– मोक्ष से लौटने के बाद पहला जन्म शूद्र परिवार में मिलेगा। क्योंकि,

- महर्षि दयानंद जी ने ऋग्वेद (पहला मंडल, चौबीसवाँ सूक्त, मंत्र संख्या दो) के भाष्य में लिखा है कि – जो आत्माएँ मुक्ति से लौटती हैं, उनके पुण्य और पाप तुल्य (बराबर) होते हैं। पहले के लौकिक–सुख प्राप्ति के लिए किए गए सकाम कर्म–जनित पाप–पुण्य उनके जमा रहते हैं। और अपने कर्मानुसार पुण्य–पाप तुल्य होने से शूद्र माता–पिता के यहाँ जन्म लेकर वो शरीर धारण करते हैं।

  जब पाप–पुण्य तुल्य होते हैं, तब साधारण मनुष्य का जन्म होता है। यह वेद की बात है, हमारे घर की बात नहीं है।

- ***कोई भी यात्रा शून्य (ज़ीरो) किलोमीटर से आरंभ (स्टार्ट) होती है।*** शूद्र परिवार ज़ीरो किलोमीटर है। जीरो मध्य में होता है। बाईं तरफ माइनस (–) और दाईं तरफ प्लस (+) होता है। शूद्र से बाईं तरफ पशु–पक्षी, पेड़–पौधे यानी माइनस (–) है। और दाईं तरफ ब्राह्मण परिवार प्लस (+) है। ***इसलिए मोक्ष से लौटकर पहला जन्म जीरो शूद्र परिवार में मिलेगा।***

  आप घर से चले मुंबई, तो कहाँ से किलोमीटर गिनना शुरू करेंगे? अपने घर से, वो है जीरो। फिर एक किलोमीटर चले,

तो एक किलोमीटर यात्रा पूरी हो गई। तो शुरुआत कहाँ से होती है? जीरो से। इसी प्रकार से मुक्ति से जब लौट के आए, तो नई यात्रा चली। मुक्ति के लिए भी यात्रा जीरो से शुरु होगी। जीरो मतलब शूद्र परिवार, सामान्य जन्म, साधारण मनुष्य। यहाँ से यात्रा शुरु होती है। इसलिए मुक्ति से लौटकर आने वाले आत्मा को भगवान शूद्र के घर में जन्म देता है। अब यहाँ से आपकी यात्रा शुरु हुई।

- अब मेहनत करो। कोई एक जन्म में दस मील पार करेगा, कोई बीस मील पार करेगा। पशु–पक्षी से लौटकर शूद्र बना। शूद्र के बाद वैश्य बना। फिर क्षत्रिय बना। फिर ब्राह्मण, फिर संन्यासी बना और फिर मोक्ष की प्राप्ति। जैसा कि पहले बताया था। दस–दस मील पार करते जाएँ। यह सामान्य नियम है कि– शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय और ब्राह्मण, फिर संन्यासी और फिर मोक्ष।
- ***एक व्यक्ति ज्यादा जोर से दौड़ लगाएगा, तो वो सीधा चालीस मील पार कर जाएगा। लेकिन आगे जाकर ठंडा पड़ गया, दूसरे काम शुरु किए, तो बीस मील वापस भी आ जाएगा। यह अप–डाउन तो होता रहता है। सामान्य नियम है कि क्रमशः उत्तरोत्तर उन्नति होगी। और उसमें जो ऊँचे–नीचे स्तर बन रहे हैं, वो कर्म के आधार पर हैं, जन्म के आधार पर नहीं हैं।***
- कर्म से व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र माना जाता है। यदि अच्छे कर्म करेगा, तो अच्छे बुद्धिमान के यहाँ जन्म लेगा। यह कर्म–फल है, मुफ्त में नहीं मिलता। ***कर्म के आधार पर ही उसको अगला फल – जन्म मिला। और आगे उन्नति का अवसर जन्म से ही मिलेगा।*** वो पिछले कर्म का फल भोगेगा।
- और कोई अपवाद यूँ भी होता है कि पहले दो सौ, पांच सौ, हजार जन्म भोग चुका। अच्छे कर्म भी किए, बुरे भी किए। सब तरह के कर्म कर बहुत सारे संस्कार जमा कर लिए। फिर एक जन्म में शूद्र के घर में पैदा हुआ। अब पिछली बहुत सारी सम्पत्ति (संस्कार) थी। उसके बाद फिर कोई घटना देख ली। जैसे महर्षि दयानंद

जी ने देख ली। महात्मा बुद्ध ने देख ली। ऐसी और कई लोगों ने संसार की घटनाऐं देख लीं। उन घटनाओं को देखकर उनके मन में वैराग्य जाग गया। जो पिछले हजारों जन्मों की कमाई थी। वो जाग गई। अब ***इसी जन्म में उसने खूब पुरुषार्थ किया, तो शूद्र या क्षत्रिय परिवार में पैदा होकर के सीधा ब्राह्मण बन सकता है। यह अपवाद है।*** हमारे गुरुजी–स्वामी सत्यपति जी महाराज का जन्म तो ऐसे ही साधारण मुस्लिम परिवार में हुआ था। अब फिर घटनाएं देखीं, तो वैराग्य हो गया। फिर खूब जोर लगाया। आज देखो कहाँ पहुँच गए।

जिस व्यक्ति ने 20 वर्ष की उम्र तक क, ख, ग भी नहीं सीखा हो। आज वह वेदों का विद्वान और कितने ऊँचे स्तर का योगी, तपस्वी और कितना शास्त्रों का पंडित, और कितना काम करने वाला व्यक्ति, कितनी संस्कृत भाषा जानने वाला बन गया। यह कोई साधारण बात है? हो सकता है, इसी जन्म में इनकी मुक्ति हो जाए। यह इनका अंतिम जन्म हो। और अगर मान लिया, कुछ कमी रह गई, तो एक दो जन्म और लेना पड़ेगा, बस फिर गाड़ी मोक्ष के स्टेशन पर जाकर रुकेगी।

- अब जब इतने महान पुरुष देख रहे हैं, तो इनको देखकर हम प्रेरणा ले सकते हैं। मुक्ति वाला तो आएगा नहीं, हमें प्रेरणा देने के लिए। उसके लिए तो भगवान ने मना कर दिया कि तुम मत करो संसार को प्रेरणा। तुम्हारे बस का नहीं है। यह हमारा ही काम है। हम कर लेंगे। तो ***ऐसे–ऐसे महान पुरुषों को देख करके हम बहुत सी प्रेरणा ले सकते हैं कि इतने साधारण परिवार में जन्म लेकर भी इतनी ऊँचाई तक पहुँच गए।***

तात्पर्य है कि व्यक्ति बहुत तीव्र गति से भी उन्नति कर सकता है। पर वो अपवाद है। ऐसे लोगो की संख्या बहुत कम होती है। सामान्य नियम तो वो ही है। स्टेप बाई स्टेप चलना अर्थात् पहले शूद्र, फिर वैश्य, क्षत्रिय, ब्राह्मण, संन्यासी और फिर मोक्ष।

29. शंका– आपने कहा कि मोक्ष से लौटने पर पहला जन्म शूद्र का होता है, परंतु मोक्ष फल तो अति उत्तम कर्मों से मिलता है। और ऐसी आत्माएं यदि फिर जन्म लें, तो उच्च कोटि के मनुष्य के रूप में ही होनी चाहिए?

☯ ***समाधान***– मान लीजिए, एक गरीब आदमी दिल्ली में झुग्गी–झोपड़ी में रहता है। उसने अच्छा पुरुषार्थ किया, कुछ रुपया कमा लिया, जिसका फल मिला– एक सप्ताह तक मुम्बई की सैर। वह एक सप्ताह तक मुंबई घूमा। खूब खाया–पीया, अच्छी तरह होटल में भी रहा। एक सप्ताह पूरा हो गया, तो वापस दिल्ली आ गया।

यहाँ सवाल ये उठता है कि अब दिल्ली लौट आया, तो क्या दिल्ली के फाइव स्टार होटल में जाएगा, या वापस अपनी झुग्गी–झोपड़ी में जायेगा? वापस तो वहीं जाना पड़ेगा न। जिस कर्म से उसको एक सप्ताह की मौज–मस्ती मुंबई में मिली थी, अब उसके आधार पर उसको दिल्ली के फाइव स्टार होटल में जगह नहीं मिलेगी। अब तो वापस वहीं रहना है, जहाँ से चले थे। इसी प्रकार से, जो व्यक्ति मोक्ष में जाता है, उसने जिन कर्मों का फल मोक्ष में भोग लिया, वह खत्म हो गया। ***अब जब मोक्ष से वापस लौटेगा, तो फिर वापस सामान्य जन्म में जाएगा। क्योंकि यहाँ से जब चला था, तब भी झुग्गी–झोपड़ी से ही चला था, जीरो से ही चला था।***

कोई भी यात्रा जीरो किलोमीटर से स्टार्ट होती है। जीरो पर खड़ा हुआ व्यक्ति प्लस (वैश्य परिवार, क्षत्रिय परिवार, ब्राह्मण परिवार) की ओर भी चल सकता है और माइनस (पशु–पक्षी योनि में जन्म) की ओर भी चल सकता है।

मोक्ष से जो लौटेगा – जन्म लेगा, वो सकाम कर्मों का फल है। और मोक्ष में जो आनंद भोगा, वो निष्काम कर्मों का फल था। वो तो भोग लिया, खत्म हो गया।

अब दोबारा आपको मोक्ष में जाना है, तो दोबारा नए सिरे से निष्काम कर्म करो, फिर वेद पढ़ो, अपना ज्ञान ठीक करो,

समाधि लगाओ, सेवा करो, परोपकार करो और फिर दोबारा मोक्ष में जाओ। पर वापस लौटने के समय पहला जन्म तो वो ही झुग्गी–झोपड़ी में जाना पड़ेगा अर्थात् शूद्र परिवार में जन्म मिलेगा।

30. शंका– मदर टेरेसा अपने जीवन–काल में दूसरों की सेवा करती रहीं। उन्होंने शायद ईश्वर उपासना नहीं की। यम, नियम का पालन नहीं किया। तो क्या वे मोक्ष की अधिकारी थीं?

☯ **समाधान**– उत्तर है, नहीं। दरअसल, मोक्ष के लिए तीन काम अनिवार्य (कम्पलसरी) हैं:–

(1) ***पहला काम–वेद के अनुसार हमारा ज्ञान–विज्ञान हो।*** जो हमारे सिद्धांत व मान्यताएं हैं, वे वेदानुकूल हों अर्थात् हमारा ज्ञान शुद्ध होना चाहिए।

(2) मोक्ष प्राप्ति के लिए ***दूसरा काम–निष्काम कर्म होने चाहिए।*** मदर टेरेसा के कर्म निष्काम नहीं थे। उनके सांप्रदायिक उद्देश्य थे। उन्होंने इतना तो अच्छा किया कि गरीबों, रोगियों की सेवा की। परन्तु मनुष्य जाति की सेवा के पीछे उनकी भावना दूसरी थी। शुद्ध भावना नहीं थी। ***सेवा के पीछे अपने संप्रदाय का प्रचार करने, लोगों को ईसाई बनाने की भावना थी।*** इसलिए वो शुद्ध (निष्काम) कर्म नहीं था।

(3) ***तीसरा काम है–शुद्ध उपासना।*** अर्थात् जैसा ईश्वर का स्वरूप वेदों में बताया है, वैसे ईश्वर की उपासना करना। वह भी मदर टेरेसा का नहीं था। इस कारण से उन्हें मोक्ष नहीं मिला।

31. शंका– मरने के बाद कहानी खत्म नहीं होती। ऐसा क्यों कहा जाता है?

☯ **समाधान**– यही तो बात है, जो लोगों के दिमाग में नहीं बैठती। शरीर मरता है और आत्मा नया जन्म ले लेती है। जैसे स्कूटर को गैराज में रखकर हम उससे अलग हो जाते हैं। वैसे ही मृत्यु

होने पर शरीर और आत्मा दोनों अलग–अलग हो जाते हैं। अंतर इतना है कि स्कूटर पर तो हम रोज बैठते हैं, फिर अलग हो जाते हैं। उससे तो जल्दी अलग हो जाते हैं, पर शरीर से पचास, साठ, अस्सी या सौ साल के बाद अलग होते हैं।

तात्पर्य है कि, ***एक न एक दिन आत्मा शरीर से अलग हो जाती है। उसी क्षण का नाम 'मृत्यु' है। उसके बाद, अगला 'जन्म' होता है।*** ठीक वैसे ही, जैसे आप पुराने स्कूटर को छोड़कर नया स्कूटर खरीदते हैं। गीता में इसी बात को पुराने कपड़े त्यागकर नये वस्त्र धारण करने के उदाहरण से समझाया गया है। स्कूटर घिस–पिट गया, नया ले लिया। ऐसे ही शरीर जर्जर हो गया, तो छोड़ दिया। फिर नया शरीर मिल जाएगा। मरने के बाद कहानी खत्म नहीं होती, ऐसा इसीलिए कहा जाता है।

32. शंका– खराब काम करने वाले को खराब योनि मिलती है। आज पचहत्तर प्रतिशत व्यक्ति खराब काम करते हैं, फिर भी संसार में मनुष्यों की संख्या क्यों बढ़ती ही जा रही है? क्या सभी अधिकारी जीवों का मुक्ति–काल समाप्त हो गया है, क्या वे मुक्ति से लौटकर आ रहे हैं?

☯ **समाधान**– पिछले पचास वर्षों में तो मनुष्यों की संख्या (पॉपुलेशन) बढ़ती जा रही है। पहले भारत की संख्या तीस करोड़ थी, आज सौ करोड़ से ऊपर चली गयी। पूरी धरती की संख्या पहले तीन अरब थी, आज सात अरब हो गई। जनसंख्या इतनी क्यों बढ़ रही है, क्या अच्छे काम ज्यादा हो रहे हैं? इस सवाल का जवाब है:–

- ***एक कारण है कि 'आत्मा' मुक्ति से लौट रहे हैं। इसलिए संख्या बढ़ रही है।*** सारे मुक्ति से नहीं आ रहे हैं। मनुष्यों की संख्या इस कारण से नहीं बढ़ रही है। दरअसल, मुक्ति में से तो कोई–कोई आता होगा। लेकिन वो हमें पता नहीं चलता। गत वर्षों में मनुष्यों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, उसके कई कारण हैं।

- **दूसरा कारणः–** एक व्यक्ति ने दस साल तक मेहनत की, व्यापार में खूब पैसा कमा लिया और आगे जाकर उसने व्यापार बंद कर दिया। अब वो व्यापार नहीं कर रहा। लेकिन पिछले दस साल में उसने जो कमाया, उसको बैठ के खा रहा है। उसे इसका पूरा अधिकार है।

  इसी तरह इस समय जो मनुष्य लोग हैं, वो पहले कमाई करके आए हैं। ***वे अच्छे कर्म करके आए हैं। इसीलिए मनुष्य योनि में आए हैं।*** वे पिछली कमाई खा रहे हैं। लेकिन ***यदि इस जन्म में वे अच्छे काम नहीं कर रहे हैं, तो आगे उनको मनुष्य जन्म नहीं मिलेगा। वे मोक्ष के अधिकारी नहीं होंगे। वे पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े की योनि में स्थानांतरित (ट्रांसफर) हो जाएंगे।*** उनको बुरे कर्मों का यह दण्ड मिलेगा। और जब दण्ड भोग लेंगे, कर्म–दण्ड पूरा हो जाएगा, तब वे फिर मनुष्य योनि में आ जाएंगे। इसका न आपको पता चलेगा और न मुझे।

  अनुमान प्रमाण है कि ईश्वर न्यायकारी है, वह बिना कर्म के फल नहीं देता। जिसने बुरा कर्म किया, उसको बुरा फल दिया। जिसने अच्छा कर्म किया, उसको अच्छा फल दिया।

- ***आजकल जो तेजी से मनुष्यों की संख्या बढ़ रही है, उसका कारण यह नहीं है कि, मनुष्य लोग अच्छे कर्म कर रहे हैं। दरअसल, जो बुरे कर्म करके पशु–पक्षी, कीड़ों–मकोड़ों और पेड़–पौधों की योनि में गए थे, वे अपना दण्ड भोगकर, कर्मफल पूरा करके मनुष्य योनि में आ गए हैं। यह मनुष्यों की संख्या बढ़ने का एक कारण है।***

यहाँ **कर्मफल के तीन नियम** समझने पड़ेंगेः–

(1) ***पहला नियम–*** एक व्यक्ति अपने पूरे जीवन में यदि पचास प्रतिशत अच्छे और पचास प्रतिशत बुरे कर्म करता है यानी बराबर मात्रा में (इक्वल) पचास–पचास अच्छे–बुरे कर्म हैं। यहाँ पहला नियम कहता है किः–

''समान मात्रा में अच्छे बुरे कर्मों को करने से व्यक्ति को तुरंत अगला जन्म साधारण मनुष्य का मिलेगा।''

साधारण मनुष्य का मतलब जिसे आप आजकल की भाषा में फोर्थ–क्लास फैमिली जैसे– मजदूर, चपरासी, पटेवाला कहते हैं। एक तरीका मनुष्य बनने का यह है।

(2) ***दूसरा नियम–*** यदि कोई व्यक्ति अपने पूरे जीवन में पचास प्रतिशत से अधिक अच्छे कर्म करता है, जैसे – मान लिया कि साठ प्रतिशत अच्छे कर्म करता है, और चालीस प्रतिशत बुरे कर्म करता है। उसके अच्छे कर्म अधिक हैं, इसलिए प्रमोशन होगा। फोर्थ क्लास से थर्ड क्लास फैमिली में आ जाएगा। मजदूर, चपरासी से ऊँचे घर में, कोई बुद्धिमान, सेठ, धनवान, किसी क्षत्रिय के घर में जन्म होगा। इसी तरह से यदि अच्छे कर्म का प्रतिशत बढ़ता जाएगा, साठ की बजाय सत्तर प्रतिशत अच्छे कर्म किए तो और ऊँचे घर में जन्म मिलेगा। अस्सी प्रतिशत अच्छे कर्म किए तो और ऊँचे घर में जन्म मिलेगा। जहाँ पर धार्मिक, विद्वान माता–पिता हों, सदाचारी हों, देशभक्त हों, ईश्वर–भक्त हों, ईमानदार हों, ऐसे–ऐसे अच्छे परिवार में जन्म मिलेगा। और यदि सौ प्रतिशत अच्छे और निष्काम कर्म करेगा, तो उसका मोक्ष हो जाएगा। यह दूसरा नियम हैः–

''यदि आपके कर्म पचास प्रतिशत से ज्यादा अच्छे हैं, और बुरे कम हैं, तो भी मनुष्य बनेंगे।''

तो इस नियम से भी तुरंत मनुष्य बन सकते हैं।

(3) ***तीसरा नियम–*** यदि कोई व्यक्ति बुरे कर्म पचास प्रतिशत से अधिक करता है, और अच्छे कर्म पचास प्रतिशत से कम। मान लीजिए साठ प्रतिशत बुरे कर्म किए, और चालीस प्रतिशत अच्छे कर्म किए। अब साठ और चालीस में कितना अंतर है? बीस प्रतिशत का। तो बीस प्रतिशत बुरे कर्म अच्छे कर्मों की तुलना में उसने अधिक किए। अब यहाँ बीस प्रतिशत पाप अतिरिक्त हैं, अधिक हैं, तो कर्म–फल का तीसरा नियम कहता है, कि–''जब

बुरे कर्म अधिक हो जायेंगे, तो तुरंत अगला जन्म मनुष्य का नहीं मिलेगा।'' अब उसका दंड भोगने के लिए नीचे उतरना पड़ेगा। कुत्ता, बिल्ली, हाथी, गाय, घोड़ा, मक्खी, मच्छर, बंदर, सुअर, साँप, आम, पीपल आदि–आदि बनना पड़ेगा। जब तक नीचे इन बीस प्रतिशत पापों का दंड पूरा नहीं भोग लेगा, तब तक वापस लौट के मनुष्य नहीं बनेगा। तब तक वहीं चक्कर काटेगा।

यदि कोई पशु–पक्षी, कीड़ा–मकोड़ा बना हुआ था, तो वो कैसे बना था, पहले यह समझ लीजिए। पुण्य की तुलना में अधिक पाप किए, तो तीसरा नियम यह कहता है कि:–

''जब पाप अधिक बढ़ जाएगा, तो पहले उसका दंड भोगने के लिए कुत्ता–बिल्ली, पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े बनना पड़ेगा।''

पहले अन्य योनियों में बीस प्रतिशत पाप का दंड भोगो, जब वो निपट जाए, तब एकाउंट बैलेंस (बराबर) हो जाएगा। चालीस प्रतिशत पाप, चालीस प्रतिशत पुण्य का खाता जब बराबर हो जाएगा, तो फिर लौट के मनुष्य बनेंगे।

तो इस समय जो आप कह रहे हैं न कि मनुष्य की संख्या बढ़ती जा रही है, यह इस नियम से बढ़ रही है। कीड़े–मकोड़े, मक्खी, मच्छर अपना दण्ड भोगकर, मनुष्य योनि में लौट के वापस आ रहे हैं। उनका नंबर आ गया है मनुष्य बनने का।

मुक्ति से लौटना एक कारण, मनुष्य से मनुष्य बनना, दूसरा कारण और मनुष्यों में ज्यादा अच्छे कर्म करके फिर अच्छे परिवार में जन्म लेना तीसरा कारण, कीड़े–मकोड़े से लौटकर वापस मनुष्य बनना–चौथा कारण। और किसी अन्य लोक–लोकांतर से यहाँ ट्रांसफर होकर यहाँ मनुष्य जन्म लेना, यह मनुष्य की संख्या बढ़ने का पाँचवा कारण है। ऐसे बहुत सारे कारण हैं, जिसकी वजह से यहाँ जनसंख्या (पॉपुलेशन) बढ़ रही है। चौथा वाला कारण ज्यादा ठीक लग रहा है। और भी कारण थोड़े–थोड़े होंगे।

33. शंका– बहुत जन्मों के बाद अच्छे कर्म करने से मनुष्य जन्म मिलता है। धरती पर अब बहुत कम मात्रा में अच्छे कर्म हो रहे हैं, बुरे कर्म ज्यादा हो रहे हैं, इस हिसाब से मनुष्यों की बस्ती (संख्या) कम होनी चाहिए, लेकिन मानव बस्ती तो बढ़ती जा रही है?

☯ ***समाधान***– प्रश्न है कि मनुष्यों की संख्या क्यों बढ़ती जा रही है, जबकि अच्छे काम घट रहे हैं, बुरे काम ज्यादा हो रहे हैं। उत्तर समझने के लिए:–

- अच्छा यह बताइए कि, मनुष्यों की संख्या अधिक है या दूसरे कीड़े–मकोड़ों की? उत्तर होगा– कीड़े–मकोड़ों की। इससे बात साफ है, अच्छे कर्म कम होते हैं, इसलिए मनुष्य कम हैं। ***बुरे काम ज्यादा होते हैं, इसलिए संसार में कीड़े–मकोड़े, पशु–पक्षी ज्यादा हैं।*** एक तो यह मोटी–मोटी बात है।
- अब यह बताइए कि, पिछले पचास सालों में मनुष्यों की जो संख्या बढ़ी, यह सामान्य मजदूर गरीबों के घर में बढ़ी या आई.ए.एस, आई.पी.एस ऑफीसरों के घर में बढ़ी? यह तो सामान्य परिवारों में बढ़ी। इसका मतलब निकला कि – ***पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े के शरीर से लौटकर जीवात्मा आ रहे हैं। इसलिए सामान्य मजदूर गरीबों के घर में मनुष्यों की संख्या बढ़ रही है।***

  संख्या अच्छे कर्मों के कारण नहीं बढ़ रही। पाप–दंड भोग करके, निपटा करके, अब उनका मनुष्य बनने का नंबर आया। इसलिए वो लौटकर मनुष्य बन रहे हैं। इन मनुष्यों की संख्या बढ़ रही है।
- ***इस समय जो पाप कर रहे हैं, वो मरने के बाद यहाँ से वहाँ ट्रांसफर हो रहे हैं, कुत्ते–बिल्ली में, गाय–घोड़े के शरीर में। संसार के लोगों को यह सत्य दिखता नहीं। इसलिए लोग पाप करना छोड़ते नहीं।***

  लोग तो यह समझते हैं कि, हरिद्वार में जाओ, गंगा जी में स्नान करो तो सारे पाप खत्म हो जाएंगे। इसलिए लोग खूब पाप करते हैं। अगर उनको समझ में आ जाए कि भगवान छोड़ेगा नहीं,

कुत्ता–बिल्ली बनाएगा, दंड देगा, माफ नहीं करेगा तो वो पाप करना बंद कर देंगे।

- मैंने एक नियम बताया था – ***'दंड के बिना कोई सुधरता नहीं है।'*** अगर दंड दिखता है, तो व्यक्ति सुधरेगा। देखिए, यह बिजली का तार है। क्या बिजली के तार को आप छुएंगे? क्यों नहीं छुएंगे ? साफ दंड दिख रहा है न, कि छूते ही दंड मिलेगा। जब दंड दिख रहा है तो आप नहीं छुएंगे। और ऐसे ही ***अगर यह दंड भी दिखने लग जाए कि हम झूठ, छल–कपट, चोरी, बेईमानी करेंगे तो भगवान कुत्ता, साँप, बिच्छू, भेड़िया आदि बना देगा। तो आप पाप क्यों करेंगे? कोई भी नहीं करेगा।*** सब सीधे हो जाएंगे, सब सुधर जाएंगे। तो संख्या के बढ़ने–घटने का यह कारण है।

34. शंका– क्या सृष्टि में जीवों की जनसंख्या निश्चित है। संसार में मानव, पशुओं, पक्षियों, जीव–जंतुओं की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है तो एक बार संख्या निश्चित होती है तो बढ़ती कैसे है?

☯ ***समाधान–*** यह जो प्रश्न उठाया है कि सबकी संख्या बढ़ती जा रही है, यह बात ठीक नहीं है। कारण कि:–

- आपके पास इन प्राणियों की संख्या का कोई हिसाब–किताब नहीं है। आप बता सकते हैं, दिल्ली में एक दिन में कितने मच्छर मरते हैं और कितने नए पैदा होते हैं? मच्छरों की संख्या का पता नहीं, और यहाँ तो हजारों, लाखों योनियाँ हैं।
- ***आत्माओं की संख्या निश्चित है।*** यह तो आप मानते हैं कि आत्माएँ न पैदा होती हैं, न मरती हैं। अगर आत्माएँ नई पैदा होने लग जाएं तो आत्माओं की संख्या बढ़नी शुरु हो जाएगी। जब नई आत्मा पैदा होगी तो संख्या बढ़ेगी। और जितनी आत्माएँ हैं, अगर उनमें से कुछ मरनी शुरु हो जाएं, तो घटने लगेंगी।

  ''जब आत्मा पैदा नहीं होती तो आत्माओं की संख्या बढ़ेगी नहीं, और जब आत्मा मरती नहीं तो संख्या घटेगी नहीं। इसलिए

आत्माओं की संख्या तो उतनी ही रहेगी, एक कम नहीं होगी, एक बढ़ेगी भी नहीं।''

- रही बात शरीरों की। शरीर पैदा भी होते हैं और मरते भी हैं। इसलिए शरीर कभी घट जाते हैं, कभी बढ़ जाते हैं। एक जगह संख्या बढ़ रही है तो समझ लेना, दूसरी जगह जरूर घट रही है।

  आत्माएँ तो उतनी ही हैं। एक आत्मा एक समय में छह शरीरों में तो रह नहीं सकती। ***कभी आत्माएँ पशु, पक्षियों की योनियों में से मर करके अर्थात् शरीर छोड़ करके मनुष्य शरीर में आ जाती है तो मनुष्यों की संख्या बढ़ जाती है। और मनुष्य वाली आत्मा मनुष्य शरीर छोड़ करके पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े में चली जाती है तो इधर मनुष्य घट जाते हैं और उधर पशु–पक्षी, बैक्टीरिया आदि बढ़ जाते हैं। पूरा हिसाब रखना हमारे बस की बात नहीं है।*** केवल ईश्वर जानता है।
- मोक्ष मिल जाएगा तो आत्मा मोक्ष में चली जाएगी। आत्मा मरेगी फिर भी नहीं। मोक्ष में उसकी सत्ता (अस्तित्व) बनी रहेगी और जब मोक्ष का समय पूरा हो जाएगा, फिर आत्मा लौट के वापस संसार में जन्म लेगी।
- आत्माएं हमारी गिनती से तो अनंत हैं। हम पूरा नहीं गिन पाएंगे लेकिन वास्तव में आत्मा की संख्या निश्चित है। कोई न कोई एक फिगर निश्चित है। अल्पज्ञ होने के कारण उसे हम नहीं जान सकते।
- ***ईश्वर सर्वज्ञ है और वह आत्मा की संख्या जानता है,*** और ईश्वर सबका हिसाब रखता है।

35. शंका– क्या सौ प्रतिशत अच्छे कर्म करने के लिये संन्यास लेना अनिवार्य है या गृहस्थ में रहते हुए भी व्यक्ति सौ प्रतिशत अच्छे कर्म करके मोक्ष में जा सकता है?

☯ ***समाधान–*** बिना संन्यास लिए आदमी सौ प्रतिशत अच्छे काम नहीं कर सकता और दुनिया उसको करने भी नहीं देगी। ***आप घर***

में रहो, गृहस्थ बनकर रहो, लोग आपको अच्छे काम करने ही नहीं देंगे। आपको बुरे कामों में घसीटेंगे। कहेंगे:– ''चल भई! हमारे यहाँ रिश्तेदारी में चल।'' आप कहोगे:–''नहीं–नहीं, मैं नहीं जाऊँगा।'' वे कहेंगे:–''अरे ! कैसे नहीं जाएगा, तेरे घर में फंक्शन था, तो हम नहीं आए थे क्या? आज हमारे घर में फंक्शन है, तू कैसे नहीं आएगा?'' इस तरह आप नहीं जाना चाहेंगे तो भी वे जबरदस्ती घसीट के ले जाएंगे।

जब आप मेरी तरह ***संन्यासी बन जाएंगे, तो फिर कौन प्रेशर मारेगा?*** फिर कोई नहीं प्रेशर मारेगा। मैं कहूँगा–''मैं संन्यासी हूँ। मैं शादी में जाता ही नहीं। मैं अपने सगे भाई की शादी में नहीं गया तो तुम्हारी शादी में क्या आऊँगा।'' अब बताओ, कौन मेरे साथ जबरदस्ती करेगा? इसलिए संन्यास लेना पड़ेगा। तब संसार के लोग आपके ऊपर दबाव नहीं डाल सकेंगे। और तब आप पूरे अच्छे काम कर पाएंगे। अगर आप गृहस्थ बने रहेंगे तो पचास लोग आपको प्रेशर मारेंगे और जबरदस्ती आपसे उल्टे–सीधे काम कराएंगे। इसलिए यदि आप मोक्ष में जाना चाहते हैं तो संन्यास लेना ही पड़ेगा।

36. शंका– क्या समाधि काल में, योगी के पूर्वकृत कर्म नष्ट हो जाते हैं या बचे रहते हैं? क्या समाधि लगाने से, पूर्वकृत कर्म, बिना फल दिए भी नष्ट हो सकते हैं?

☯ ***समाधान***– समाधि–काल में बाहर के काम नहीं होते, वो सारे बंद हो जाते हैं।

एक व्यक्ति समाधि लगाता है, ईश्वर की उपासना करता है, तो उसको ईश्वर की अनुभूति होती है, ईश्वर से आनंद मिलता है, ज्ञान मिलता है, बल मिलता है, उत्साह मिलता है, बहुत सारे अच्छे गुणों की प्राप्ति होती है। ***समाधि–काल में ईश्वर की उपासना ही एकमात्र कर्म होता है।***

समाधि–काल में भी उसके जो पहले किए हुये कर्म हैं, वो जमा रहते हैं। इससे कर्म नष्ट नहीं होते। ***दरअसल, कर्म बिना फल***

भोगे नष्ट होते ही नहीं हैं। वो चाहे समाधि लगाए, या न लगाए। यदि किसी व्यक्ति ने कोई भी कर्म किया है, तो उसका फल निःसंदेह भोगना ही पड़ेगा।

कर्म, बिना फल दिए कभी भी नष्ट नहीं होते, वो हमेशा जमा रहते हैं। जब उनका फल मिलता जाता है तो फल भोगने से वो कर्म हट जाते हैं। मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दो हजार कर्म थे। तीन सौ कर्मों का फल मिल गया, सत्रह सौ बाकी रह गए। अब समाधि लगाओ अथवा न लगाओ कोई फर्क नहीं पड़ेगा। वे बचे हुए सत्रह सौ कर्म, फल भोगकर ही नष्ट होंगे, अन्यथा नहीं।

37. शंका– पूरा प्रयास करने पर कितने सालों में या एक जन्म में मोक्ष पा सकते हैं?

☯ ***समाधान***– उत्तर है:–

- एक जन्म कब से गिनना शुरु करेंगे? यहाँ आर्यवन में, शिविर में आने के बाद एक जन्म गिनना शुरु करेंगे, या जब से मुक्ति से लौटे तब से गिनना शुरु करेंगे? दरअसल, ***जब से हम मोक्ष से लौटकर इस संसार में आए, एक जन्म की गिनती तब से शुरु होती है।*** वो पहला जन्म होता है। ***जीवात्मा जब–जब संसार में मुक्ति से लौटकर आया, और उसने जन्म लिया, वो उसका पहला जन्म है।***
- अब समस्या तो ये भी है कि लोगों के दिमाग में यही नहीं बैठता कि हम मुक्ति से लौटकर आए हैं। निश्चित रूप से आप जितने लोग यहाँ बैठे हैं, और जितनी जीवात्माएं संसार में हैं, वो सब की सब मुक्ति से लौटकर आयी हुई हैं, और सबको वापस वहीं जाना भी है।
- उस एक जन्म में तो मुक्ति नहीं हो सकती। सत्यार्थ प्रकाश का नवां समुल्लास (चैप्टर) पढ़िए। उसमें लिखा है, मुक्ति एक जन्म में होती है या अनेक जन्मों में? उत्तर दिया गया–अनेक जन्मों में। ***मुक्ति के लिए कई जन्म तक तपस्या करनी पड़ेगी।*** एक जन्म में पूरा जोर लगाने पर भी मोक्ष नहीं हो सकता, उसके लिए और जन्म लेने पड़ेंगे।

- ***और कितने जन्म लेने पड़ेंगे, वो हमारी और आपकी मेहनत की बात है, हमारे पुरुषार्थ, प्रगति की बात है।*** मोक्ष के लिए हम कितना परिश्रम करते हैं, कितना आलस्य करते हैं, यह उस पर आधारित है। उसमें पाँच जन्म लगें, या पचास भी लगें, पाँच हजार भी लगें, पाँच लाख भी लगें, पाँच करोड़ भी लगें, कितने भी लग सकते हैं। सबको बराबर काल लगेगा, ऐसा कोई नियम नहीं है।
- 'सांख्य–दर्शन' के चौथे अध्याय में एक सूत्र है– ''न कालनियमो वामदेववत्।'' अर्थात् काल (समय) का कोई नियम नहीं है, वामदेव ऋषि के समान। वामदेव ऋषि कई जन्मों से तपस्या करते चले आ रहे थे। अब इस जन्म में उन्होंने पिछली तपस्या आदि को भी साथ जोड़ लिया। इस जन्म में पूरा जोर लगाया और उनकी 'मोक्ष' प्राप्ति की योग्यता बन गई, उनको 'समाधि' प्राप्त हो गई। ***वामदेव ऋषि ने पूरा जोर लगाया, इसलिए वर्तमान जन्म में उनकी योग्यता बन गई।***
- ***अब यह आवश्यक नहीं कि सब लोगों की योग्यता इसी जन्म में ही बन जाएगी।*** सबकी स्थिति अलग–अलग है, सबकी रुचि अलग–अलग है, सबकी योग्यता अलग–अलग है, सबके संस्कार अलग–अलग हैं, सबके वैराग्य अलग–अलग हैं, सबका पुरुषार्थ अलग–अलग है। इसलिए सबके लिए समान काल का नियम लागू नहीं है। कोई पहले, कोई पीछे।

  मान लीजिए, अहमदाबाद से दिल्ली बहुत सारे लोग जा रहे हैं। सबके पास वाहन अलग–अलग प्रकार के हैं। कोई कार में जा रहा है, कोई स्कूटर पर चल रहा है, कोई बाइक पर जा रहा है, किसी के पास साइकिल है, कोई ट्रेन में जा रहा है, कोई विमान में जा रहा है, और कोई पैदल ही जा रहा है तो कोई पहले पहुँचेगा, कोई पीछे पहुँचेगा। ***जैसा जिनका साधन, वो उसी हिसाब से पहुँचेंगे।*** मोक्ष की भी यही बात है।

- ***यदि अच्छे कर्म करके किसी बुद्धिमान के यहाँ जन्म ले लिया, फिर आगे कर दिए घोटाले, फिर बुरे कर्म कर दिए, तो वापस नीचे।*** कूद जाओ वापस शूद्र परिवार में। और अधिक बुरे काम कर लिए, तो और नीचे जाओ, जैसे सुअर, बिल्ली बनो। फिर वहाँ जाके दंड भोगो। इस तरह से अप–डाउन, अप–डाउन चलता रहता है। यह सब कर्मों का फल है।

  बड़ा आदमी, ऑफीसर बनकर रिश्वत लेता है, डकैती करता है, दूसरों को परेशान करता है और वो पकड़ा जाता है, तो उसको सस्पेंड भी तो कर देते हैं। फिर नीचे उतार देते हैं।
- अब पीछे पता नहीं, कितने जन्म हो गए, वो तो किसी को मालूम नहीं। हमको याद नहीं रहता, याद रखने की जरूरत भी नहीं। अब हम आज कहाँ खड़े हैं, 'मोक्ष' कितनी दूर है, हमारी ताकत कितनी है, हमारी योग्यता कितनी है, सामर्थ्य कितना है, उसको देखना है। उसको ध्यान में रखकर चल दीजिए। लक्ष्य की ओर बढ़ते रहिए, कभी न कभी तो वह हाथ में आएगा ही।
- ***दु:ख से छूटने के लिये, मोक्ष प्राप्ति के लिए, और कोई मार्ग नहीं है।*** "न अन्य: पंथा:", दूसरा कोई रास्ता नहीं है। मार्ग एक ही है। यही मार्ग है। अब आप इसको सरल कहो या फिर कठिन कहो, लंबा कहो, या छोटा कहो। जो भी है, हमारे सामने ही है। ***चलना इसी पर है।*** इस पर हम चलने का प्रयत्न करेंगे, तो पहुँच जाएंगे।

38. शंका– शुभ कर्म निष्काम भावना से किस प्रकार किए जाते हैं? किराने का व्यापारी अपनी दुकानदारी निष्काम–भावना से किस प्रकार कर सकता है?

☯ ***समाधान***– उत्तर है:–

- ***जो कर्म 'भौतिक–सुख' की प्राप्ति के लिए किए जाते हैं, वे 'सकाम–कर्म' होते हैं।*** और जो कर्म 'मोक्ष–सुख' की प्राप्ति के लिए किए जाते हैं, वे 'निष्काम–कर्म' होते हैं।

- सवाल है कि किराने का व्यापारी अपनी दुकान पर जो सामान बेचता है, वो धन कमाने के लिए बेचता है, या मोक्ष प्राप्ति के लिए बेचता है? निःसंदेह धन की प्राप्ति के लिए। तो उसका यह सकाम–कर्म हुआ।
- सकाम कर्म 'कंडीशनल कर्म' हैं। मतलब, इतना रुपया दोगे, तो माल देंगे, इतना रेट नहीं दोगे, तो माल नहीं देंगे। आप इतनी फीस दोगे तो पढ़ाएंगे, नहीं दोगे तो नहीं पढ़ाएंगे, यह सकाम–कर्म है। हमारा उद्देश्य धन कमाना है, फीस लेना है। इस तरह अगर ट्यूशन फीस लेते हैं, तो वो सकाम–कर्म है।
- अगर फ्री में पढ़ाते हैं, तो निष्काम–कर्म हैं। हम क्यों फ्री में पढ़ा रहें हैं, क्योंकि हमको मोक्ष चाहिए, धन की चिंता नहीं है। जीने के लिए भगवान दो रोटी देता है, यही बहुत है। अब तक जीवन जी लिया, आगे भी जी लेंगे। भगवान खूब दे रहा है, आगे भी दे देगा। धन के लिए काम नहीं करना है, सम्मान के लिए काम नहीं करना है, भौतिक सुख के लिए काम नहीं करना है। ***अगर मोक्ष की प्राप्ति के लिए काम कर रहे हैं तो यह 'निष्काम–कर्म' है।***
- इसलिए व्यापारी आदि जो लोग हैं, वे तो सकाम–कर्म ही कर पाएंगे, निष्काम–कर्म तो नहीं कर पाएंगे। ऐसा तो नहीं कर पाएंगे कि सामान रखा है, जिसको लेना है, ले जाओ। जितना धन रखना है, रख जाओ। ऐसे तो दुकान नहीं चल पाएगी।
- ***व्यापार आदि में निष्काम–कर्म करना कठिन है।*** हाँ, विद्या पढ़ाने में निष्काम–कर्म हो सकता है। विद्या पढ़ाने में कोई हिम्मत वाला ऐसा हो कि कहे –''अच्छा भई, आओ बैठो, पढ़ाएंगे। जिसको कुछ देना हो, तो दे देना, नहीं देना हो, तो मत देना, कोई कंडीशन नहीं है, कोई फीस नहीं है।'' उसमें तो चल सकता है।
- अगली बात–व्यापारी ने पैसे कमा लिए सौ रुपये। उसमें से तीस–चालीस रुपए खा–पी लिए, खर्च कर लिए, तीस–चालीस रुपए भविष्य के लिए जमा कर दिए। अब दस–बीस रुपए बच गए, इन्हें वह दान दे दे। इस प्रकार दिया गया दान भी निष्काम–कर्म हो सकता है।

- पूछा है कि गृहस्थ व्यक्ति निष्काम–कर्म कैसे करे? वो इस तरह से कर सकता है। ***कमाने के बाद जो पैसा दान में देगा, वो सकाम और निष्काम दोनों हो सकता है।*** यदि वो विद्यालय के लिए दान देते समय कहता है – ''साहब ! मेरे नाम का पत्थर लगाओ। यहाँ लिखो कि मैंने सवा लाख रुपये दान दिया।'' तो वह सकाम–कर्म हो जाएगा। और अगर वह कहता है–'' मेरा नाम नहीं लेना, बताना भी नहीं, बोलना भी नहीं, लिखना भी नहीं, कुछ नहीं, चुपचाप गुप्तदान''। तो वह निष्काम–कर्म हो जाएगा।

  एक मजे की बात बताऊँ – एक व्यक्ति की दोनों तरह की स्थिति थी। मतलब कुछ सकाम, कुछ निष्काम। गुरुजी ने उपदेश दिया – ''भई निष्काम–कर्म करो, मोक्ष में जाएंगे।'' यह सुनकर उसने सौ रुपये दान दिया और पर्ची लिखवा दी, गुप्तदान। एनाउंसमेंट होने लगी। माइक पर आवाज आई, सौ रुपये गुप्तदान आया है। जिसने सौ रूपये दिये थे, वो पीछे बैठा था। उसने अपने पड़ोसी से कहा – ''तुम्हें पता है, यह सौ रुपये गुप्तदान किसका है? यह मेरा गुप्तदान है।'' इस तरह वो बताना भी चाहता है और गुप्त भी रखना चाहता है। ये बात मिश्रित (मिक्सड) है, न तो पूरी तरह सकाम और न ही निष्काम।
- ***निष्काम–कर्म का अर्थ यह बिल्कुल भी नहीं है कि, 'जिस कर्म को करने के पीछे कुछ भी कामना न हो।'*** कुछ न कुछ कामना तो मन में रहेगी ही। दरअसल, दुनिया में सर्वथा–निष्काम कोई भी नहीं हो सकता। मतलब, ऐसा कोई कर्म हो ही नहीं सकता, और कोई व्यक्ति ऐसा कर्म कर ही नहीं सकता कि जिस कर्म के पीछे मन में कोई भी कामना न हो। वस्तुतः कोई न कोई कामना तो जरूर होगी। ***व्यक्ति को दो में से एक तो चाहिए, या तो मोक्ष चाहिए, या संसार का सुख चाहिए।***
- अगर कोई व्यक्ति यह चाहता है कि मैं कुछ भी कामना न करूँ। फिर तो वो काम ही नहीं करेगा। जब इच्छा ही नहीं है, तो काम क्यों करेंगे? सुबह बिस्तर पर पड़े रहेंगे, उठेंगे ही नहीं। व्यक्ति सुबह

उठता है, फिर नहाता–धोता है, रोजमर्रा के सारे काम करता है, फिर देश की सेवा करता है, धर्म करता है, प्रचार करता है, व्यापार करता है, लेन–देन करता है। इच्छा चाहे भौतिक–सुख की हो, चाहे मोक्ष–सुख की हो, लेकिन कोई न कोई इच्छा मन में जरूर होगी।

- महर्षि मनु जी कहते हैं कि – ***यह 'आँख झपकाना' भी बिना इच्छा के संभव नहीं है।*** इतना सामान्य सा कार्य है, जब यह भी बिना इच्छा के नहीं होता, तब अन्य कार्यों (यज्ञ करना, दान देना, व्यापार करना आदि कर्मों) में पूर्ण–निष्कामता (इच्छाहीनता) कैसे संभव है?
- ***यदि केवल मोक्ष की इच्छा से आपने अच्छे कर्म किए हैं तो वे ही 'निष्काम कर्म' की श्रेणी में आएंगे।*** मोक्ष वाले कर्म न तो बुरे होते हैं और न मिश्रित। वे तो केवल शुद्ध ही होते हैं, शुभ कर्म ही होते हैं।
- ***भौतिक सुख की इच्छा से, चाहे आपने अच्छे कर्म किए, चाहे बुरे किए, चाहे मिश्रित किए; तीनों प्रकार के कर्म सकाम–कर्म कहलाएंगे।*** इस तरह सकाम कर्म तीन प्रकार के यानी अच्छे, बुरे और मिश्रित होते हैं।

अतः टोटल चार तरह के कर्म हुए, एक तो निष्काम कर्म, जो शुद्ध, शुभ कर्म, अच्छे कर्म होते हैं और तीन प्रकार के सकाम कर्म, जो शुभ, अशुभ और मिश्रित होते हैं।

39. शंका– मोक्ष की इच्छा एक कामना है, 'मोक्ष की कामना' से किया हुआ निष्काम–कर्म सकाम हो सकता है?

☯ ***समाधान***– पूछना शायद ऐसा चाहते हैं कि मोक्ष की कामना भी तो एक कामना है? यदि मोक्ष की कामना से कर्म किया गया, तो फिर वह निष्काम–कर्म कैसे हुआ? कामना तो उसमें भी है। उत्तर है:–

- महर्षि दयानंद जी ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में परिभाषा लिखी है कि – ***''परमेश्वर प्राप्ति या मोक्ष प्राप्ति को लक्ष्य बनाकर जो कर्म किए जाते हैं, उसका नाम ही निष्काम कर्म है।''***

- बिना कामना के तो कर्म हो ही नहीं सकता, वह असंभव है। व्यक्ति जो भी क्रिया करता है, वो कामनापूर्ण ही होती है। यह बात 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखी है। कामना तो जरूर है।
- कामनाओं में अंतर है। अगर लौकिक–सुख की कामना से किया तो वह सकाम–कर्म है और मोक्ष सुख की कामना से कर्म किया तो निष्काम–कर्म है। ऐसा जानना चाहिए।

40. शंका– क्या कार्य में 'भावना' महत्वपूर्ण होती है, इससे 'फल' में अंतर आता है?

☯ ***समाधान***– जी हाँ। दो व्यक्ति आपको एक जैसी क्रिया करते हुए दिखाई देंगे, लेकिन दोनों को फल एक जैसा नहीं मिलेगा, फल अलग–अलग होगा। बाह्य–क्रिया एक जैसी होगी, पर फल में अंतर होगा क्योंकि उनकी भावना में अंतर है।

एक सैनिक ने शत्रु देश के सैनिक को मार डाला और एक नागरिक ने दूसरे नागरिक को मार डाला। हत्या दोनों ने की। बाह्य–क्रिया दोनों घटनाओं में एक जैसी है। लेकिन क्या फल दोनों को एक जैसा मिलेगा? नहीं, अलग–अलग मिलेगा। सैनिक को ईनाम मिलेगा और नागरिक को दंड मिलेगा। दोनों में भावना का अंतर है। सैनिक की भावना है–देश की रक्षा करना और नागरिक की भावना है–अपने स्वार्थ के लिए मारना।

कर्म का फल केवल आपकी क्रिया पर ही आधारित नहीं है। ***क्रिया के साथ 'भावना' भी जुड़ती है, तब फल का निर्धारण होता है।***

बाह्य–क्रिया एक जैसी होने पर भी अगर भावना में अंतर है, तो फल में अंतर आ ही जाएगा। सकाम–भावना से करोगे तो भिन्न फल होगा और निष्काम–भावना से करोगे तो भिन्न फल होगा। अक्षरधाम में जो घटना हुई उसमें क्या हुआ? सैनिकों ने आतंकवादियों को मार डाला। शत्रुओं (आतंकवादियों) को मारना, यह देश की रक्षा का काम है। इसमें निःसंदेह सैनिकों को पुण्य मिलेगा। नियम है कि– बड़े से बड़ा काम भी अगर बुरे लक्ष्य के लिए किया जाए, तो ससांर उसे कोई महत्त्व नहीं देता है।

41. शंका– अन्यायपूर्वक मिले दु:ख या हानि की ईश्वर क्षतिपूर्ति करता है। जैसे सेठ के यहाँ चोर ने चोरी की, इस अन्याय की क्षतिपूर्ति ईश्वर सेठ को किस प्रकार करेगा?

☯ **समाधान**– भगवान कैसे पूर्ति करेगा, कहाँ करेगा, कब करेगा, वो हम नहीं जानते। यह बात हमारी समझ में नहीं आई।

- **कर्मफल तो इतना विचित्र है कि इसको कोई भी मनुष्य पूरा–पूरा नहीं जान सकता। व्यक्ति उसे बहुत मोटा–मोटा ही जान सकता है।**

ईश्वर की कर्म–फल व्यवस्था, 'न्याय–व्यवस्था' बड़ा विस्तृत और जटिल विषय है, सूक्ष्म विषय है। बड़े–बड़े ऋषि–मुनियों ने इस विषय पर बहुत चिन्तन किया, बहुत मनन किया और कुछ बातें जो उनको समझ में आई, वो उन्होंने बताई। फिर आगे चलकर के उन्होंने भी हाथ खड़े कर दिये कि– ''भई अपने बस का नहीं है, यह बहुत कठिन है। इसको कोई भी नहीं समझ सकता।''

- इतना जरूर निश्चित है कि जो भी क्षति हुई, जो भी नुकसान हुआ, उसकी पूर्ति तो मिलेगी, इसमें कोई शंका नहीं है। इस बात को एक उदाहरण से समझेंगे:–

एक सेठ के यहाँ चोरी हुई। पुलिस पीछे लग गई। चोर पकड़ा गया और चोरी में जो सामान गया था, वह सामान भी मिल गया। अब न्याय करना है, तो दो पात्र हैं हमारे सामने, एक तो सेठ और एक चोर। सेठ के यहाँ चोरी हुई, चोर ने चोरी की। अब दोनों के साथ न्यायाधीश कुछ न कुछ व्यवहार करेगा। चोर को तो न्यायाधीश जेल में डाल देगा। और जो चोरी का माल बरामद हुआ था, वो माल सेठ साहब को वापस मिलेगा। तभी तो इसे न्याय कहेंगे। यह जिम्मेदारी सरकार की और न्यायाधीश की है। अगर चोरी का माल सरकारी खजाने में चला जाए, तो सेठ कहेगा– ''साहब, मेरे साथ तो न्याय नहीं हुआ। मेरी तो संपत्ति व्यर्थ में चली गई।''

- भगवान तो पूर्ण न्यायकारी है। आप भी ईश्वर को न्यायकारी मानते हैं न। तो आपकी जो क्षति हुई, वो ईश्वर पूरी नहीं करेगा

क्या? न्याय का नियम है कि जो क्षति हुई, उसकी पूर्ति तो मिलनी ही चाहिए। तभी तो न्याय होगा। नहीं तो फिर, अंधेर नगरी चौपट राजा। न्याय तो तभी होता है कि जो सामान चुराया गया है, वह वापस मिले। **ईश्वर भी न्यायकारी है, जिसका जो भी नुकसान हुआ, ईश्वर उसकी पूर्ति करेगा।** कब करेगा, कहाँ करेगा, कैसे करेगा, यह वही जाने, यह हम नहीं जानते।

42. शंका– हम पर जो अन्याय हुआ, किसी की भी वजह से हमको जो नुकसान उठाना पड़ा, तो जो हमारा नुकसान हुआ, उसका क्या हुआ?

☯ **समाधान**– उत्तर है:–

- जिसने हम पर अन्याय किया, चाहे माता की भूल से हुआ, चाहे पिता की भूल से हुआ, चाहे गुरु, आचार्य, टीचर, पड़ोसी कोई भी, चोर–डाकू आदि ने जितना दु:ख हमको दिया, उतना उसका अपराध है। उस अपराध का उसको दंड मिलेगा।

- अन्याय का दण्ड चाहे समाज दे, राजा दे, सरकार दे, ईश्वर दे, जो भी दे, कोई न कोई उसको दंड देगा। **अपराध का दंड समाज ने नहीं दिया, राजा ने नहीं दिया तो अंत में ईश्वर जरूर देगा।** वो नहीं छोड़ने वाला। हम किसी पर अन्याय करेंगे तो ईश्वर हमको दंड देगा। कोई दूसरा हम पर अन्याय करेगा तो ईश्वर उसको दंड देगा। **अन्यायकारी को दंड मिलेगा।**

- दूसरी बात, जिस पर अन्याय हुआ, जिसका नुकसान हुआ, उसको कम्पन्सेशन (क्षतिपूर्ति) मिलेगा। उसके नुकसान की पूर्ति ईश्वर कर देगा। **सरकार न्याय कर सकती है तो ठीक है, नहीं कर सकती, तो अंत में ईश्वर करेगा।** इस प्रकार कम्पन्सेशन की गारंटी तो है, लेकिन वो भी पूरी सुरक्षा तो नहीं है न। एक बार तो मार खानी पड़ी न।

- पूरी तरह से सुरक्षा केवल मोक्ष में है। वहाँ पर कोई व्यक्ति हम पर आक्रमण कर ही नहीं सकता। अगर आपको ऐसा ठीक समझ

में आता हो कि कोई हमारा नुकसान कर ही नहीं पाए तो फिर 'मोक्ष' की तैयारी करो।

- मेरी समझ में खूब अच्छी तरह आ गया है कि यहाँ संसार में कहीं भी पूरी सुरक्षा नहीं है। इसलिए मैं तो मोक्ष में जा रहा हूँ। आपको आना है तो आ जाओ। साथ–साथ करो तैयारी, पीछे–पीछे आप भी चले आओ।
- मैं अकेला मोक्ष में नहीं जाना चाहता। जो अकेला मोक्ष में जाना चाहता है, वह स्वार्थी है। ऐसे स्वार्थी व्यक्ति को ईश्वर मोक्ष देता भी नहीं। मोक्ष प्राप्ति के लिए निःस्वार्थ भाव से परोपकार करना चाहिए। इसीलिए मैं परोपकार करता हूँ, और आप जैसे अनेक लोगों को मोक्ष में ले जाना चाहता हूँ। आप भी तैयारी करें।

43. *शंका– पुर्नजन्म के सिद्धान्तों के व्यावहारिक–प्रमाण क्या हैं?*

☯ ***समाधान***– बहुत छोटे–छोटे तीन प्रश्नों का आपको उत्तर देना है।

- ***पहला प्रश्न***– न्याय किसे कहते है? कर्म पहले किया जाए और फल बाद में दिया जाए, यह न्याय है, या फल पहले दिया जाए और कर्म बाद में किया जाए, यह न्याय है?

पहला उत्तर जो आपने दिया अर्थात् ***न्याय है – कर्म पहले, फल बाद में।*** आप अपना यह उत्तर याद रखिएगा।

- ***दूसरी बात***–आपको इस समय जो मनुष्य शरीर मिला है, जिस शरीर में आप–हम बैठें है, यह कर्मों का फल मिला है या मुफ्त में मिला है?

आपने बोला–***''मनुष्य शरीर मिलना कर्मों का फल है।''*** चलिए, आपके दो उत्तर हो गए। ये दोनों उत्तर आपके बिल्कुल सही हैं। इन दोनों को याद रखिएगा।

- इन दो बातों के आधार पर एक ***तीसरा प्रश्न*** और है, इसका उत्तर और सोचिए। अब तीसरी प्रश्न यह है कि,

जिन कर्मों का फल आपको यह शरीर मिला है, वो कर्म आपने इस जन्म में तो नहीं किए, तो फिर कब किये थे?

आपने बोला–***पिछले जन्म में।*** और फल मिला अब, इस जन्म में। तो इससे पुर्नजन्म सिद्ध हो गया कि नहीं हो गया? यह व्यावहारिक प्रमाण है। इससे बड़ा और क्या प्रमाण चाहिए। आपने तीन बातें स्वयं अपने मुँह से बोली। मैंने तो एक भी नहीं बोली, मैंने तो सिर्फ प्रश्न किए, उत्तर आपने दिए। ***तीन बातों में सारी बात सुलझ गई कि, पुर्नजन्म होता है।***

यहाँ पर एक व्यक्ति ने प्रश्न किया– कुछ बच्चे अपने पूर्वजन्म की बातें बताते हैं। क्या वह सही है? मेरा उत्तर– आपने पूछा कि 'कुछ बच्चे बताते हैं कि पिछले जन्म में मैं जयपुर में था, आदर्श नगर में था, 41 नंबर के मकान में था।' यह एक अलग प्रश्न है। पुर्नजन्म होता है, यह तो सिद्व हो चुका।

अब रही बात यह कि – पिछले जन्म की बात याद आती है, या नहीं? इस विषय में 'सत्यार्थ प्रकाश' के नौंवे समुल्लास में लिखा है कि ***''कोई पिछले जन्म की बात याद करना भी चाहे, तो भी नहीं कर सकता।''*** सत्यार्थ प्रकाश में इतना भी साफ लिखा है कि, यह भगवान की बड़ी अच्छी व्यवस्था है कि हम पिछले जन्म की बातें भूल जाते हैं, इसलिए जी रहे हैं।

एक ही जन्म में आदमी इतना परेशान है कि वह दुःखी होकर आत्महत्या कर लेता है। और अगर व्यक्ति को पिछले 10–20 जन्मों के दुःख और याद आ जाएं, तो बताओ वो कैसे जिएगा? वह तो पिछले जन्म के दुःखों को देख–देख के वैसे ही मर जाएगा।

जापान में एक व्यक्ति ने एक पुस्तक लिखी – "हाउ टू सुसाइड ईज़िली" अर्थात् ''आसानी से आत्महत्या कैसे करें।'' उस लेखक से पूछा गया – ''क्या आप जनता को आत्महत्या की प्रेरणा देना चाहते हैं?'' लेखक ने उत्तर दिया – ''मेरे पड़ोस में एक व्यक्ति अपने जीवन से दुःखी हो गया। उसको अपनी समस्याओं का कोई समाधान नहीं सूझा। अन्त में उसने सोचा, ऐसे जीवन से तो मृत्यु अच्छी। यह सोचकर उसने आत्महत्या कर ली। पड़ोस का मामला

था। सूचना मिलने पर मैं उसके घर गया। उसकी लाश देखी। बेचारे की 12 घण्टे तक जान ही नहीं निकली। क्योंकि बहुत गलत तरीके से उसने मरने की कोशिश की थी। उसे पता नहीं था कि इस तरीके से मरने पर उसे 12 घण्टे तक तड़पना पड़ेगा। बेचारे को मरने में बहुत कष्ट भोगना पड़ा।''

थोड़ा रुक कर वह बोला – ''कुछ दिनों बाद एक और पड़ोसी ने आत्महत्या की। वह भी 10 घण्टे तक तड़पा। ऐसे कुछ–कुछ दिनों बाद मुझे 15–20 घटनाओं को देखने का अवसर मिला। सभी मरने वाले घण्टों तक मरने से पहले तड़पते रहे। उन घटनाओं को देखने से मेरे मन में यह पुस्तक लिखने का विचार आया। इस पुस्तक को लिखने का मेरा उद्देश्य यह नहीं है कि लोग मेरी पुस्तक पढ़कर आत्महत्या करें। बल्कि मैंने यह पुस्तक उन लोगों के लिए लिखी है, जिन्हें अपनी समस्याओं का कोई समाधान नहीं मिलता। जो मरने का अन्तिम निर्णय कर चुके हैं। उन लोगों को मैं कहना चाहता हूँ कि यदि उन्हें मरना ही है, तो वे आसानी से मरें। तड़प–तड़पकर, कष्ट भोग कर न मरें।''

इसलिए मैं कहता हूँ कि पिछले जन्मों को याद न करें, तो अच्छा है। अन्यथा लोग या तो आत्महत्या करेंगे या दूसरों को मारेंगे।

44. शंका– क्या व्यक्ति को बुरे कर्म करने के पश्चात अन्य सभी योनियों को भोगना पड़ेगा अथवा कुछ योनियों के पश्चात् वापस मानव जन्म मिलेगा?

☯ **समाधान**– उत्तर है:–

- एक व्यक्ति ने 20 हजार रुपए की चोरी की, दूसरे व्यक्ति ने दो अरब रुपये की चोरी की। ***वस्तुत: चोरी दोनों ने की, इसलिए दोनों अपराधी हैं। नि:संदेह दोनों को दण्ड मिलेगा।***
- क्या दण्ड की मात्रा दोनों की समान रहेगी, या कम–अधिक? दण्ड की मात्रा कम–अधिक होगी। यदि दोनों को बराबर दण्ड दिया जाए, तो यह न्याय थोड़े ही होगा, यह तो अन्याय होगा।

एक ने अपराध थोड़ा किया, तो उसको थोड़ा दण्ड। एक ने अपेक्षाकृत अधिक अपराध किया, तो उसको अधिक दण्ड, यह न्याय है।

किसी ने 20 हजार पाप किए तो किसी ने 50 हजार। उन दोनों को ही 84 लाख योनियों में डाल दें, तो फिर यह न्याय कहाँ होगा? जिसने जितना अपराध किया, उतनी ही योनियों में जाएगा, दण्ड भोगेगा, धक्का खाएगा और लौटकर वापस मनुष्य बनेगा।

- ***जिसने थोड़ा अपराध किया, वह थोड़ी योनियों में धक्का खाएगा। जिसने ज्यादा अपराध किए, वो ज्यादा योनियों में जाएगा।***
- बताते हैं कि चौरासी लाख योनियाँ हैं, पता नहीं कहाँ–कहाँ नम्बर लगेगा। कई लोग समझते हैं कि एक बार मनुष्य मर गया तो पूरे चौरासी लाख का चक्कर काटकर फिर नंबर आएगा इंसान रूप में। यह गलत है। क्यों गलत है? इसे जानते हैं:–

क्या सब लोग बराबर मात्रा में पाप करते हैं? नहीं न। तो सब को बराबर दंड क्यों मिलेगा? ***जब पाप कम–अधिक करते हैं, तो फल भी कम–अधिक होना चाहिए।*** अगर एक मरा वो भी चौरासी लाख योनियों में डाल दिया, दूसरा मरा, वो भी चौरासी लाख योनियों में, तो यह न्याय नहीं है। जिसने जितने कर्म किए हैं, उसको उतना दंड मिलेगा। जिसने बीस प्रतिशत पाप अधिक किए,उसको उतने कर्मों का दंड भोगने के लिए दस–बीच, पच्चीस–पचास योनियों में चक्कर काटना पड़ेगा। इसलिए सब को 84 लाख योनियों में नहीं जाना। वो कितनी योनियों में चक्कर काटेगा, वो भगवान जाने, हम नहीं जानते।

45. शंका– क्या योनियों की संख्या 84 लाख है?

☯ **समाधान**– इसका कोई शास्त्रीय प्रमाण तो मेरी जानकारी में नहीं है। मैंने सब शास्त्र नहीं पढ़े। कहीं शास्त्रों में लिखा हो भी सकता है। परम्परा से तो यही सुनते आ रहे हैं। लेकिन पक्का नहीं कह सकते कि – 84 लाख हैं, या 80 लाख हैं। जितनी भी हों,

फिर भी *'लाखों योनियाँ हैं'*, ऐसा मानने में तो कोई दोष प्रतीत नहीं होता।

46. शंका– जीवन में घटने वाली प्रत्येक घटना क्या निश्चित होती है? पूर्वजन्म के कर्म फलित होते हैं, ऐसा कहते हैं? कृपया मार्गदर्शन कीजिए?

☯ *समाधान–* उत्तर है:–

- देखिए, जीवन में घटने वाली प्रत्येक घटना निश्चित नहीं होती। ***हमारे जीवन में जो–जो घटनाएं घटती जा रही हैं, वो पहले से निश्चित नहीं हैं।***
- कभी भी, कुछ भी, घटित हो सकता है। अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है। पॉजीटिव भी हो सकता है, नेगेटिव भी हो सकता है। हमें सुख भी मिल सकता है, दुःख भी मिल सकता है। सारे जीवन में सुख ही सुख नहीं मिलते। कुछ दुःख भी मिलते हैं। हम दुःख नहीं भोगना चाहते हैं। फिर भी दुःख आ जाते हैं, और भोगने पड़ते हैं।
- बहुत सारे दुःख ऐसे होते हैं, जो हमारे कर्मों के फल नहीं होते, फिर भी भोगने पड़ते हैं। पूर्वजन्म के कर्मों का फल कब और कैसे मिलता है, इस बारे में बहुत भ्रांति है।
- ***कितने ही सुख–दुःख ऐसे होते हैं, जो पूर्वजन्म के कर्मों का फल नहीं हैं। और उन सुख– दुःख को लोग पूर्वजन्म का कर्म–फल मान लेते हैं।***

कल्पना कीजिए कि एक सेठ के यहाँ चोरी कर, दो लाख रुपये की संपत्ति चोर ले गए। सेठ ने सब सुरक्षा भी की थी, उसके बावजूद चोर आए, उन्होंने सब ताले तोड़ दिए, वे सब सामान ले गए। इस पर लोगों ने कहा कि – ''इस सेठ ने पिछले जन्म में किसी का माल खाया होगा, दो लाख किसी का हड़प गए होंगे। अब इसको पिछले जन्मों के कर्मों का फल मिला है, इसके यहाँ चोरी हो गई।''

दरअसल, यह सोचना सही नहीं है। वास्तव में सेठ के यहाँ जो चोरी हुई, वो उसके पिछले कर्म का फल नहीं है। क्यों? अच्छा थोड़ी देर के लिए मान लेते हैं कि सेठ के यहाँ जो चोरी हुई, वो सेठ के पिछले जन्म के कर्म का फल है। ***कर्म–फल के कुछ मोटे–मोटे नियम हैं।*** उन नियमों को जानते हैं। उदाहरण के लिए,

(1) **पहली बात–** न्याय करने के लिए **पहली शर्त** यह है कि जज साहब को पूरा मामला पता होना चाहिए। कर्म का पता होना चाहिए, अपराध का पता होना चाहिए। जो व्यक्ति कर्म का फल देता है, न्यायाधीश बनता है, तो यह आवश्यक है, कि ***वो कर्म को जानता हो, तभी तो वो ठीक फल दे सकता है।***

क्या न्यायाधीश बिना कर्म को जाने ही ठीक फल दे सकता है? नहीं। तो इसलिए कर्म को जानना आवश्यक है। जब तक कर्म को नहीं जानेगा, जब तक मुकदमा नहीं सुनेगा, तो ठीक से न्याय कैसे करेगा? कौन अपराधी है, उसने अपराध कैसे किया, कब किया, कहाँ किया, कितना किया, वो सब प्रमाण (एवीडेन्स) होना चाहिए। न्यायाधीश जब तक ये सारी बातें नहीं जान लेगा, तब तक क्या वह ठीक–ठीक न्याय कर सकेगा? नहीं कर सकता।

(2) ***दूसरी बात–*** जितना अपराध हुआ, उसका दण्ड कितना दिया जाए। पेनल कोड (दण्ड संहिता) में क्या लिखा है? इतने अपराध का इतना दण्ड दो। ***जज साहब को दण्ड संहिता का भी पता होना चाहिए।*** अगर दण्ड का पता नहीं कि कितना दण्ड हो, तो भी वो न्याय नहीं कर पाएंगे। कर्म–फल के अनुसार ठीक–ठीक न्याय करने का दूसरा नियम यह हुआ।

(3) ***तीसरी बात–*** क्या प्रत्येक व्यक्ति को दंड देने का अधिकार है? नहीं। ***निश्चित व्यक्तियों को दंड देने का अधिकार है, सबको नहीं, और वो ही कर्म का फल दे सकते हैं।*** न्यायाधीश महोदय को दण्ड देने का अधिकार दिया गया है। सड़क पर चलता हुआ व्यक्ति अपराधी को दण्ड नहीं दे सकता। वो ही अपराधी को दण्ड देंगे, जिनको अपराधी को दण्ड देने का अधिकार है।

चोर वाली घटना पर इन तीन नियमों को लागू कीजिए। चोरों ने सेठ के यहाँ चोरी की, दो लाख की संपत्ति ले गए। यह सेठ के पिछले जन्म के कर्मों का फल है, ऐसा मानते हैं, तो ये तीनों नियम वहाँ लागू करके देखिए।

क्या चोरों को पता है कि पिछले जन्म में सेठ ने कौन सा अपराध किया था, कितना बुरा किया, जिसका फल हम उन्हें देने के लिए आए हैं। जब चोर को सेठ के कर्म का ही पता नहीं, तो बताइए, कर्म–फल कहाँ लागू हुआ?

दंड का भी चोर को नहीं पता। वो कैसे निर्णय करेगा कि दो लाख की चोरी करूँ कि तीन लाख की या ढाई लाख की चोरी करूँ। कितना दंड दूँ, उसको क्या मालूम। ***सेठ साहब ने कौन सा अपराध किया था, उसका चोर को पता नहीं, कितना किया था, यह पता नहीं, कितना दंड दूँ, वो भी नहीं पता।*** चोरों को नहीं मालूम कि सेठ ने कौन सा अपराध किया था, तो वो फल कैसे माना जाये? जब दण्ड का पता नहीं, तो न्याय नहीं हुआ, इसलिए वह 'कर्म–फल' नहीं हुआ।

और दूसरी बात यह कि, ***क्या चोरों को सेठ के पूर्व जन्म के कर्म का दंड देने का अधिकार है? उत्तर है–नहीं।*** इस प्रकार न्याय की कसौटी पर तीनों बातें फेल हो गईं।

(4) ***चौथी बात– जो कर्म का फल दिया जाता है, ठीक–ठीक न्याय से दिया जाता है, उसको चुपचाप भोगना पड़ता है, उसका विरोध नहीं कर सकते।***

किसी अपराधी ने अपराध किया, न्यायाधीश ने उसको दंड दिया कि तीन माह जेल में रहो। अब तो तीन माह उसको जेल में रहना ही पड़ेगा। चुपचाप उसको दंड तो भोगना ही पड़ेगा। उसका विरोध तो कोई कर ही नहीं सकता। यदि यह नियम आपको स्वीकार है तो चौथा नियम इस घटना पर लागू करते हैं–

चोरों ने सेठ के यहाँ दो लाख की चोरी की। इस पर कुछ लोगों ने कहा कि – ''यह तो सेठ के पिछले जन्म का कर्म–फल

है। इसलिए सेठ को चुपचाप दंड भोगना चाहिए, चोरी का विरोध नहीं करना चाहिए, पुलिस में रिपोर्ट नहीं करना चाहिए।''

यदि कर्म–फल मानते हैं, तो चुपचाप भोगो। पुलिस में रिपोर्ट करने जायेंगे, तो फिर कर्म–फल कहाँ हुआ? कर्म–फल का तो विरोध हो नहीं सकता, और आप तो चोरी का विरोध कर रहे हो। अगर कर्म–फल मानते हैं, तो पुलिस में नहीं जाना, कोर्ट में नहीं जाना, मुकदमा नहीं करना। कोई अपील नहीं करना कि, हमारे यहाँ चोरी हुई। आपका कर्म–फल है, शाँति से उसे भोगो।

(5) ***पाँचवी बात–*** एक न्यायाधीश महोदय ने एक आतंकवादी को फाँसी का दंड दिया–''इसको फाँसी पर चढ़ा दिया जाए। इसने बहुत सारे निर्दोष लोगों को मार डाला।'' तो जल्लाद ने उस आतंकवादी को फाँसी पर चढ़ा दिया। न्यायाधीश महोदय के आदेश का पालन करने पर जल्लाद को वेतन मिलेगा या दंड मिलेगा?

जल्लाद ने आदेश का पालन किया है, तो उसको वेतन मिलेगा, ईनाम मिलेगा। ऐसे ही चोर ने भी सेठ के यहाँ चोरी की, उसने भगवान के आदेश का पालन किया तो उसको ईनाम दिलवाओ। जो लोग कर्मफल मानते हैं, उनको चोर को ईनाम दिलवाना चाहिए, कोर्ट में मुकदमा नहीं करना चाहिए। अगर स्वीकार हो, तो आप मान सकते हैं कि यह कर्मफल है।

इस कानून से तो आप एक घंटा भी नहीं जी सकते। जो भी चोर चोरी करे, उसको ईनाम दिलवाओ। अपने–अपने नगर में अहमदाबाद में, उदयपुर में, जबलपुर में, मुम्बई में, दिल्ली में एक घंटे के लिए यह नियम लागू कर दो कि जो भी चोर चोरी करेगा, उसको ईनाम मिलेगा, फिर देखो क्या होता है। आपका जीना मुश्किल हो जायेगा। इसलिए यह बात सत्य नहीं है।

हमें जो सुख–दुःख मिलता है, उसके दो भाग हैंः–

(एक) व्यक्ति के अपने कर्मों का फल है। और

(दूसरा) अन्यों के कारण से भी हमको बिना हमारे दोष (गलती) के दुःख मिलता है।

अगर पूरा का पूरा हमारे ही कर्मों का फल मान लिया जाए, तो अपराधी तो दुनिया में कोई भी नहीं है। तो फिर किसी पर कोर्ट केस क्यों?

किसी सेठ के यहाँ पर चोरी हुई, और उसे यह माना जाए कि सेठ के किसी पूर्वजन्म का दोष होगा। फिर चोर के ऊपर मुकदमा क्यों? उसने तो कर्म का फल दिया। उसको तो वैसे वेतन दो, जैसे न्यायाधीश को दिलवाते हैं। नहीं दिलाएंगे।

सेठ के यहाँ चोरी हुई, यह उसका कर्म–फल नहीं है, तो फिर वह क्या है? इसका नाम है – 'अन्याय'। सेठ के साथ अन्याय हुआ। उसने मेहनत से धन कमाया, अपने धन की सुरक्षा भी की। तब भी चोर लोग ताला तोड़कर सामान ले गए। यह सरासर अन्याय है। इससे सिद्ध हुआ कि, जितने भी जीवन में सुख–दुःख मिलते हैं, वो सब के सब हमारे कर्मों का फल नहीं होते हैं। कुछ कर्मों का फल है, और कुछ अन्याय से भी हमें मिलता है।

अन्याय किसको कहते हैं? ***बिना कर्म किए दुःख देना, अथवा किए गए कर्म के अनुसार फल नहीं देना, कर्म से अधिक फल दे देना, या कम फल देना, उसका नाम अन्याय है और कर्म के अनुसार फल दे देना, वो न्याय है।***

थोड़े दूसरे शब्दों में और खोल देते हैं किः–

बिना अपराध के, बिना दोष के, किसी को दुःख दे देना अथवा सुख दे देना, भी अन्याय है।

दुःख वाला उदाहरण पकड़कर चलते हैं। बिना अपराध के किसी को दुःख दे देना, अन्याय है। और अपराध करने पर उसके अपराध के अनुसार उसको दंड देना, यह न्याय है।

क्या आप लोग मानते हैं कि, संसार में अन्याय होता है? होता है। इसका अर्थ ये हुआ कि, ***कुछ घटनाएं संसार में ऐसी भी हैं, जिनमें निर्दोष व्यक्तियों को दुःख दिया जाता है। अगर आप***

यह मानते हैं कि अन्याय होता है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि, बिना दोष के भी दुःख मिलता है। वो ही तो अन्याय है।

चोरों ने सेठ के यहाँ जो दो लाख रुपये की चोरी की, यह था– अन्याय। सेठ निर्दोष था। उसका कोई दोष नहीं था। फिर भी चोरों ने सेठ के यहाँ चोरी करके सेठ को दुःख दिया। इसका नाम अन्याय है। यह पिछला कर्म–फल नहीं है।

अब इसका विश्लेषण करने के लिए किसी भी घटना को देखिए। उसका अच्छी तरह से परीक्षण कीजिए और यह विचार कीजिए कि, यह जो किसी व्यक्ति को दुःख मिला, वह न्याय से मिला, या अन्याय से मिला? अगर पता चले कि, न्याय से मिला, तब तो वह है कर्म फल। कारण कि, "जो न्याय से सुख–दुःख मिलता है, वो तो कर्म–फल होता है।" और जो अन्याय से मिलता है, वो कर्म–फल नहीं होता है। सेठ के यहाँ चोरी हुई, दो लाख का सामान चोर ले गए। क्या यह न्याय हुआ? नहीं हुआ न। तो समझ लेना, यह सेठ का कर्म–फल नहीं है।

न्याय के विरुद्ध अपील (केस) नहीं होती है। न्याय को तो स्वीकार करना पड़ता है। जब अन्याय होता है, तो उसके विरुद्ध अपील होती है, जैसे चोर के विरुद्ध कोर्ट में अपील होती है। सेठ जी पुलिस में शिकायत करते हैं, कोर्ट में केस करते हैं कि हमारे यहाँ चोरी हुई, हमारा माल वापस दिलाओ। तो जब अपील करते हैं, मतलब वो अन्याय हुआ।

कर्म–फल के कुछ नियम हैं। उन नियमों को समझ लेंगे, तो आप बहुत सी घटनाओं में इस बात का निर्णय कर लेंगे कि यह कर्म–फल हुआ, या अन्याय हुआ।

इस एक उदाहरण से आप बीस बातें समझ लीजिएगा। रेल में जा रहे हैं, दुर्घटना हो गई, पाँच लोग मर गए, बीस लोग घायल हो गए, शेष ठीक–ठाक बच गए। यहाँ लोग कहेंगे– ''जो पाँच मर गए, इनकी मौत यहीं लिखी थी। यह इनका कर्म–फल था।'' यह बिल्कुल झूठ बात है, बिल्कुल गलत बात है। इसका भी यही

उत्तर है, जो सेठ की चोरी वाला है। अगर पाँच की मौत यहीं लिखी थी, तो किसने लिखी थी? ईश्वर ने। क्या ईश्वर जो लिखता है, वो सही लिखता है, या गलत लिखता है? सही लिखता है, और वो कर्म–फल के अनुसार लिखता है। यह तो उनका कर्म–फल था, यहीं उनको मरना था, अगर यही मानते हैं तो रेल–इंजन के ड्राइवर को ईनाम दो। उसने भगवान के आदेश का पालन किया है। इनकी मौत आयी थी, इसलिए उसने इनको मार दिया। देंगे ईनाम? नहीं देंगे। जो चोर वाली घटना में उत्तर है, वही इस घटना का भी उत्तर है। चाहे वो ट्रक एक्सीडेंट हो, चाहे प्लेन एक्सीडेंट हो, कोई भी दुर्घटना हो।

किसी भी दुर्घटना में कोई भी व्यक्ति मर जाता है, घायल हो जाता है, वो पूर्व में किए गए कर्मों का फल नहीं है। ट्रक वाले ने शराब पीकर बेलगाम गाड़ी चलाई, ठोंक दिया। तो हाथ–पाँव टूट गए, व्यक्ति की मृत्यु हो गई, यह कर्म–फल नहीं है। यह अन्याय है। ऐसे ही सभी समस्याओं को आप सुलझा लेंगे।

यहाँ पर एक श्रोता ने पूछा कि – ''एक बच्चा पैदा होते ही चार घण्टे में मर गया तो क्या वह इतनी ही आयु लेकर आया था?'' तब मैंने इसका उत्तर दिया कि, यह कठिन (उलझा हुआ) प्रश्न है। इसका तो बहुत विश्लेषण करना पड़ेगा। डॉक्टर की भूल थी कि नहीं थी, इसका निर्णय करना बहुत कठिन है। बच्चे माता–पिता की भूल से भी मरते हैं, गलत दवाई से भी मरते हैं।

हमारी भूल हमें पकड़ में नहीं आती हैं। कैसे होती है भूल? एक रोगी आई.सी.यू. में था। कभी होश में आता था, तो कभी बेहोश हो जाता था। ऐसे–ऐसे झोले खा रहा था जीवन–मृत्यु के बीच में। बीच में राउण्ड पर डॉक्टर साहब आए, उन्होंने चेक किया और डिक्लेयर (घोषित) कर दिया कि ''सिस्टर ले जाओ, रोगी मर गया है।'' इतने में वो रोगी होश में आ गया। और उसने सुन भी लिया कि डॉक्टर साहब ने बोल दिया कि रोगी मर गया। इतने

में रोगी मरी–मरी सी आवाज में बोला – ''डॉक्टर साहब, मैं अभी मरा नहीं हूँ, जिन्दा हूँ।'' तो नर्स ने डाँटकर कहा–''चुप रहो, डॉक्टर को तुमसे ज्यादा मालूम है।'' अब बताइए, डॉक्टर को ज्यादा मालूम है या रोगी को?

तात्पर्य है कि, डॉक्टर भी मनुष्य है, परमात्मा नहीं है। उससे भी भूल हो सकती है, गलती हो जाती है। केमिस्ट की भूल हो सकती है। कभी एक्सपायरी डेट की दवा दे दी। और जो अनेक नियम पालन करने पड़ते हैं, उनमें भूल हो जाती है। गर्भावस्था में माता ने खाने–पीने में भूल कर दी, उठने–बैठने में भूल कर दी, झटका लग गया। छोटे बालक की मृत्यु के पता नहीं कितने कारण हो सकते हैं। वो व्यक्ति भूल जाता है कि हमने कहाँ गड़बड़ की। और कहता है कि – ''साहब मैंने भूल कहाँ की।'' जबकि वह की होती है उसने। कभी वह भूल छुपाने की कोशिश करता है। ऐसे बहुत सारे कारण होते हैं।

किसी भी घटना का विश्लेषण करते समय यह ध्यान देना है कि जो दु:ख मिल रहा है, वो न्याय से मिल रहा है, या अन्याय से। *कसौटी याद रखिए:–*

यदि न्याय से दु:ख मिल रहा है, तो कर्म–फल, और अन्याय से मिल रहा है तो कर्म–फल नहीं।

सेठ के यहाँ चोरी हुई, यह अन्याय से उसको दु:ख दिया। यह कर्म–फल नहीं है।

चोर पकड़ा गया, चोरी करने के बाद, उसको छह माह की जेल हुई या एक वर्ष की जेल हुई। यह क्या हुआ? यह न्याय हुआ। जो न्याय है, वो कर्म–फल है। जिसने चोरी की, उसको जेल हुई। दूसरे ने चोरी नहीं की, उसको जेल नहीं हुई।

चोरी की किसी और ने, लेकिन जेल में गया कोई दूसरा, तो इसे अन्याय कहेंगे।

ऐसे भी किस्से बहुत आते हैं। एक व्यक्ति ने किसी का खून कर दिया और वह बीस साल तक नहीं पकड़ा गया, खुला घूमता रहा। बीस साल बाद हत्या की एक और घटना हुई, और इस बार हत्या किसी दूसरे ने की, तथा यह निर्दोष होते हुए पकड़ा गया। न्यायाधीश ने उसको जेल कर दी कि यह हत्यारा है। इस पर लोगों ने कहा – ''इसको बीस साल पहले वाली घटना का दंड अब मिला है।'' यह बिल्कुल झूठ बात है।

पहले बीस साल वाली घटना में वो दोषी था, तब उसको कर्म का दंड नहीं मिला। जबकि दूसरी घटना में वह दोषी नहीं था। निर्दोष होने पर भी उसको दंड मिला, जबरदस्ती उसको जेल हो गई। दोनों जगह गलत हुआ। यह पिछली हत्या का दंड (कर्मफल) नहीं है। वो मामला अलग था, यह मामला अलग है। वहाँ मरने वाला कोई और था, यहाँ मरने वाला कोई और है। दो अलग–अलग केसेस हैं।

(6) ***छठा नियम– यदि कर्म करें, तो फल अवश्य मिलेगा।*** उसमें छूट–छाट कुछ नहीं। जो कर्म है, उस कर्म को देखिए। उस कर्म का फल देखिए। उस कर्म का फल से संबंध जोड़कर देखिए कि उस व्यक्ति को जो दंड मिल रहा है, वो उस कर्म से संबंधित है, या नहीं। यदि कर्म से संबंधित है, और ठीक न्याय से फल मिल रहा है, तब तो है वह कर्म–फल।

जो कर्मफल के नियम हैं, वो लागू कीजिएगा। अच्छे कर्म का कैसा फल – 'अच्छा फल'। और बुरे कर्म का कैसा फल – 'बुरा फल'। और कर्म ही नहीं करे तो? 'कोई फल नहीं'। अब इसने यहाँ दूसरी घटना में कर्म तो किया ही नहीं, तो फल किस बात का ?

(7) ***सातवाँ नियम– पहले कर्म, बाद में फल।*** उस खूनी व्यक्ति का कर्मफल दण्ड न दिया जाने से जमा हो गया। पुलिस ने उसको नहीं पकड़ा, प्रकरण अदालत नहीं पहुँचा, इसलिए उसको दंड नहीं मिला। अब या तो न्यायाधीश बीस साल पहले वाली फाइल खोले।

उसकी फिर से रिसर्च हो कि बीस साल पहले जो हत्या हुई थी, उसका हत्यारा कौन है? और ढूँढ–ढाँढ के उसी केस का दंड उसको दे, तब तो ठीक है। पर यहाँ तो, केस किसी और का चल रहा है, और दण्ड उसे मिल रहा है। उसका तो केस चल ही नहीं रहा है।

जिन घटनाओं का दंड यहाँ न्यायाधीश और सरकार ने नहीं दिया, नहीं दे पाए, पकड़ में नहीं आए, वो व्यक्ति के खाते में जमा रहेंगे। उनका फल ईश्वर अंत में देगा। इस प्रकार से न्याय–अन्याय को समझना चाहिए।

47. शंका– जीवात्मा भविष्य में जो विचार करेंगे, उसका ज्ञान ईश्वर को पहले से हो सकता है या नहीं?

☯ ***समाधान–***

- यह तो ईश्वर को पता है कि चुपचाप खाली तो कोई जीवात्मा बैठता नहीं, भविष्य में वह कुछ तो सोच–विचार करेगा।
- किस–किस तरह के विचार जीवात्मा कर सकते हैं, जीवात्माओं की घटिया से घटिया और बढ़िया से बढ़िया क्या–क्या थिंकिंग हो सकती है, वो पूरी सूची भगवान के पास में पहले से है।
- यह कभी नहीं हो सकता कि जीवात्मा ऐसा कोई विचार कर डाले, जिसे जानकर भगवान को बड़ा आश्चर्य हो कि – ''अच्छा ! जीवात्मा ऐसा भी सोच सकता है, यह तो आज ही पता चला।'' ऐसा कभी नहीं होगा कि जीवात्मा कोई ऐसा विचार या कार्य कर डाले, जो ईश्वर के लिए नया हो।
- ***जीवात्मा कुछ भी विचारे, उसकी 'ए टू जेड' पूरी लिस्ट भगवान के पास है।*** उसकी जानकारी में है, क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ है, गॉड इज ओम्नीशियैन्ट।
- अब खास समझने की बात यह है कि ***यह पहले से तयशुदा (प्री–डिसाइडेड) नहीं है कि कौन जीवात्मा, कब क्या सोचेगा ? इसलिए ईश्वर को यह पहले से पता नहीं।*** जीवात्मा जो कुछ भी सोचे, उसकी स्वतंत्रता है। पर वो जो भी सोचेगा, भगवान की लिस्ट में जरूर है। वह उससे बाहर नहीं सोच सकता। जीवात्मा की पूरी क्षमता ईश्वर को मालूम है।

48. शंका– मनुष्य ने इतने अविष्कार किये हैं। क्या ईश्वर यह पहले से जानता था, या वह आश्चर्य करता है?

☯ **समाधान**– मनुष्य क्या कर सकता है, यह ईश्वर पहले से जानता है। मनुष्य के किसी काम से ईश्वर को आश्चर्य नहीं होता। उदाहरण के लिए, ***यदि मनुष्य ने ट्रैक्टर का अविष्कार कर खेती करना शुरु किया, तो यह बात ईश्वर पहले से जानता था। परन्तु ईश्वर यह भी जानता था कि हल से खेती करने में ज्यादा फायदा होगा और ट्रैक्टर से कम।*** ईश्वर सर्वज्ञ है। उसके पास अच्छे–बुरे कर्मों की पूरी सूची है। मनुष्य या जीवकृत कोई भी कर्म ईश्वर के लिए नया नहीं है।

ईश्वर हमेशा अच्छा काम करने के लिए कहता है, कठिनाइयों से बचने के लिए उपदेश देता है। वह जानता है कि, लोग चोरी, डकैती, लूट–मार, शोषण व अन्याय करेंगे, पर फिर भी ईश्वर सृष्टि बनाता है और सुझाव भी देता है। वह अच्छे और बुरे कर्मों का परिणाम भी बता देता है। यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह ईश्वर की बात माने या न माने। यदि वह नहीं मानता, तो उसे दण्ड भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए।

49. शंका– ईश्वर के ज्ञान में केवल आवृत्ति होती रहती है, सर्वज्ञ ईश्वर को इसकी क्या आवश्यकता है?

☯ **समाधान**– एक व्यक्ति ने चोरी की तो उसके एकांउट में केवल इतना लिखा जाएगा कि इसने चोरी की। ईश्वर केवल यह आवृत्ति करता है, कि इसने चोरी की। ईश्वर को तो पता है कि मनुष्य चोरी कर सकता है। ***चोरी के कर्म की आपके कर्मफल के खाते यानी एकाउंट में एन्ट्री (दर्ज) करने की आवश्यकता है।***

जीव द्वारा दान दिया जाना ईश्वर के लिए कोई नया कर्म नहीं है। जब कोई व्यक्ति दान देता है, तो ईश्वर दान की, कर्म रूपी आवृत्ति करता है। इस व्यक्ति ने दान दिया, चलो इसके एकांउट में इस काम की एन्ट्री करो। बस इतना ही। एन्ट्री करने के लिए उसको आवृत्ति करनी होती है, और कोई कारण नहीं है।

ईश्वर चेतन तत्त्व है। जब चेतन तत्त्व के सामने कोई कर्म होता है, तब वह उसको देख या जानकर कुछ न कुछ विचार करता ही है। यदि वह कर्म उसकी जानकारी में पहले से हो, तो उसे 'ज्ञान की आवृत्ति' कहते हैं। और यदि नई जानकारी हो, तो उसे 'ज्ञान में वृद्धि' कहते हैं। ईश्वर के लिये जीवकृत कोई भी कर्म नया तो है नहीं। इसलिए जीवकृत कर्मों को जानकर ईश्वर के 'ज्ञान की आवृत्ति' होती रहती है।

यह आवृत्ति इसलिए आवश्यक है, क्योंकि ***इसके बिना ईश्वर 'कर्मों का हिसाब ठीक से रखना और न्यायपूर्वक कर्मों का ठीक–ठीक फल देना' नहीं कर पाएगा।*** इसलिए ईश्वर के ज्ञान की आवृत्ति होती रहती है।

50. शंका– क्या कोई हमारा भविष्यफल बता सकता है?

☯ **समाधान**– उत्तर है:–

- एक व्यक्ति से मेरा परिचय हुआ। मैंने पूछा कि ''आप क्या करते हैं?'' उन्होंने कहा कि 'मैं ज्योतिषी हूँ, भविष्यफल बताता हूँ।'' मैंने कहा मेरा एक सवाल है – ''आप अपना भविष्य जानते हैं।'' वह बोला– 'नहीं जानता।' मैंने कहा – ''जब आप अपना नहीं जानते, तो दूसरों का क्या जानेंगे।'' चुप हो गया बेचारा। इस तरह ये लोग धोखा देते हैं।
- ***गणित में नियम है:– संभावना का नियम (लॉ आफ प्रॉबेबिलिटि)।*** ये ज्योतिषी जितनी भी भविष्यवाणियां करते हैं, वो सारी लॉ ऑफ प्रॉबेबिलिटि पर आधारित है। लॉ ऑफ प्रॉबेबिलिटि आप भी जानते हैं, हम भी जानते हैं, फिर उसने नया क्या बता दिया?

एक विद्यार्थी परीक्षा में बैठा है। वो या तो पास होगा या फेल होगा। सौ विद्यार्थी परीक्षा में बैठे हैं। ***क्या परीक्षा में बैठे सारे के सारे विद्यार्थी फेल हो जाएंगे? कुछ तो पास होंगे, कुछ की तो पास होने की संभावना है। यह है 'संभावना का नियम।'*** वहाँ 'संभावना का नियम' काम करता है। यदि कोई व्यक्ति बीस

संभावनाएँ व्यक्त करता है तो कोई तो सच निकलेगी। वहाँ यह नियम लागू होता है, न कि भविष्यवाणी।

- ***इस संभावना के नियम पर ये ज्योतिषी भविष्यफल बताते हैं।*** कथित वचनों में कुछ तो ठीक (सच सिद्ध) होना ही है। अगर सारे विद्यार्थी जाकर ज्योतिषी से पूछें कि – हम पास हो जाएंगे या फेल हो जायेंगे। संभावना के नियम के आधार पर, मान लीजिए ज्योतिषी उन सबको यह कह दे कि– तुम पास हो जाओगे या सारे के सारे फेल हो जाओगे, तो क्या, सौ में से सौ पास या फेल हो जाएंगे? नहीं होंगे न। कुछ तो पास होंगे, चालीस, पचास, साठ कुछ तो पास होंगे ही। जो पास हुए, वे संभावना के नियम से पास हुए।
- जो पास हुए, क्या ज्योतिषी के कहने पर पास हुए? वे अपनी मेहनत से पास हुए। सारे के सारे इतने फिसड्डी नहीं होते हैं कि फेल हो जाएँ? जो मेहनत करते हैं, वो पास होते हैं, जो नहीं करते वो फेल होते हैं।
- ***ज्योतिषियों को कुछ नहीं मालूम, बेकार धोखा है। इनके चक्कर में नहीं आना।*** लोगों में ऐसी भ्रांति फैल गई कि फलाने ज्योतिषी ने बताया था, इसलिए पास हो गए। अच्छा उसने सबको पास होने को बोला था, फिर बाकी चालीस जो फेल हो गए, उनका क्या ? उसका क्या जवाब है? उसका कोई जवाब नहीं। विद्यार्थी अपनी पढ़ाई–लिखाई करने या न करने से पास–फेल होते हैं। उस ज्योतिषी के कहने पर नहीं होते।
- ***अखबार में भविष्य भी नहीं पढ़ना चाहिए। इसको पढ़ने से नुकसान होता है।*** क्या नुकसान होता है? एक व्यक्ति ने अखबार पढ़ा। उसकी मेष राशि थी। अखबार में लिखा था कि ''मेष राशि वालों को शनिवार को दुर्घटना की संभावना।'' वह अच्छा ड्राइवर था, बढ़िया ड्राइविंग करता था। पर उसने पढ़ लिया, तो सुबह से ही नर्वस हो जाएगा। और न होता हो एक्सीडेंट, फिर भी ठोंक देगा। क्योंकि पेपर में लिखा है कि आज तो दुर्घटना होनी ही है। अब न पढ़ता तो नहीं ठोंकता। पढ़ने के कारण बेचारा सुबह–सुबह घबरा गया।

इसलिए अखबार में भविष्य नहीं पढ़ना चाहिए, सुनना भी नहीं चाहिए। बिल्कुल बेकार की बातें हैं, व्यर्थ की बातें हैं, हानिकारक हैं। ये सब भविष्यफल सुनने–पढ़ने वाले लोग और ज्योतिषी गलती करते हैं।

- प्रसंगवश एक बात और बता देता हूँ। ये ज्योतिष वाले भविष्यफल बताते हैं। मेष, वृष, तुला, वृश्चिक इत्यादि बारह राशियाँ होती हैं। भारत में कितनी जनसंख्या है? सौ करोड़ से ऊपर। इसमें से अस्सी–पचासी करोड़ आर्य (हिन्दु) हैं। भारत में जो इन राशियों को मानते हैं, उनकी संख्या सौ करोड़ में से अस्सी, पचासी करोड़ तो होगी। कुल राशियाँ हैं, बारह। एक राशि में करीब सात करोड़ व्यक्तियों के नाम आएंगे।

अब अखबार उठाइए और भविष्यफल देखिए। ***अखबार में लिखा है कि, ''मंगलवार को तुला राशि वालों को लाभ होगा।'' इसलिए मंगलवार को भारत के सात करोड़ व्यक्तियों को लाभ होना चाहिए। लेकिन होता है क्या लाभ? नहीं होता। तो मतलब यह हुआ कि, ये झूठ बोलते हैं।***

जब आप और खोज करेंगे, तो पता चलेगा कि, 'मंगलवार को कई तुला राशि वालों का दिवाला पिटता है। लाभ की तो बात क्या? बताइए, आपका भविष्यफल कहाँ गया? जिनका दिवाला पिट गया, वो जाकर क्यों नहीं ज्योतिषियों की गर्दन पकड़ते कि– ''तुमने तो लिखा था अखबार में, कि लाभ होगा। तो यहाँ हमारा दिवाला क्यों पिटा?''

- ***ज्योतिषी उपाय की भी गारंटी नहीं लेते कि यह उपाय करो, आपको निश्चित लाभ होगा। । अगर वो उपाय की गारंटी भी लें, तो हम मान भी लें।***

आपके स्कूटर में खराबी हो गई। आप मैकेनिक के पास जाइए। वह गारंटी लेता है कि – ''इतने पैसे लूँगा, ठीक करके दूँगा।'' ऐसे ही, अगर ज्योतिषी गारंटी दे कि– ''हाँ, इतनी फीस लूँगा और यह मेरा उपाय सौ प्रतिशत कारगर होगा। नहीं हुआ, तो मुझ पर डबल फाइन करो।'' कोई ज्योतिषी सामने आए, एक भी नहीं

आता। सब के सब जनता को धोखा देते हैं। इसलिए इन लोगों से सावधान रहिए। इनके चक्कर में नहीं आना।

51. ***शंका– क्या योगी व्यक्ति भविष्य की बातों का ज्ञान कर सकता है, जैसे दयानंद जी के बारे में पढ़ने को मिलता है?***

☯ ***समाधान***– उत्तर है:–

- कई चमत्कारिक घटनाएं महापुरुषों के साथ भावुक अनुयायी लोग जोड़ देते हैं। ऐसी ही महर्षि दयानंद जी के साथ जोड़ दी। पुस्तकों में पढ़ते हैं–''महर्षि दयानंद जी बैठे थे, उनके साथ दो चार भक्त लोग बैठे थे। महर्षि दयानन्द जी ने कहा– देखो, अभी एक व्यक्ति आएगा, वो मेरे लिए पान लेकर आएगा और उसमें विष होगा।'' थोड़ी देर बाद एक व्यक्ति पान लेकर आया और उसमें विष था। ***ऐसी–ऐसी चमत्कार की बातें भावुक अनुयायी अपनी ओर से जोड़ते हैं।***
- प्रश्न है, अगर महर्षि दयानंद जी को वास्तव में भविष्य की बातों का पता लग जाता था, तो उन्हें यह क्यों नहीं पता चला कि ''कल जगन्नाथ मुझे जहर देगा? ''कितनी बार लोगों ने उनको जहर दिया, कितने प्रकार से दिया। यह सब उनको पता क्यों नहीं चला ? इस तरह की अन्तः प्रेरणा (इन्ट्यूशन) नहीं हो सकती।
- यह केवल तुक्का है। सौ बार व्यक्ति अंदेशा लगाता है, दो बार सही निकलता है। यह है – लॉ ऑफ प्रोबेबिलिटी, देयर इज नो इन्ट्यूशन।

  आजकल टी.वी. चैनलों पर, अखबारों आदि में जो भी भविष्यफल बताया जाता है, उसके पीछे भी यही संभावना का नियम ही काम करता है।
- यदि कोई व्यक्ति दावा करता है कि वह वास्तव में भविष्य की घटनाओं को जानता है तो उसकी बातें पूर्ण सत्य सिद्ध होनी चाहिए। जैसे– गणित के अध्यापक गणित के प्रश्नों का पूर्ण सत्य उत्तर देने का दावा करते हैं, और उनके उत्तर पूर्ण सत्य ही होते हैं। परन्तु भविष्यवाणी

करने वाले क्या अपना भविष्य भी ठीक प्रकार से जानते हैं? यदि नहीं जानते, तो दूसरों का भविष्य क्या जान पाएँगे? और क्या बता पाएँगे? एक इंजीनियर अपने लिए तथा दूसरों के लिए भी मकान बनाता है। उसकी विद्या सत्य है। भविष्यवक्ता न अपना भविष्य जानता है, न दूसरों का। इसलिए यह भविष्यवाणी झूठी है।

- ***व्यावहारिक रूप से ऐसे भविष्य की बातों की कोई भविष्यवाणी नहीं कर सकता। व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है – यह सिद्धांत है। अगर व्यक्ति स्वतंत्र है, तो वह कुछ भी कर सकता है। अगर व्यक्ति स्वतंत्र है, तो वह सुधर भी सकता है, बिगड़ भी सकता है।***
- यदि भविष्यवाणी सत्य हो, तो इसका अर्थ होगा कि सब कुछ पहले से निश्चित है। तब व्यक्ति कर्म करने में परतन्त्र हो जाएगा। ***यदि व्यक्ति कर्म करने में परतन्त्र है, तो उसे दण्ड नहीं दिया जा सकता। क्योंकि परतन्त्र को दण्ड देना, अन्याय है।***

  किसी व्यक्ति ने अपनी बन्दूक से चार व्यक्तियों को मार दिया। अब दण्ड, मारने वाले व्यक्ति को मिलेगा, या बन्दूक को? मारने वाले व्यक्ति को मिलेगा। चारों व्यक्ति गोली से मरे, गोली छूटी बन्दूक से तो बन्दूक को दण्ड मिलना चाहिए। परन्तु बन्दूक को दण्ड नहीं दिया जाता। क्योंकि बन्दूक परतन्त्र है। बन्दूक स्वतन्त्र नहीं है। बन्दूक चलाने वाला व्यक्ति स्वतंत्र है। इसलिए बन्दूक चलाने वाले को दण्ड दिया जाता है। यही न्याय है। इसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वतन्त्रता से किए गए कर्मों का फल (सुख–दु:ख) भोगता है।
- गणित वाला ज्योतिष ठीक है, पर भविष्यफल (प्रिडिक्सन) गलत है। एक अंतिम बात कह देता हूँ, आप समझ जायेंगे। व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। स्वतंत्र किसको कहते हैं, जो अपनी इच्छा से काम करे या दूसरे के दबाव से काम करे? जो अपनी इच्छा से काम करे, वह स्वतंत्र है। तो आपका भविष्य पहले से कोई कैसे लिख देगा? अगर पहले से लिखा है, और वही होना है, तो आप परतंत्र हो गए।

- सच तो यह है कि आप जब चाहे, अपनी योजना बदल सकते हैं, जब चाहे बना सकते हैं। हमारी मर्जी है। हम कर्म करने में स्वतंत्र हैं। अपने भविष्य के निर्माता हम स्वयं हैं। एक–एक मिनट में हम अपना भविष्य बनाते हैं। आप भाषा में बिगाड़ कर दीजिए, देखिए आपका भविष्य तुरंत बिगड़ जाएगा। आपकी क्रिया ठीक–ठीक चल रही है, आपका भविष्य अच्छा है। आप गलत क्रिया शुरु करो, देखो आपका भविष्य तुरंत बिगड़ जाएगा। इस प्रकार अपना भविष्य बनाना–बिगाड़ना हमारे हाथ में है। एक–दो मिनट में हम अपना भविष्य बना सकते हैं या बिगाड़ सकते हैं। इन कागज के पोथी–पत्रों में कुछ नहीं लिखा।
- ***जब तक हम स्वतंत्र हैं, वह ज्योतिषी हमारा भविष्य कैसे जान लेगा? हमने कोई काम अब तक सोचा ही नहीं, योजना ही नहीं बनाई, कोई निर्णय ही नहीं किया कि दो महीने बाद क्या करूँगा। जब मैंने ही नहीं सोचा, तो ज्योतिषी उसको कैसे जान लेगा? ईश्वर भी नहीं जानता, तो ज्योतिषी उसको क्या जानेगा? फिर भी वो बताता है, तो इसका अर्थ है कि वह तुक्का मारता है।*** उसकी जितनी बातें ठीक होती है, लॉ ऑफ प्रॉबेबिलिटि से ठीक होती है।

  "प्रत्येक व्यक्ति कर्म करने में स्वतन्त्र है।" जब वह स्वतन्त्र है, तो पहले से कुछ लिखा या निश्चित नहीं है। जब पहले से कुछ भी निश्चित नहीं है, तो सिद्ध हुआ कि – ''भविष्य कथन झूठा है।''

52. शंका– पंचांग–पत्रा, ज्योतिष विद्या को मानने से क्या हानियाँ होती हैं? क्या यह वेद अनुसार है?

☯ ***समाधान***– हस्तरेखा, भविष्यफल यह सब झूठ है। हस्तरेखाओं में कुछ नहीं लिखा। किसी का भविष्य इन रेखाओं में नहीं है। भविष्य आपके पुरुषार्थ में है। देशभक्ति का एक गीत याद है – 'नन्हें मुन्हें बच्चे तेरी 'मुट्ठी में क्या है, मुट्ठी में है तकदीर हमारी'। 'मुट्ठी में' का क्या मतलब? इन लकीरों से नहीं, हमारे हाथ के पुरुषार्थ में है।

वेद कहता है – ''कृतं मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः।'' अर्थात् ***'कर्म मेरे दायें हाथ में है, तो फल बायें हाथ में'।*** पर लोग आलसी हैं, कर्म करना नहीं चाहते। वे केवल लकीरों को देखते रहते हैं।

''ऐ हाथ की लकीरों में किस्मत देखने वालो... किस्मत तो उनकी भी होती है, जिनके हाथ नहीं होते।'' जब हाथ ही नहीं, तो लकीरें कहाँ है उनकी? पर उनकी भी किस्मत होती हैं। किस्मत तो हमारे पुरुषार्थ में है। इसलिए इन लकीरों में कुछ नहीं रखा।

एक विमान दुर्घटना (प्लेन क्रैश) हुई, डेढ़ सौ आदमी मर गए। उनमें बच्चे भी थे, बूढ़े भी थे, जवान भी थे। क्या सबकी हस्तरेखाएं एक जैसी थीं? रेल दुर्घटना, ट्रक दुर्घटना ऐसी बहुत दुर्घटनाएं रोज होती हैं। कितने ही लोग मरते हैं। क्या सबकी हस्त रेखाएं एक जैसी होती हैं? एक जैसी होनी चाहिए, पर एक जैसी नहीं होती। इसलिए हस्तरेखा में भविष्यफल कुछ नहीं लिखा।

लोग यह मानते हैं कि हमारे भविष्य में ऐसा–ऐसा लिखा है, इतनी उम्र में यह होगा इत्यादि। मान लीजिए– किसी व्यक्ति के भविष्यफल में लिखा है कि उसे चार मर्डर करने हैं। वो चार हत्याएं करेगा, यह किसने लिखा? भविष्यफल ज्योतिषी नहीं लिखता है। ज्योतिषी तो भविष्य बताता है। वो तो कहता है कि – ''भविष्यफल भगवान ने लिखा है, मैं तो बता रहा हूँ कि आपका भविष्य ऐसा लिखा है।'' तो लिखने वाला भगवान है।

जब भगवान ने हमारी किस्मत में लिखा है कि हमें चार हत्याएं करनी हैं और हम उतनी–उतनी उम्र में चार हत्या करेंगे तो हम अपराधी तो नहीं हुए न? ईश्वर की आज्ञा का पालन करना अपराध नहीं है। ईश्वर ने लिखा है कि – तुम बत्तीस साल की उम्र में चार मर्डर करोगे और हम कर डालेंगे तो हमने कोई अपराध नहीं किया। क्या हमें सरकार छोड़ देगी? नहीं न। इसलिए भविष्यफल झूठ है।

आपकी बुद्धि, आपके परिश्रम, आपके पुरुषार्थ, आपकी ईमानदारी और आपके संस्कारों से आपका भविष्य बनता है।

अपने संस्कारों को देखें, अच्छे विचार जगाएं, बुरे विचारों को रोकें, अच्छे काम करें, अच्छी भाषा बोलें, अच्छा चिंतन करें, आपका भविष्य बहुत अच्छा बनेगा। कोई हस्तरेखा और भविष्यफल देखने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए पंचांग–पत्रा आदि भविष्यकथन, ये सब वेद विरुद्ध हैं। इसको मानने से व्यक्ति आलसी, निकम्मा, पुरुषार्थहीन, दीन, दु:खी और दरिद्र हो जाता है।

53. *शंका:– ''ज्योतिषम् नेत्रमुच्यते'' अर्थात् वेद के ज्ञान प्राप्ति का साधन ज्योतिष नेत्र (आँख) रूप से है, और ज्योतिष वेद का अंग है, तो ज्योतिष का उपयोग आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक पापों से छुड़ाने में क्या हो सकता है? वेद के ज्योतिष को कृपया समझाएँ।*

☯ ***समाधान–*** ''ज्योतिषम् नेत्रमुच्यते''–इसका अर्थ होता है कि वेद को समझने के लिए, सृष्टि को समझने के लिए 'ज्योतिष शास्त्र' को जानना आवश्यक है। ज्योतिष का मतलब जानिए:–

'ज्योति' का अर्थ होता है–'प्रकाश' और ज्योतिष शास्त्र का अर्थ होता है–प्रकाशवाले पिण्डों की गतिविधियों को बताने वाला शास्त्र। जैसे सूर्य, ज्योति–पिण्ड है, प्रकाश का पिण्ड है। यह प्रकाश फेंकता है। इसी तरह से एक सूर्य, दो सूर्य, तीन सूर्य, हजारों सूर्य, ग्रह और उपग्रह आदि चीजों की गतिविधियों को बताने वाला शास्त्र है – 'ज्योतिष शास्त्र'। जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है, सूर्य नक्षत्र आदि की गतिविधियों को जानता है, भूगोल–खगोल–शास्त्र को जानता है, वो व्यक्ति वेद को ठीक–ठीक समझ सकता है। ''ज्योतिषम् नेत्रमुच्यते''–इसका तात्पर्य इस तरह से है।

एक और ज्योतिष, जो फलित ज्योतिष के नाम से आजकल प्रचलित है–जैसे हस्त–रेखा विज्ञान, भविष्य–फल, राशि–फल, जन्म–कुण्डली, यह सब गड़बड़ है। इससे हम किसी का भविष्य नहीं बता सकते। कोई किसी का भविष्य जानता ही नहीं।

जन्मकुंडली मिलाते हैं, कुंडली मिलाकर के विवाह करते हैं। अच्छा तो भई, कुण्डली मिलाकर विवाह किया तो, शादी के

बाद झगड़ा क्यों हुआ, तलाक क्यों हुआ? भविष्यफल बताकर वो बेकार जनता की बुद्धि खराब करते हैं। उनकी इन बातों में कुछ भी नहीं रखा है, सब व्यर्थ की बातें हैं।

राम और रावण की एक ही राशि थी, पर देखो दोनों का हाल क्या हुआ? लाखों साल हो गए हैं लेकिन लोग एक को तो दीप जला रहे हैं, और दूसरे को गालियां मिल रही हैं। कंस और कृष्ण की भी एक ही राशि थी। अब उनका भी इतिहास देख लो कि दोनों में कितना फर्क है? कंस को गालियाँ पड़ती है, कृष्ण जी के गीत गा रहे हैं लोग।

ये जो जन्म कुंडली बनाते हैं और ग्रहों का फल बताते हैं, यह सब भी बेकार है, झूठ है। जैसे राशियाँ बारह हैं, इसी तरह से ये नौं ग्रह मानते हैं। इनको तो ग्रहों का भी पता नहीं। नौं ग्रहों की गिनती में भी नौं में से पाँच गलती करते हैं। कैसे?

- ***ये नौं ग्रह ऐसे गिनाते है, एक ग्रह मानतें है, सूर्य। अब बताइए, सूर्य भी कोई ग्रह है क्या? वो तो नक्षत्र है।*** जो स्वयं प्रकाश फेंकता है, जिसका अपना प्रकाश हो, उसे कहते है 'नक्षत्र'। सूर्य तो स्वयं अपना प्रकाश फेंकता है, तो सूर्य नक्षत्र है, ग्रह नहीं है। यह है एक गलती।
- दूसरी भूल ***चन्द्रमा को ये ग्रह बताते हैं। चन्द्रमा ग्रह नहीं, उपग्रह है।*** जो नक्षत्र के चारों ओर चक्कर लगाए, उसको बोलते हैं 'ग्रह'। और जो ग्रह के चारों ओर चक्कर लगाए, उसको कहते हैं 'उपग्रह'। तो सूर्य नक्षत्र है, हमारी पृथ्वी ग्रह है, चन्द्र हमारी पृथ्वी का उपग्रह है। जो हमारी पृथ्वी के चारों तरफ चक्कर लगाता है। दो भूल हो गईं।
- तीसरी भूल–पृथ्वी ग्रह है, जिसका हम पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। लेकिन ***नौं ग्रहों में से पृथ्वी ग्रह का नाम ही गायब है।*** एक आदमी बारह फीट की ऊँचाई से गिरे, तो हड्डी टूटेगी कि नहीं टूटेगी? तुरंत प्रभाव पड़ेगा पृथ्वी का। लेकिन उसका नाम ही गायब है।

- चौथी और पाँचवी गलती है – ज्योतिष वाले राहु और केतु नामक दो ग्रह बताते है। और इन्हीं से सबसे अधिक डराते हैं। ***वस्तुतः राहु–केतु नाम का कोई ग्रह है ही नहीं दुनिया में। व्यर्थ में दुनिया को धोखा दे रहें हैं।*** इसलिए ग्रहों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

पुरुषार्थ से सारी चीजें सिद्ध हो जाती हैं। पुरुषार्थ ही इस दुनिया में सब कामना पूरी करता है। पुरुषार्थ करो, भविष्य अच्छा है। ***तीन बातें सीख लेनी चाहिए–पुरुषार्थ, बुद्धिमत्ता और ईमानदारी।*** आपका भविष्य बहुत अच्छा है।

भाग्य तो एक बार जन्म से मिल गया, सो मिल गया। बाकी तो पुरुषार्थ बलवान है। भाग्य से भी बलवान है। पुरुषार्थ अच्छा है, तो भविष्य भी अच्छा है। और पुरुषार्थ खराब है, तो भाग्य भी सो जाएगा। भविष्य जानने के लिए किसी से पूछने की जरूरत नहीं है। देखो, हम किसी से अपना भविष्य पूछते नहीं।

लोग पता नहीं क्या–क्या अंगूठियाँ पहनते हैं – लाल, पीली, नीली। हमने आज तक कोई अंगूठी नहीं पहनी। हम कोई हार गलें में नहीं पहनते। तीन सौ पैसठ दिन हमारा धंधा (समाज सेवा कार्य) खूब चलता है। इतना चलता है, कि हमको हाथ जोड़कर माफी माँगनी पड़ती है कि साहब, टाइम नहीं है।

यहाँ एक श्रोता ने प्रश्न किया – ''हमने सुना है, कि ईश्वर का नाम भी राहु और केतु है। क्या यह सच है?'' तो मैंने उत्तर दिया – हाँ, राहु–केतु ईश्वर के दो नाम हैं, यह बात सत्य है पर ज्योतिषियों ने लोगों को डराने के लिए दो ग्रह कल्पित कर रखें है। ऐसे कोई ग्रह नहीं होते।

❖ ***संपादकीय टिप्पणी***–*समाज की सुख–शाँति मे बाधा पहुँचाने बाले लोग 'लोक कण्टक' कहलाते हैं। 'लोक कण्टक' यानी काँटे की तरह चुभकर पीड़ा देने बाले। 'मनुस्मृति' (नवम अध्याय का श्लोक 258 से 261) में लिखा है कि – मंगलादेश वृत्ताः' यानी* ***तुम्हे पुत्र या धन की प्राप्ति होगी, जो ऐसा कहने बाले हैं,*** *'ईक्षणिकेः सह' यानी* ***जो हाथ आदि देखकर भविष्य बताकर धन ठगने बाले हैं, उनको 'लोक कण्टक' यानी प्रजाओं को पीड़ित करने बाले चोर समझें।*** *फिर 'प्रोत्साद्य' यानी उन्हे पकड़कर (वशमानयेत) यानी* ***उन्हें कारागृह में रखें।***

54. शंका– क्या आप मेरा भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल बता सकते हैं? अगर नहीं बता सकते, तो क्या आप ऐसे महानुभाव को जानते हैं, जो ऐसा करने में सक्षम है?

☯ **समाधान**– कोई नहीं बता सकता, क्योंकि कोई जानता ही नहीं है। हाँ, मोटा–मोटा तो मैं बता सकता हूँ।

भूत, भविष्य और वर्तमान–तीनों के बारे में सुनिए। जिस व्यक्ति का यह प्रश्न है, वह वर्तमान काल में इस शिविर में, यहाँ आर्यवन में आया हुआ है। यह वर्तमान काल बता दिया न। भूत काल में उसके अंदर कुछ अच्छे संस्कार थे, इसलिए वह यहाँ इस शिविर में आया। अच्छे संस्कार नहीं होते, तो वह यहाँ आता ही नहीं। अब भविष्य काल सुनिए– अगर वो ऐसे ही शिविर में आता रहेगा, तो उसकी मुक्ति हो जाएगी। ठीक हो गया। तो वर्तमान,भूत, भविष्य की बात इतनी है।

भूतकाल को जानने से कोई लाभ नहीं है। जो बीत गया सो बीत गया। और वर्तमान में क्या हो रहा है, यह तो आप जानते ही हैं। इसको जानने से भी कोई लाभ नहीं है। एक भविष्यकाल की बात रही – ***अगर आप पुरुषार्थी, बुद्धिमान और ईमानदार हैं, तो आप का भविष्य उज्जवल है,*** बस। अगर आप में आलसीपन, बुद्धिहीनता और बेईमानी आ गयी, तो आपका भविष्य खराब है। बस, इस एक बात में सब बात आ जाती है।

55. शंका– क्या जादूगरी आँखों का धोखा होता है?

☯ **समाधान**– हाँ है, क्योंकिः–

- एक नियम है – 'कारण और कार्य का सिद्धांत'। घर में आटा नहीं होगा तो क्या रोटी बनेगी? नहीं। ***अगर लकड़ी नहीं होगी तो क्या फर्नीचर बनेगा? नहीं। यह 'कारण–कार्य सिद्धांत' है।***

इसी तरह से मैं जेब में हाथ डालूँ और बिल्ली निकल आए तो इसका मतलब जेब में बिल्ली थी। बस, इसी का नाम जादूगरी है। वो थी कहीं न कहीं, इधर–उधर छुपा रखी थी।

- सृष्टि के कारण–कार्य सिद्धांत के बिना कुछ नहीं हो सकता। सृष्टि का नियम है। ***एक नियम याद कर लीजिए – सृष्टि क्रम के विरुद्ध कोई कार्य नहीं हो सकता, और यहाँ तक मैं कह दूँ कि – ईश्वर भी नहीं कर सकता, मनुष्य तो क्या करेगा।***

अच्छा बताइए, अग्नि गरम है। क्या इस गरम अग्नि को ईश्वर ठंडा कर सकता है? नहीं। ईश्वर भी ठंडा नहीं कर सकता, सृष्टि नियम के विरुद्ध कार्य ईश्वर भी नहीं कर सकता, तो ये मनुष्य लोग क्या करेंगे। इतने में ही आप समझ लीजिए कि यह सब चालाकी और धोखा है।

- ***कारण–कार्य सिद्धांत के विरुद्ध जादूगरी कुछ चीज नहीं, केवल आँखों का धोखा है।*** सब चालाकी और धोखेबाजी है। ***हर आदमी पकड़ नहीं पाता, वो ऐसी चतुराई से काम कर लेते हैं।***
- ***जादूगरी में या तो हाथ की सफाई होती है या कोई साइंस की बात होती है।***

ऐसे दो चार हाथ जादूगरी के मैं भी जानता हूँ। मंत्र बोलकर मैं आग लगाना जानता हूँ। पर वो कोई जादूगरी नहीं है। आग लगाने वाले कहते हैं – ***यह गाय का घी है और मैं अभी कटोरी में घी टपकाऊँगा और मंत्र बोलूँगा और इसमें आग लग जाएगी।***

असल में उस चम्मच में गाय का घी नहीं होता। वो ग्लिसरीन होती है। एक दूसरी पोटैशियम परमैग्नेट (लाल दवा) होती है। वो दाँत के डॉक्टर कुल्ला करने के लिए देते हैं। पोटैशियम परमैग्नेट का पाउडर कटोरी में पहले से रखा होता है। वो जनता को दिखता नहीं और वो ऊपर से दो बूँद ग्लिसरीन टपका देते हैं। जब तक मंत्र बोलते हैं, तब तक उन दोनों में रिएक्शन हो जाता है। ***पोटैशियम परमैग्नेट में दो बूँद ग्लिसरीन टपकायेंगे तो उसमें आग लगेगी।*** वो लोग यह चतुराई करते हैं।

- मंत्र बोलने से कोई आग नहीं लगती। ***अगर मंत्र बोलने से आग लगती हो तो पहले मन्त्र बोलने वाले के मुँह में लगनी चाहिए।*** पर मुँह में लगती नहीं।
- ऐसे ही भूत–प्रेत की बात करते हैं। कहते हैं कि – शीशी के अंदर मैंने भूत–प्रेत बंद कर रखा है। छोटी सी एक शीशी (दो ढ़ाई इंच की शीशी) का ढक्कन खोल देंगे और हॉरिजोंटल (आड़ी) स्थिति में उस शीशी को रखेंगे। हम चॉक से बोर्ड पर लिखते हैं। उस चॉक के टुकड़े को उस शीशी के मुँह पर रख देंगे और फिर किसी व्यक्ति को बुलाएंगे। कहेंगे कि – ''आइए, जरा फूँक मारकर, हवा मारकर इस टुकड़े को इस शीशी के अंदर डालिए।'' जब वो फूँक मारकर अंदर डालने का प्रयास करेगा तो वो चॉक का टुकड़ा अन्दर नहीं जाएगा बल्कि बाहर गिरेगा। जब वो बाहर गिरेगा तो कहेगा– ''इसमें मैंने एक भूत आत्मा, प्रेत–आत्मा बंद कर रखी है, वो इसको बाहर फेंकती है, अंदर घुसने नहीं देती।'' यह सब चालाकी है, झूठ है, धोखा है। अब उस शीशी को आप वर्टीकल (सीधी) खड़ी कर दीजिए। अब वही टुकड़ा डालिए, तो वो तुरंत अंदर चला जाएगा। अब क्यों चला गया। ऐसे क्यों नहीं जा रहा था? यह साइंस की बात है।

चॉक का टुकड़ा भारी है, हवा उससे हल्की है। जब शीशी हॉरिजोन्टल रखी जाती है, फिर वहाँ चॉक का टुकड़ा रखते हैं और जब हम चॉक के टुकड़े को अंदर फेंकने के लिए फूंक मारते हैं तो हवा हल्की होने की वजह से वो टुकड़े से पहले अंदर चली जाती है। बाहर की हवा शीशी के अंदर जाती है और अंदर की हवा धक्का खाकर बाहर आती है। जब अंदर की हवा बाहर आती है तो बाहर आती हवा के धक्के से टुकड़ा बाहर ही तो गिरेगा, अंदर थोड़े ही जाएगा। जब शीशी सीधी खड़ी कर देते हैं और तब वो टुकड़ा रखते हैं तो तुरंत अन्दर चला जाता है। अब वहाँ ग्रेविटेशन–फोर्स (गुरुत्वाकर्षण) का नियम लागू होता है। कहाँ गया भूत–प्रेत? खामखां धोखा है। जादूगरी के चक्कर में नहीं आना।

56. शंका– क्या झाड़–फूँक करने वाले बाबाजी अथवा टोटके आदि करने वाले बाबाजी सब कोरा ढोंग मात्र हैं। तो फिर झाडू मारने से मिर्गी कैसे भाग गई?

☯ **समाधान**– ऐसा तो हो नहीं सकता। ऐसे किस्सों के हमने परीक्षण भी करवाए हैं। यहाँ ध्यान रखें:–

- ***इसमें कुछ अंश मानसिक–रोग का होता है। वो झाड़फूँक से ठीक हो जाता है।*** क्योंकि झाड़फूँक भी एक मानसिक–चिकित्सा है।
- जो शारीरिक रोग है, वो शारीरिक चिकित्सा करवाने से ही ठीक होता है। इसलिए यह झाड़फूँक करवाने से अधिक लाभ नहीं है। उससे पाखण्ड को बढ़ावा भी मिलता है। इसलिए उसके चक्कर में नहीं आना।
- मानसिक रोग की 'मानसिक–चिकित्सा'ही करें। और ***'मानसिक–चिकित्सा' की सबसे बढ़िया पद्धति 'अष्टांग योग' है।*** मन के विचारों को रोको, शुद्ध चिंतन करो, ईश्वर, जीव, प्रकृति का विचार करो और करने योग्य कार्य को करो, न करने योग्य कार्य को मत करो, इस तरह से मानसिक–चिकित्सा होती है। यह सबसे उत्तम पद्धति है।

57. शंका– डिस्कवरी चैनल में भूत–प्रेत की कथाएं और कथित घटनाओं का ब्यौरा दे रहे हैं। उसमें फादर आकर जादुई पानी छिड़ककर भूत भगाते हैं। सारे घटित दृश्य भी दिखाते हैं। क्या यह असत्य है?

☯ **समाधान**– जी हाँ, भूत–प्रेत की सब बातें असत्य हैं। ऐसे ईसाइयों के बहुत कार्यक्रम देखे गए, पकड़े गए जो बिलकुल झूठे और नकली हैं। उन पर कोर्ट–केसेस भी किए गए। अहमदाबाद कोर्ट के एक वकील साहब ने मुझे ऐसी एक फिल्म दिखाई और बताया कि हमने इन लोगों पर कोर्ट–केस किया है। ये जनता को बहकाते हैं। झूठ का प्रयोग करते हैं। बड़ी चालाकी से ये लोग काम करते हैं। आम जनता समझ नहीं पाती।

वे छोटे–छोटे बच्चों को इकट्ठा करते हैं। एक ईसा मसीह की लकड़ी की मूर्ति ले जाते हैं और रामचंद्र जी की लोहे की मूर्ति ले जाते हैं और कहते हैं – देखो बच्चों, हमारा भगवान कौन है 'ईसा–मसीह' और तुम्हारा भगवान कौन है – यह 'रामचंद्रजी'। अब देखो इनकी पानी में परीक्षा करेंगे, जो भगवान पानी में तैर जाएगा वो सच्चा, और जो भगवान पानी में डूब जाएगा, वो नकली। जब दोनों मूर्तियाँ पानी में रखते हैं तो लोहे वाली डूब जाती है, लकड़ी वाली तैरती रहती है। इस तरह बेवकूफ बनाकर सब बच्चों को ईसाई बना दिया। फिर इक्का–दुक्का कोई विद्वान गया। उसने कहा– देखो बच्चो, यह परीक्षा अधूरी है। असली परीक्षा तो 'अग्नि परीक्षा' है। अब इन दोनों भगवानों की अग्नि परीक्षा करेंगे। जब ऐसा किया तो असली–नकली का निर्णय हो गया। इस तरह यह बस चालाकी है, धोखा है, असत्य है। ऐसे लोगों की लपेट में नहीं आना चाहिए।

58. शंका– आज सुबह हम ध्यान में मन नहीं लगा पाए। जब गुरुजी ने कहा कि – अपनी हथेलियाँ घर्षण करके आँखों में लगाओ, उसी समय मैंने कल्पना में देखा कि हम हवन में बैठे हैं और एक लड़की आई और रखा हुआ दीपक बुझा दिया। तब से मेरा मन परेशान है?

☯ **समाधान**– इसमें परेशान होने की बात नहीं है। कभी – कभी मन में ऊँचे–नीचे ख्याल आते रहते हैं। हम मनुष्यों का मन अच्छा भी सोचता है, बुरा भी सोचता है। मन पॉजीटिव भी सोचता है, नेगेटिव भी सोचता है। मन में जो विचार चलते रहते हैं, वे कभी–कभी कल्पना में आ जाते हैं। इसलिए यदि सहसा ऐसा कोई विचार कौंध गया तो उससे घबराने या परेशान होने की आवश्यकता नहीं है।

इससे ***ऐसा संकेत नहीं समझना चाहिए कि उसने दीपक बुझा दिया तो कोई अनिष्ट या दुर्घटना हो जाएगी।*** यह तो संयोग की बात है। दुनिया में घटनाएं–दुर्घटनाएं होती रहती हैं। पर दीपक बुझाने से उसका कोई सीधा लेना–देना नहीं है।

59. शंका– क्या किसी मंत्र के जाप से या यज्ञ करने से कष्ट दूर हो सकते हैं? जबकि सुना यह जाता है – ''अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतम् कर्म शुभाशुभम्।''

☯ **समाधान–** यह बात ठीक है कि हमने जो कर्म किए हैं, उनके फल तो हमें भोगने ही पड़ेंगे। रही बात यह कि, क्या मंत्र के जाप से अथवा यज्ञ करने से कष्ट दूर हो सकते हैं? उत्तर यह है कि–

(1) ***हम यज्ञ करेंगे, मंत्र का जाप करेंगे, तो भगवान हमको सहनशक्ति देगा। सहनशक्ति से कष्ट हमारे लिए हल्का हो जाएगा। कष्ट भोगना तो पड़ेगा, पर वह उतना भारी नहीं रहेगा।***

स्वामी दयानंद जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि – ईश्वर की उपासना से इतना बल प्राप्त होगा कि पहाड़ जैसा दुःख भी राई जैसा प्रतीत होगा। जो दुःख आएगा, वो तो भोगना पड़ेगा। लेकिन वह दुःख इतना भारी नहीं लगेगा, हल्का लगेगा। आराम से निपट जाएगा।

(2) मंत्र के जाप से ***आगे के लिए बुद्धि अच्छी हो जाएगी।*** फिर हम और अधिक अच्छे–अच्छे काम करेंगे। आगे अपराध करेंगे नहीं, तो आने वाले कष्ट टल जाएंगे। क्योंकि आगे अपराध ही नहीं करेंगे, तो पाप का दंड क्यों मिलेगा? इसलिए मंत्र जाप करना चाहिए, यज्ञ करना चाहिए।

60. शंका– मनु–स्मृति, पराशर–स्मृति, प्राचीन ग्रंथों में कहा है कि गायत्री मंत्र का एक लाख जाप करने वाला चोरी, ब्रह्महत्या, गुरु पत्नी के साथ व्यभिचार आदि पापकर्म से मुक्त होता है, कृपया मार्गदर्शन करें?

☯ **समाधान–** यह बात जिन भी ग्रंथों में आप पढ़ते–देखतें हैं, वो बात सत्य नहीं है। वेदानुकूल नहीं है, तर्क के भी विरुद्ध है, ऋषियों के भी विरुद्ध है। कारण किः–

- ***गायत्री मंत्र का पाठ करना एक अच्छा काम है। चोरी करना–यह बुरा काम है। अच्छे काम से बुरा काम कैंन्सिल नहीं होता।***

मान लीजिए, लोग नाव में बैठकर नदी पार कर रहे थे। नाव में पानी भर जाने से नाव उलट गई। एक बड़ा अच्छा तैरने वाला था। उसने डूबने वाले बीस लोगों को बचा लिया। सरकार को सूचना मिली। सरकार ने कहा – आपको ईनाम मिलेगा।

- अब एक हफ्ते के बाद जिसने बीस लोगों की जान बचाई थी, उसी व्यक्ति ने एक आदमी को मार दिया। वो सरकार के पास गया और बोला – देखिए जी, ***मैने बीस लोगों की जान बचाई है, और एक को जान से मारा है। सीधे बीस में से एक को घटाकर के उन्नीस का ईनाम दे दीजिए।*** तो क्या सरकार मान लेगी? नहीं मानेगी न।
- सरकार ने कहा – बीस की जान बचाई, उसका अलग ईनाम मिलेगा। और एक को मारा, उसका दण्ड अलग मिलेगा। बीस में से एक कैन्सिल नहीं होता है। जब सरकार कैन्सिल नहीं करती, तो भगवान क्यों करेगा?

आपने एक लाख ***गायत्री जप किया, उसका अलग फल मिलेगा। चोरी की, उसका अलग दण्ड मिलेगा।*** इसलिए दोनों कर्मों का फल अलग–अलग है।

61. शंका– ''सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगा।।'' (योग.2/13) इस सूत्र में आए भोग के विषय में जानना चाहता हूँ?

☯ **समाधान–** योग दर्शन के इस सूत्र में आए जाति, आयु और भोग के बारे में थोड़ा सा संक्षिप्त वर्णन कर देता हूँः–

(1) ***जाति का मतलब है – शरीर।*** मनुष्य का शरीर, गाय का शरीर, घोड़े, कुत्ते, बिल्ली, हाथी, बंदर, मच्छर, मक्खी, सुअर आदि किसी का भी शरीर, यह है जाति।

- जाति एक बार जन्म से मिल गयी, तो मृत्युपर्यंत वो बीच में नहीं बदलती। जाति तो निश्चित है। भगवान ने हमारे कर्मानुसार हमको जन्म से जो जाति दे दी, वो जीवन भर रहेगी।

'आर्योद्देश्यरत्नमाला' में स्वामी दयानंद जी ने जाति की परिभाषा लिखी है। ***जो जन्म से मरणपर्यंत बदलती नहीं, उसको जाति***

कहते हैं। मनुष्य का शरीर मिला, तो पूरे जीवन भर जीते जी मनुष्य ही रहेगा, बीच में उसको तोड़–मरोड़कर कुत्ता, बिल्ली नहीं बना सकते।

- ***अगले जन्म में जाति (शरीर) बदल सकती है।*** बीच में जाति नहीं बदलेगी। आयु और भोग अवश्य बदल सकते हैं।

(2) ***आयु का मतलब – जीने का समय,*** जीने का काल।

- कर्मानुसार ईश्वर आयु देता है। पहले लोग अच्छे काम करते थे, खान–पान ठीक था, व्यायाम भी ठीक था, ब्रह्मचर्य का पालन भी करते थे, दिनचर्या का पालन भी करते थे, आदि आदि। लोग आयु बढ़ाने वाले कर्मों का आचरण करते थे तो भगवान सौ वर्ष की आयु देकर भेजता था। अब वो सारा कुछ बदल गया। खान–पान बिगड़ गया, जलवायु बिगड़ गई, दिनचर्या बिगड़ गई, ब्रह्मचर्य का पालन भी नहीं रहा और भी कई चीजें बिगड़ गईं। इसलिए भगवान अब सौ वर्ष की आयु देकर नहीं भेजता।

  भगवान किसी–किसी को सौ वर्ष की आयु देता है। जिसके जैसे कर्म होते हैं, उसको वैसी आयु देता है, कम भी देकर भेजता है। ***जैसा शरीर होगा, उसी के अनुसार आयु मिलेगी।*** मनुष्य शरीर मिला, तो मनुष्य शरीर में जितनी क्षमता है, उतनी आयु मिल जाएगी।

- ***आयु भी हर एक व्यक्ति की अलग–अलग है।*** किसी का शरीर मजबूत है, तो वो अस्सी साल तक जीएगा। किसी का शरीर कमजोर है, वो सत्तर साल जीएगा। किसी का और कमजोर है, तो उसका साठ में ही शांतिपाठ हो जाएगा।

- ***एक तो जन्म से आयु प्राप्त हुई। जन्म से जैसा, जितना बलवान शरीर मिला। यह तो है, पिछले जन्म के कर्मों का फल।*** मान लीजिए, किसी व्यक्ति को जन्म से ऐसा शरीर मिला कि यदि कोई दुर्घटना न होए, और ठीक–ठाक सामान्य रूप से जीता रहे, तो उसमें इतनी ताकत है कि वह सत्तर साल तक जी सकता है। तो यह आयु तो पिछले कर्मों से उसको मिली।

- ***भगवान जितनी आयु देकर भेजता है, उसकी भी गारंटी नहीं है, कि व्यक्ति उतने दिन जी ही लेगा।*** व्यक्ति तब जी सकता है, जबकि वह दुर्घटनाओं से बचता रहे। एक्सीडेंट होता है, मर जाते हैं। पैदा होते ही मरते हैं, दो साल के भी मरते हैं। उनकी सुरक्षा–देखभाल ठीक से नहीं हो पायी। इंफेक्शन हो गया, मर गए।

- कोई अच्छी तरह व्यायाम करके शरीर को बलवान बना लेगा, तो आयु बढ़ भी सकती है। ***अब अगर वह नया व्यायाम करके, पुरुषार्थ करके, ब्रह्मचर्य का पालन करके, ठीक खान–पान रखकर के, रोगों से बचता रहा, दुर्घटनाओं से बचता रहा, तो उसकी आयु दस–बीस वर्ष और बढ़ सकती है। सत्तर की थी, लेकिन वो नब्बे तक जी लिया। जो बीस वर्ष आयु बढ़ गई, यह इस जीवन के नए कर्मों का फल है।***

- ***इसी प्रकार से नए कर्मों से आयु को घटाया भी जा सकता है। कोई शराब पीने लगा, माँस अंडे खाने लगा, नशा करने लगा तो सत्तर से पचास में ही पूरा हो जाएगा। और अगर दुर्घटना हो गई, तो कभी भी मर सकता है।***

  एक की भूल के कारण दूसरे को नुकसान होता है। हम सड़क पर ठीक–ठाक चलते हैं। पीछे से ट्रक, कार वाला आकर के हमको ठोंकता है। उसकी गलती से हमको नुकसान होता है। ऐसे ही डॉक्टर की भूल से, नर्स की भूल से, मां–बाप की भूल से, बच्चे को नुकसान हो सकता है। उसकी मृत्यु हो सकती है, हाथ–पाँव, टेढ़े–मेढ़े हो सकते हैं, कुछ भी हो सकता है। विमान दुर्घटना में मारा गया, कुँए में कूद गया, उसने बिजली का तार पकड़ लिया, जहर पी लिया, कहीं ट्रेन की दुर्घटना में मारा गया, कुछ भी हो सकता है। ***दुर्घटनाओं के कारण आयु कभी भी नष्ट हो सकती है।*** और यदि दुर्घटनाएं नहीं हुई, तो अपने नये कर्मों से आयु को घटाया–बढ़ाया जा सकता है। यह हो गई आयु की बात।

(3) अब तीसरी बात है–भोग। ***भोग का अर्थ होता है – 'सेवन करने योग्य पदार्थ', सुख–दुःख को भोगने के साधन। जैसे –***

धन–संपत्ति, मकान, मोटर–गाड़ी, अन्न, वस्त्र, सोना–चाँदी फ्रिज, टी.वी., रेडियो ***इत्यादि।*** ये जितने सुख–दु:ख भोगने के साधन हैं, इनका नाम है – भोग।

- भोग भी इसी प्रकार से घटाया–बढ़ाया जा सकता है। मान लीजिए, एक व्यक्ति के पिछले कर्म बहुत अच्छे नहीं थे, इसलिए जन्म से उसको सामान्य गरीब परिवार में जन्म मिला। पाँच साल की उम्र तक जो घर की सामान्य सुविधाएं थी, उतनी ही मिलीं। अधिक अच्छा खानपान, अधिक अच्छे वस्त्र, अधिक सुविधा नहीं मिली। पाँच साल की उम्र में वह व्यक्ति स्कूल में पढ़ने के लिए गया। पढ़–लिखकर उसने खूब पुरुषार्थ किया। बुद्धिमान हो गया, एम.ए., पी.एच.डी हो गया। आगे चलकर उसको नौकरी भी मिल गयी। उसको अच्छा वेतन मिलने लगा। उसने खूब धन कमा लिया। धीरे–धीरे उसने अपना मकान भी अच्छा बना लिया। फिर धीरे–धीरे और अच्छा कमाकर के मोटरकार भी खरीद ली। ऐसे उसने भोग के साधन बढ़ा लिए।

  गरीब आदमी मेहनत करके नए पुरुषार्थ से भोग के साधन बढ़ा सकता है, उसमें वृद्धि और परिवर्तन कर सकता है।

- इसके विपरीत भी हो सकता है। किसी बच्चे के पिछले जन्म के कर्म अच्छे थे। उसको सेठ के घर जन्म मिला। जन्म से उसको खाने–पीने, भोगने की बढ़िया सुविधाएं मिलीं। लेकिन आगे जब वो विद्यार्थी बनकर स्कूल में पढ़ने गया, तब उसने मेहनत नहीं की, पुरुषार्थ नहीं किया, बुद्धि का विकास नहीं किया। जो जन्म से प्राप्त घर की संपत्ति थी, वो भी शराब पीने में, इधर–उधर यार–दोस्तों के साथ घूमने–फिरने में, मौज–मस्ती में नष्ट कर दी।

  बुद्धि का विकास किया नहीं, तो वो धीरे–धीरे नीचे आ जाएगा। जो संपत्ति पास में थी, वो भी खो बैठेगा।

  इस प्रकार से ***"सुख–दु:ख को भोगने के साधन", भोग कहलाते हैं। वो घटाए जा सकते हैं, बढ़ाए जा सकते हैं।*** इन साधनों को कोई छीन के भी ले जा सकता है, और कभी–कभी कोई दे भी सकता है।

62. शंका– क्या जाति, आयु, भोग निश्चित हैं, या इन्हें घटाया–बढ़ाया जा सकता है। इसकी सीमा क्या होगी?

☯ ***समाधान–*** जाति तो निश्चित है, बीच में जाति नहीं बदलेगी। आयु और भोग अवश्य बदल सकते हैं।

- जन्म के समय कुछ आयु और भोग ईश्वर ने हमको दिये। ये पिछले जन्मों के कर्मों के आधार पर दिए। वो भी सीमित (लिमिटेड) हैं।
- एक बात और, इस जन्म के नए कर्मों से हम अपनी आयु को बढ़ा भी सकते हैं।

  कल्पना कीजिए, परमात्मा ने हमारे शरीर में जन्म के समय इतनी शक्ति भर दी कि अगर सामान्य रूप से हम उसको खर्च करते रहें, तो हम अस्सी साल तक जी सकते हैं। यह अस्सी साल का जीवन हमारे पिछले कर्मों का फल, इतनी आयु है। अब हम इसको कैसे बढ़ाएंगे?

  अखबार में विज्ञापन आते हैं। विज्ञापन के नीचे एक स्टार लगा के लिखा रहता है – 'कंडीशन्स एप्लाइ' (शर्तें लागू)। भगवान भी हमारे कर्मानुसार हमको जाति, आयु, भोग देता है। वह कहता है कि जाति तो पूरे जीवन भर नहीं बदलेगी। लेकिन भोग और आयु बदल सकते हैं। परन्तु "कंडीशन्स एप्लाइ।" वो कंडीशन्स है:– ***'अगर आप भोग बढ़ाने वाले नए कर्म करोगे, तो भोग बढ़ जाएंगे।'*** अगर नहीं करोगे, तो भोग नहीं बढ़ेगा। ***आयु बढ़ाने वाले कर्म करोगे, तो आयु बढ़ेगी।*** और वैसे कर्म नहीं करोगे, तो आयु नहीं बढ़ेगी। वो कंडीशन्स पर डिपेन्ड करता है। भोग बढ़ भी सकते हैं, घट भी सकते हैं।

- आयु कैसे घटती–बढ़ती है, जानिए। मान लो, मैंने पाँच सौ रुपए की घड़ी बाजार से खरीदी। कम्पनी वालों ने कहा कि – ''भाई, इस घड़ी की तीन साल की गारंटी है। लेकिन यह गारंटी हम इस शर्त पर देते हैं कि आप इस घड़ी को ठीक तरह से इस्तेमाल करेंगे। इसे संभालकर प्रयोग करेंगे।''

अब आप घड़ी रेल की पटरी पर रख देंगे या हथौड़ा लेकर उस पर ठोंक देंगे, तो गारंटी क्या होगी? फिर एक सेकेंड की भी गारंटी नहीं है। घड़ी को दुर्घटना से बचाओ, धूप में मत फेंको, पानी में मत फेंको, सड़क पर मत फेंको, संभाल कर प्रयोग करो, तो यह तीन साल तक चलेगी। लेकिन तीन साल पूरे होते ही इसमें विस्फोट होने वाला नहीं है। इसके टुकड़े–टुकड़े भी नहीं होंगे। अच्छे ढंग से चलाओ तो घड़ी चार साल भी चलेगी। और वेल मेन्टेन करो, तो पाँच साल भी चलेगी। शरीर भी इसी प्रकार का है, यह भी भगवान की दी हुई एक मशीन है।

भगवान कहता है कि – तुम्हारे शरीर में मैंने अस्सी साल तक जीने की शक्ति भर दी है। ***अस्सी साल की गारंटी है। परन्तु याद रखो– "कंडीशन्स एप्लाइ"।*** आप जहर पी लोगे, आप रेल या ट्रक के आगे खड़े हो जाओगे, नदी में गिर जाओगे, तो कोई गारंटी नहीं। संभल के चलेंगे, तो अस्सी साल जिएंगे। फिर इस जन्म के नये कर्म करो, जैसे– व्यायाम करो, खान–पान ठीक रखो, संयम से खाओ, सात्त्विक भोजन खाओ, समय पर खाओ, अपने शरीर की प्रकृति के अनुकूल खाओ, मात्रा से थोड़ा कम खाओ, अधिक मत खाओ, रात को जल्दी सोओ, सुबह जल्दी उठो, ब्रह्मचर्य का पालन करो, ईश्वर की उपासना करो, दिनचर्या का पालन करो, ऋतुचर्या का पालन करो। इससे आपकी आयु बीस साल बढ़ जाएगी, सौ साल जी लेंगे। ऐसे आयु बढ़ती है।

- इस जन्म के नए कर्मों से हम अपनी आयु को घटा भी सकते हैं। अगर शराब पियो, माँस–अंडे खाओ, उल्टे–सीधे काम करो, बुरे विचार करो, देर तक जागते रहो, देर तक सोते रहो, भ्रष्ट आचरण करो, अच्छे काम मत करो और बुरे काम करो तो आपकी आयु घट जाएगी। बीस साल कम हो जाएगी, अस्सी साल वाले का बीस साल पहले ही शांति–पाठ हो जाएगा। साठ साल में उसका जीवन पूरा हो जाएगा। यदि सामने वाला गोली मारे या कहीं ट्रेन–एक्सीडेंट की लपेट में आ गए, तो आयु तुरंत घट जाएगी। इस तरह से हमारी आयु घटती है और बढ़ती है।

- अब भोग की बात जानिए। जन्म से जिस माता–पिता के घर में जन्म मिला, उनके पास अच्छी सम्पत्ति थी। इसलिए हमको पूर्वजन्म के कर्मों से अच्छा भोग मिल गया। अच्छी सम्पत्ति मिल गई।
- भोग घटते कैसे हैं? आगे इस जन्म के नए कर्म जैसे – हमने पढ़ाई नहीं की, अपनी बुद्धि नहीं बढ़ाई, विकास नहीं किया, धन–संपत्ति को नहीं संभाल सके, जुआ सट्टे में, शराब में, इधर– उधर दूसरे उल्टे–सीधे कामों में संपत्ति खो दी, कोई दूसरे लोग छीन–छान के ले गए, तो हमारे भोग घट गए।
- भोग बढ़ते कैसे हैं? जिस परिवार में हमको जन्म मिला। जो जन्म से पैतृक संपत्ति मिली। उससे हमने पढ़ाई–लिखाई की, बुद्धि का विकास किया। खूब अच्छी तरह से मेहनत की और खूब धन कमा लिया। अच्छी–अच्छी सुविधाएं घर में इकट्ठी कर लीं। इस प्रकार से हमारे इस जन्म के नए कर्मों से हमारे भोग बढ़ गए।

63. शंका– वेदों में मनुष्य की आयु निश्चित है या नहीं? है तो कितनी?

☯ ***समाधान–*** भारत में करोड़ों लोग ऐसा मानते हैं, कि हर व्यक्ति की मृत्यु कब, कहाँ, कैसे होगी, वो परमात्मा ने निश्चित कर रखी है। हम उसको बिलकुल घटा–बढ़ा नहीं सकते। जिस दिन हमारी मौत जहाँ लिखी है, वहीं पर होगी और उसी तरीके से होगी, जैसी भगवान ने निश्चित कर रखी है। यह बात गलत है। कारण कि:–

- ***वेदों में लिखा है कि आयु घटती है और बढ़ती है।*** वेदों में लिखा है कि मनुष्य की आयु फ्लेक्सिबल है। कोई मरने का दिन, समय, स्थान पहले से निर्धारित नहीं है।
- संध्या का एक मंत्र आप रोज बोलते होंगे – ''जीवेम् शरदः शतम्, भूयश्च शरदः शतात्।'' हे प्रभु ! हम सौ वर्ष तक, और सौ वर्ष से अधिक भी जिएं।

अगर किसी की मृत्यु भगवान ने तय कर दी कि यह पैंतीस वर्ष में मरेगा, अमुक हाईवे पर मरेगा, ट्रक के नीचे टकराकर मरेगा। वह आदमी यदि कहे कि – ''हे भगवान ! मैं सौ साल जियूँ।''

उसको यह सौ साल जीने की प्रार्थना भगवान ने सिखाई। इसका मतलब यह है कि भगवान हमसे झूठ बुलवाता है। एक ओर तो कहता है कि – ''तुम्हें पैंतीस से आगे तो जाने ही नहीं दूँगा।'' दूसरी ओर कहता है :– ''मुझसे बोलो कि 'मैं सौ साल जियूँ, सौ से ऊपर भी जियूँ।'' यह विरोधाभास है।

जब हम प्रार्थना करते हैं – 'हे ईश्वर! हम सौ वर्ष जिएं, सौ से अधिक भी जिएं'। इसका मतलब यह है कि हमारी आयु निर्धारित नहीं है। हम कभी भी उसको घटा–बढ़ा सकते हैं।

- मान लीजिए कि एक व्यक्ति नेशनल–हाईवे पर स्कूटर से जा रहा था और पीछे से उसको ट्रक वाले ने टक्कर मार दी। लोग कहते हैं – साहब देखो, इसकी मौत यहीं लिखी थी। थोड़ी देर के लिए मान लिया कि भगवान ने लिखा था कि इसको इस दिन, यहाँ पर मरना है और ट्रक ड्राइवर ने ईश्वर के आदेश का पालन किया। ट्रक वाले ने उसको मार दिया। अब यह बताइए, जब ट्रक ड्राइवर ईश्वर के आदेश का पालन कर रहा है, तो उस पर मुकदमा करना चाहिए या उसको ईनाम देना चाहिए?
- वेद में लिखा है कि ईश्वर के आदेश का पालन करना धर्म है। और धर्म का फल सुख है। उसको तो सुख देना चाहिए, उस पर मुकदमा क्यों करो? ***क्या आप इस बात को मानने के लिए तैयार हैं कि जो ट्रक वाला किसी को ठोकर मार दे, तो उस पर आप मुकदमा नहीं करेंगे, बल्कि ट्रक ड्राइवर को ईनाम देंगे? क्योंकि आप इस बात को मानते हैं कि इसकी मौत ईश्वर ने यहीं लिखी थी।*** आप कहते हैं कि ईनाम नहीं देंगे। इसका मतलब हुआ, वह अपराधी है, तभी तो उस पर मुकदमा करते हैं। इसलिए वह मृत्यु ईश्वर की लिखी हुई नहीं है। ट्रक वाले की लापरवाही से दुर्घटना के कारण हुई है।

एक उदाहरण सुनिए – एक आतंकवादी ने बीस लोगों को मार दिया। कालान्तर में वह पकड़ा गया, उस पर कोर्ट में मुकदमा चला और प्रमाणित हो गया कि इसने बीस लोगों को मारा है।

न्यायाधीश महोदय ने कागज पर लिख दिया कि इसको इक्कीस दिसंबर को सुबह ग्यारह बजे फाँसी पर लटका दिया जाए। वह लिखित आदेश जल्लाद के पास आया। जल्लाद ने न्यायाधीश के आदेश का पालन किया और इक्कीस दिसंबर को सुबह ग्यारह बजे उस आतंकवादी को फाँसी पर लटका दिया। क्या जल्लाद अपराधी है या नहीं है? उस पर मुकदमा करेंगे कि नहीं करेंगे? नहीं करेंगे, बल्कि उसको वेतन देंगे।

जल्लाद न्यायाधीश के आदेश का पालन करता है, और वह अपराधी नहीं कहलाता तो इसी प्रकार जो ट्रक ड्राइवर है, वो भी ईश्वर के आदेश का पालन कर रहा है, वह अपराधी क्यों होगा? उसको भी वेतन दो, ईनाम दो, तब तो हम मानें, कि हाँ भगवान का दिया हुआ आदेश है। अगर आप, जो भी मनुष्यों को मारें, उनको ईनाम देना शुरु कर दें, तो मैं यह मानने के लिए तैयार हूँ, कि हाँ वो भगवान ने लिखा है। तैयार हैं आप लोग? अगर नहीं, तो इसका मतलब, वह कथन झूठ है, ईश्वर का आदेश नहीं है। जैसे आतंकवादी ने कानून तोड़ा और निर्दोष लोगों को मारा, इसलिए वो अपराधी माना गया। ऐसे ही उस ट्रक ड्राइवर ने कानून को तोड़ा और निर्दोष व्यक्तियों को मारा, इसलिए वो अपराधी गिना गया। इसलिए उस पर मुकदमा हुआ। इससे सिद्ध हुआ कि, यह सब भगवान का लिखा हुआ नहीं है।

64. शंका– स्वाभाविक आयु कितनी है?

☯ ***समाधान***– उत्तर है:–

- हर एक की स्वाभाविक आयु अलग–अलग है। क्योंकि हर एक के कर्म अलग–अलग हैं, इसलिए हर एक का फल भी अलग–अलग है। इसलिए हर एक के शरीर में शक्ति अलग–अलग भरी है।
- ***परमात्मा ने जन्म के समय हमारे शरीर में जितनी शक्ति भर दी, वो शक्ति जब तक चलेगी, बस तब तक हमारी उमर है।*** वो शक्ति कोई सत्तर साल में खर्च करेगा, कोई अस्सी साल तक, कोई सौ साल तक खर्च करेगा।
- आयुर्वेद आयु (जीवन) के बारे में बताता है। आयुर्वेद में एक सौ एक प्रकार की मृत्यु लिखी हुई है। और लिखा है कि उसमें से

केवल एक मृत्यु स्वाभाविक (काल मृत्यु) है। ***केवल एक मृत्यु है स्वाभाविक। वह हमारे कर्म के फल से होती है और वो अत्यंत वृद्धावस्था में होती है। जब शरीर की सारी शक्ति खत्म हो जाती है, तब जीवात्मा शरीर छोड़ देता है, यही है स्वाभाविक मृत्यु।***

जैसे मान लीजिए, एक व्यक्ति ने अपनी टॉर्च में दो बैटरी सेल डाल रखें हैं। वो टार्च को थोड़ा–थोड़ा प्रतिदिन प्रयोग करता है, धीरे–धीरे बैटरी सेल की शक्ति घटती जाती है और घटते–घटते एक दिन बिलकुल खत्म हो जाती है। अब आगे बैटरी सेल से वो टॉर्च नहीं जलती। जैसे बैटरी सेल की शक्ति धीरे–धीरे खत्म हो जाती है, यह उसकी 'स्वाभाविक–मृत्यु' (नेचुरल–डेथ) है। इसी प्रकार से शरीर की शक्ति धीरे–धीरे खर्च होते–होते, अत्यंत वृद्धावस्था में सारी शक्ति खत्म हो जाती है, बिल्कुल बैटरी सेल की तरह, उसका नाम है– स्वाभाविक मृत्यु (नेचुरल डेथ)।

- बाकी सौ प्रकार की मृत्यु अस्वाभाविक, आकस्मिक, अकाल–मृत्यु या एक्सीडेंटल डेथ है। यह पहले से लिखी हुई (डिसाइडेड) नहीं है। अगर कोई उस बैटरी सेल के ऊपर हथौड़ा मार दे, और तोड़ डाले, तो यह बैटरी सेल की अकाल मृत्यु (एक्सीडेन्टल डेथ) है। स्वाभाविक मृत्यु के पहले सौ प्रकार से मृत्यु हो सकती है। कोई जहर पी ले, कोई पंखे पर लटक जाए, कोई नदी में कूद जाए, कोई पिस्तौल से गोली मार ले, कोई बिजली का तार पकड़ ले, कोई ट्रेन के नीचे कट जाए, कोई प्लेन–क्रेश में मारा जाए, कोई ट्रेन–एक्सीडेंट में मारा जाए, कोई रोड–एक्सीडेंट में मारा जाए, कोई आतंकवादी गोली मार दे, कहीं पहाड़ से खाई में गिर जाए, पता नहीं कितने तरीकों से मर सकता है व्यक्ति। ये सब की सब दुर्घटना से ***अकाल मृत्यु यानि एक्सीडेंटल–डेथ हैं। यह पहले से निश्चित नहीं।*** इसलिए सड़कों पर लिखा रहता है कि – "सावधानी हटी, दुर्घटना घटी"। इसलिए सावधानी से चलो, दुर्घटनाओं से बचो। इस प्रकार हमारी आयु को घटाना–बढ़ाना हमारे हाथों में है।

65. शंका– वन्य पशु–पक्षी अपना जीवन स्वच्छन्दता से जीते हैं। इसके बावजूद क्या वे दुःखी हैं अथवा क्या ईश्वर ने इन्हें सृष्टि–नियमन के लिए बनाया है?

☯ ***समाधान–*** इन दो प्रश्नों के उत्तर निम्नलिखित हैं:–

- ईश्वर ने इन्हें सृष्टि नियमन के लिए भी बनाया है, और कर्म फल देने के लिए भी बनाया है। ***सृष्टि की व्यवस्था, नियंत्रण, संतुलन भी चलता रहे और जीवात्माओं को उनके कर्मों का फल भी दिया जाए, ये दोनों ही कारण हैं।***
- अगला प्रश्न है कि क्या वे दुःखी हैं? हाँ, वे दुःखी तो हैं ही।
- यहाँ प्रश्न उठता है– यह कैसे पता चला, कि वे दुःखी हैं? उत्तर है – सुख का कारण है–बुद्धि। ***जिस मनुष्य की बुद्धि अच्छी और अधिक होती है, वो सुखी रहता है। जिसकी बुद्धि खराब और कम होती है, वो दुःखी रहता है। इसी प्रकार से बाकी प्राणियों में तो बुद्धि कम है, इसलिए वे उतने सुखी नहीं हैं।*** उनकी बहुत सी समस्याएं हैं।
- मनुष्य को जो बुद्धि उपलब्ध है, जितना पुरुषार्थ करके वह उस बुद्धि का विकास कर सकता है, उतनी बुद्धि दूसरे प्राणियों के पास नहीं है। वे न तो अपनी बुद्धि का उतना विकास कर सकते हैं, न ही अपनी समस्याओं को सुलझा सकते हैं। उनको एक बँधे–बँधाए रूटीन में जीना होता है। कभी कोई आक्रमण करता है, कभी कोई और आक्रमण करता है। बेचारों को हर समय जान बचाने की टेंशन होती है। इसलिए वो दुःखी तो रहते ही हैं।
- एक व्यक्ति ने मुझसे प्रश्न किया – आप कैसे कह सकते हैं, कि कुत्ता, गौ आदि पशु अधिक दुःखी हैं, और मनुष्य ज़्यादा सुखी है। मैंने उत्तर दिया – मान लीजिए, मोहन ने राजेश से पूछा – आपको मासिक वेतन कितना मिलता है? राजेश ने कहा :– 20,000 रुपये मासिक। मोहन– मैं आपको 25,000 रुपये मासिक दूँगा, क्या आप मेरी कम्पनी में काम करेंगे? हाँ या न? राजेश ने कहा:– हाँ। फिर मोहन ने राजेश से पूछा– मैं आपको 15,000 रुपये मासिक दूँगा, क्या आप मेरी कम्पनी में काम करेंगे? हाँ या न ?

राजेश ने कहा :– न। इससे क्या समझ में आया? जब व्यक्ति को लाभ दिखता है, तो वह 'हाँ' बोलता है। जब हानि दिखती है, तो वह 'न' बोलता है। इसी तरह से मैंने उस व्यक्ति को यह दृष्टान्त सुनाकर पूछा– क्या आप अगले जन्म में कुत्ता बनना चाहेंगे ? हाँ या न? वह व्यक्ति बोला–न। इससे सिद्ध हुआ कि कुत्ता, गौ आदि बनने में दुःख अधिक है। और मनुष्य बनने में सुख अधिक है।

66. शंका– अगर पशु योनि में बुद्धि नहीं है, तो उनकी क्रिया जैसे कि लागणी, प्रेम, स्वरक्षण जैसे गुण कहाँ स्थित होते हैं?

☯ ***समाधान***– हमने ऐसा तो कभी नहीं कहा कि पशु योनि में बुद्धि नहीं है। मैंने यह नहीं कहा था कि केवल मनुष्यों के पास बुद्धि है, पशु–पक्षियों के पास नहीं। हम तो मानते हैं कि पशुओं में बुद्धि होती है।

मैंने यह कहा था कि ***जितनी बुद्धि मनुष्य के पास है, इतनी बुद्धि पशु–पक्षियों के पास नहीं है।*** मनुष्यों के पास जैसी बुद्धि है और पढ़–लिखकर मनुष्य जितनी बुद्धि का विकास कर सकते हैं, ऐसी बुद्धि प्राणियों के पास नहीं है और वो इतना विकास नहीं कर सकते, जितना कि मनुष्य कर सकता है।

इसका अर्थ हुआ कि पशु–पक्षियों, कीड़े–मकोड़ों में भी बुद्धि है, पर कम है। इतनी कम बुद्धि के आधार पर वो अपना जीवन चला लेते हैं। पशु–पक्षियों के छोटे–छोटे बच्चे होते हैं, वे उनके प्रति राग रखते हैं, उनको खिलाते–पिलाते हैं, उनकी रक्षा भी करते हैं, अपनी रक्षा भी करते हैं। इतना काम वो कर सकते हैं। इतनी बुद्धि उनमें है।

67. शंका– कई श्रेष्ठ व्यक्ति अपने सेवाभावी कार्यों के लिए जाने जाते हैं। परंतु उन्होंने कभी वेद के अनुसार ईश्वर की उपासना नहीं की। ईश्वर इन्हें दण्ड देगा या पुरस्कार?

☯ ***समाधान***– उन्होंने जितने काम अच्छे किए हैं, उतना तो उनको ईश्वर ईनाम देगा। *और जो वेद के अनुकूल ईश्वर की उपासना*

नहीं की, उतना उनको दण्ड मिलेगा। वास्तव में 'कर्म न करने' का दण्ड नहीं होता। दण्ड होता है, 'निषिद्ध कर्म करने का।'

'ईश्वर की उपासना' विहित कर्म है। यह उन्होंने नहीं किया। इसलिए ईश्वर से जो आनंद मिलता है, वो इनको नहीं मिलेगा। और जो उन्होंने 'संसार की उपासना' की, यह निषिद्ध कर्म है। यह उन्होंने किया। इसका दण्ड मिलेगा। और वह दण्ड होगा– अविद्या, राग, द्वेष आदि दोषों की वृद्धि, सकाम कर्म करना और बार–बार संसार में जन्म लेकर दुःखों को भोगना। यदि वे लोग वेद के अनुसार ईश्वर की उपासना भी करते, तो उन्हें पुरस्कार (मोक्ष) भी मिलता। अब मोक्ष नहीं मिलेगा।

68. शंका– छोटी बच्ची के साथ दुष्कर्म करना, छोटे बच्चों को पकड़कर अंग काटना, भीख मँगवाना आदि करने वालों के विरुद्ध भगवान अपनी शक्ति क्यों नहीं दिखाता? उन बच्चों ने क्या अपराध किया?

☯ ***समाधान***– उत्तर है:–

- एक सिद्धांत है कि, व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। अगर कोई व्यक्ति चोरी करता है, डकैती करता है, लूटमार करता है, शोषण करता है, अंग–भंग करता है, अन्याय करता है, और ईश्वर उसका हाथ पकड़ ले तो क्या तब वो स्वतंत्र माना जाएगा? नहीं माना जाएगा।
- ***चाहे चोरी, अन्याय, शोषण या लूटमार कुछ भी करो। व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। इसलिए ईश्वर तत्काल उस समय हाथ नहीं पकड़ता।***

तीन घंटे की परीक्षा है। विद्यार्थी को प्रश्न–पत्र दे दिया। तीन घण्टे तक कुछ भी सही–गलत लिखो। मान लो, अध्यापक ने वहीं चक्कर मारते–मारते देख लिया कि वह गलत उत्तर लिख रहा है तो क्या अध्यापक उसका हाथ पकड़ लेगा कि तुम गलत मत लिखो? तीन घंटे तक आप (विद्यार्थी) कुछ भी लिखो, आपकी मर्जी। इसी प्रकार से व्यक्ति कुछ भी करे, ईश्वर वहाँ अपनी शक्ति नहीं दिखाता।

- कर्म करने में हम 'स्वतंत्र' हैं, फल भोगने में 'परतंत्र' हैं। ***जब फल देने का समय आता है, तब ईश्वर फल देता है।*** जैसे तीन घंटे पूरे होंगे, तभी तो नंबर मिलेंगे, बीच में नम्बर नहीं मिलते। बीच में उसका हाथ नहीं पकड़ा जाता है। उसके बाद में उत्तर पुस्तिका हमारे (परीक्षक के) पास में आएगी, फिर हमारी (परीक्षक की) मर्जी चलेगी। जो आपने किया उसके आधार पर नम्बर मिलेंगे।

  वैसे ही हमारे जीवन के तीन घंटे तब पूरे होते हैं, जब मृत्यु आती है। पहला घंटा बचपन है, दूसरा जवानी है, तीसरा बुढ़ापा है। और उसके बाद जब घंटी बजती है तो शांतिपाठ होता है (मृत्यु होती है), फिर नंबर मिलते हैं। ईश्वर अपनी शक्ति कब दिखाता है? ***जब उसका अवसर आता है, तब ईश्वर अपनी शक्ति दिखाता है।***
- जिसने अच्छे कर्म किए, उसको ईश्वर मनुष्य बना देंगे। जिसने चोरी, बदमाशी, उल्टे-सीधे काम किए। उसको सुअर, गधा, बिल्ली, मच्छर, मक्खी, उल्लू, आदि बना देंगे।
- कुछ कर्मों का फल इसी जन्म में भी मिलता है और कुछ का आगे भी मिलता है।

69. शंका– जब तक हम स्थूल (शारीरिक, वाचनिक) रूप से किसी पर प्रभाव नहीं डालते, तब तक गुनाह नहीं हो सकता। मन में एक पल के लिए बुरा विचार आया और अगले ही पल विचार बदल गया। तो विचार मात्र से पाप क्यों माना जाए अर्थात् बिना क्रिया के परिणाम या फल कैसे ?

☯ ***समाधान***– हमने मन में कुछ बुरा विचार किया और अगले ही पल उस विचार को बदल दिया, यानि कोई बुरा विचार किया, लेकिन उसकी क्रिया नहीं की और फिर वो बुरा विचार मन से हटा दिया। हमारे विचारमात्र से कोई प्रभावित या सुखी-दु:खी नहीं होता तो इसमें पाप क्यों माना जाए? यह प्रश्न है।

- ***भले ही हमारे बुरे विचार से दूसरों का कोई नुकसान नहीं हुआ, वाणी से हमने कुछ नहीं कहा, शरीर से किसी पर कोई अत्याचार नहीं किया, केवल मन ही मन में बुरा सोचा। इससे दूसरों को तो प्रत्यक्ष रूप से कोई नुकसान नहीं हुआ, लेकिन हमारा नुकसान जरूर हुआ।***

  अगर हम गलत योजना बनाते हैं, बुरी योजना बनाते हैं, तो इससे हमारे संस्कार अवश्य बिगड़ेंगे और आगे हम भविष्य में भी गलत योजनायें बनायेंगे और गलत काम करेंगे। हर बार ऐसा थोड़े होगा कि हमने योजना बनाई, और बदल दी। हर बार बदलेंगे नहीं। कई बार तो कर ही डालेंगे। तो हमारे विचार, संस्कार न बिगड़ें, इसलिए हमको मन मे भी बुरी बात नहीं सोचनी चाहिए।

  यहाँ एक और सावधानी रखने की बात यह है कि, मानसिक कर्म में दो स्थितियाँ हैं। एक स्थिति में तो केवल 'विचार' मात्र है, वो कर्म नहीं माना जायेगा। जबकि दूसरी स्थिति में, वो 'कर्म' भी माना जायेगा।
- पहली स्थिति क्या है? एक व्यक्ति ने मन में सोचा– झूठ बोलूँ, या नहीं बोलूँ? यहाँ दिमाग में दो पक्ष हैं कि, **मैं झूठ बोलूँ, या फिर नहीं बोलूँ? यहाँ तक तो इसका नाम है – 'विचार'।** अभी यह कर्म नहीं बना। इसका कोई दंड नहीं है।
- अगर दो निर्णयों में से एक निर्णय कर लिया कि '**आज झूठ बोलूँगा**'। **ऐसा निर्णय कर दिया, तो यह 'कर्म' बन गया।** इसका दंड जरूर मिलेगा। 'आज चोरी करूँगा', यदि मन में यह फैसला कर लिया, फिर बाद में चाहे हम शरीर से न करें, यानी योजना बदल दें, लेकिन एक बार योजना बन गई, निर्णय कर लिया कि आज चोरी करनी है, तो वो कर्म बन जाएगा, **इसलिए इसका दंड भी अवश्य मिलेगा।** यह 'मानसिक-कर्म' है। इसका 'मानसिक-दंड' मिलेगा। इससे हमारे संस्कार बिगड़ेंगे।
- सावधानी रखें और गलत योजनाएं कतई नहीं बनाएं। विचार गलत आते हैं, अच्छे आते हैं, वो आते ही रहते हैं। वो कोई बड़ी बात नहीं है। मन में उठने वाले प्रत्येक विचार का सतत परीक्षण और

निरीक्षण करें कि, मैंने जो विचार उठाया, वह ठीक है या गलत ? गलत है, तो उस पर लगाम (ब्रेक) लगाएं। उसको तुरंत निकाल दें।

- जो ठीक विचार हैं, उनको मन में रखें। ***ठीक विचारों के अनुसार ही 'योजनाएं' बनाएं और सिर्फ योजनाएं ही नहीं बनाएं 'आचरण' भी करें।*** बहुत सारे लोग सिर्फ योजनाएं ही बनाते रहते हैं, उसके अनुसार काम नहीं करते। उससे कोई विशेष लाभ नहीं है, विशेष उन्नति नहीं है।

70. शंका– किस प्रकार के कर्मों के आधार पर स्त्री या पुरुष का जन्म मिलता है?

☯ ***समाधान–*** भई, ये पूरे–पूरे तो मुझे भी समझ में नहीं आए, तो मैं आपको कैसे बताऊँ कि कौन से कर्म करेंगे तो स्त्री बनेंगे, और कौन से कर्म करेंगे तो पुरुष बनेंगे। मुझे इतना समझ में आया कि बस अच्छे से अच्छा कर्म करो। अब भगवान जो बनाना होगा, बना देगा।

कई लोगों के दिमाग में यह बात बैठी हुई है कि, स्त्री जन्म अच्छा है। कई लोगों के दिमाग में यह बात बैठी है कि पुरुष जन्म अच्छा है। जो सत्य है, वो सत्य है। सत्य को जानना–समझना चाहिए और सत्य को खुलकर स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि उससे हमारी उन्नति होती है।

- वैसे तो स्त्री और पुरुष दोनों एक ही योनि में हैं, मनुष्य योनि में। ***मनुष्य योनि की दृष्टि से दोनों बराबर हैं।*** इसमें कोई ऊँचा–नीचा नहीं है। क्या स्त्रियों का बस में आधा टिकट लगता है और पुरुषों का पूरा लगता है? नहीं न। इस हिसाब से दोनों भारत के समान नागरिक हैं। दोनों को समान अधिकार है, वोट देने का अधिकार बराबर है। अधिकार की दृष्टि से दोनों बराबर हैं। जहाँ स्त्रियों का आधा वोट है, वह गलत बात है। यह वेद के अनुसार अन्याय है। ***वेद में स्त्री और पुरुष दोनों को बराबर बताया है।***

अधिकार तो दोनों का एक दूसरे पर बराबर होता है।

व्यावहारिक दृष्टि से किसी–किसी क्षेत्र में स्त्रियाँ ऊपर हैं, पुरुष छोटे हैं। किसी क्षेत्र में पुरुष बड़े हैं तो स्त्रियाँ छोटी हैं। वो अलग–अलग क्षेत्र हैं। कौन सा क्षेत्र है इसमें? अब ये जाने:–

- वेद कहता है – ***जब बालक के साथ माता–पिता का संबंध हो, तो माता बड़ी और पिता छोटा।*** माता का नंबर पहला, माता सबसे पहली गुरु है। अगर पहली गुरु बुद्धिमान हो, तो बच्चा बुद्धिमान बनेगा। और पहली गुरु ही मूर्ख हो तो बच्चा मूर्ख बनेगा।
- शास्त्रों में स्त्री को 'पूज्य' कहा है। उसे अधिक सम्मान देने का विधान है। यहाँ पुरुष छोटा और स्त्री बड़ी। यह एक क्षेत्र है।
- और दूसरा क्षेत्र है, पति–पत्नी का। ***जब पति–पत्नी का आपस में संबंध हो, तो वहाँ पति बड़ा और पत्नी छोटी।*** वहाँ यह नियम है। अब बताइए, क्या चाहिए आपको, एक तरफ पुरुष बड़े हैं, एक तरफ स्त्रियाँ बड़ी हैं।
- हाँ, यह ठीक है कि कहीं ***व्यावहारिक दृष्टि से कुछ समस्याएं पुरुषों के साथ कम हैं, और स्त्रियों के साथ कुछ अधिक हैं। कुछ हमारी जिम्मेदारियाँ रहती हैं व्यवहार की। उसमें स्त्रियों पर बंधन अधिक रहते हैं, पुरुषों पर उतने नहीं होते हैं। स्त्रियों का जीवन अधिक बाधित रहता है। इनको माँ बनना पड़ता, पुरुष तो बनेगा नहीं। शुद्धि की दृष्टि से स्त्री का शरीर ज्यादा गंदा होता है। महीने के कुछ दिन शारीरिक दृष्टि से विवशता रहती है। पुरुष का शरीर अधिक सख्त और बलवान होता है, स्त्री में कोमलता होती है। वातावरण को सहन करने की क्षमता पुरुष में अधिक होती है। पुरुष अधिक कार्य कर सकता है। स्त्री का शरीर जल्दी विकसित होता है और बीस–पच्चीस साल के बाद शिथिल हो जाता लेकिन पुरुषों में चालीस साल तक बढ़ता है। इसलिए विद्या आदि पढ़ने का अवसर पुरुष में अधिक होगा।***
- पुरुष तो अकेला घूम लेगा, खा लेगा, कहीं रात को दो बजे प्लेटफार्म पर सो जाएगा, उससे कोई पूछने वाला नहीं। वो तो अकेला ही

पूरे देशभर में घूम आएगा। पर स्त्रियों को इतनी सुविधा नहीं है। उस दृष्टि से हमको स्वीकार करना पड़ता है। बाकी तो मनुष्यता की दृष्टि से दोनों बराबर हैं। इसमें कोई ज्यादा हीन भावना (*इंफीरियरटी कॉम्पलेक्स*) की जरूरत नहीं है।

- आयु के कारण अनुभव में भेद होता है। पति अधिक आयु का होता है। इसलिए उसका अनुभव ज्यादा होता है। ***परीक्षाफल की दृष्टि से स्त्री आगे है क्योंकि पुरुष उतनी मेहनत नहीं करते। इतिहास देखेंगे तो पुरुष ज्यादा विद्वान रहे हैं। विद्या का आरम्भ हमेशा पुरुषों से हुआ है। वेद हमेशा ऋषि (पुरुष) को ईश्वर देता है।***
- वेद में लिखा है, स्त्रियाँ बेशक पढ़ सकती हैं। 'सत्यार्थ–प्रकाश' में महर्षि दयानंद जी ने लिखा – अगर ईश्वर का प्रयोजन स्त्रियों को पढ़ाने में न होता, तो इनके शरीर में आँख और कान क्यों रखता। ***वे भी वेद पढ़ सकती हैं, वे भी वैराग्य प्राप्त कर सकती हैं, वे भी संन्यास ले सकती हैं। पर वे प्रायः संन्यास लेती नहीं, झगड़े करती हैं, तो हम क्या करें?*** वे प्रायः झगड़ा ज्यादा करती हैं, राग–द्वेष ज्यादा करती हैं, वेद पढ़ती नहीं हैं, तो दोष इनका है। बाकी इनका चाँस पूरा है।

  ''ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्'' अर्थात् अथर्ववेद में लिखा है कि – ''कन्या को भी ब्रह्मचर्य का पालन करके, वेद पढ़ने का पूरा अधिकार है। और विद्या पढ़कर फिर विवाह करना चाहिए।'' तो छूट सबको है, बाकी कोई करे या न करे, वो उसकी मर्जी।
- सामान्यतः पुरुष स्त्री नहीं बनना चाहता, लेकिन स्त्री पुरुष बनना चाहती हैं। इस दृष्टि से पुरुष कुछ बड़ा सिद्ध होता है।

71. शंका– स्वामी सत्यपति जी ने इतने अच्छे कर्म किए, फिर भी उन्हें रोगों से क्यों पीड़ित होना पड़ रहा है?

☯ ***समाधान–*** उन्होंने अपनी ओर से तो अच्छे कर्म किए। पर क्या दूसरों ने भी उनके साथ अच्छे कर्म किए? क्या उनको वैसी सारी

अनुकूलताएं मिलीं, जैसी मिलनी चाहिए? नहीं मिलीं। बहुत सारे कारण होते हैं:–

- अपने कारण से भी कहीं–कहीं गलतियाँ होती हैं। ***व्यक्ति अपने खराब कर्मों के कारण रोगी या दुःखी हो सकता है।*** भारत–पाकिस्तान जब से डिवाइड हुआ, तब से स्वामी सत्यपति जी ने अपना जीवन बदला। उसके बाद तो उन्होंने अच्छे–अच्छे काम किए, इसमें कोई संशय नहीं है। पर उसके पहले का जीवन गुरुजी बताते हैं, पहले कुछ अनपढ़ थे, स्कूल में गये नहीं, पशु चराते थे और बचपन में कुछ गलतियाँ, कमियाँ हो सकती हैं। कुछ उसका परिणाम है।
- ***दूसरों के अन्याय से उसको परेशानी भोगनी पड़ सकती है।*** जैसे स्वामी दयानंद ने अच्छा काम किया, वेद का प्रचार किया। फिर भी कितने लोगों ने उनको पत्थर मारे, जहर खिलाया, साँप फेंके, कितने आरोप लगाए। ये कोई उनके अच्छे कर्मों का फल थोड़े ही था। यह तो ईर्ष्यालु लोगों का अन्याय था। कितनी बार लोगों ने जहर पिला दिया धोखे से। इस प्रकार दूसरों के अन्याय से भी हमको परेशानी होती है, कष्ट होता है, रोग आ जाते हैं, दुःख आ जाते हैं।

  कुछ बाद में जो स्वामी सत्यपति जी को खाने–पीने की सुविधा मिलनी चाहिए थी, वो ठीक तरह से नहीं मिली।
- ***हो सकता है कोई पैतृक–दोष भी हो।*** जो आनुवांशिक (जेनेटिक) बोलते हैं, हेरीडिटी से सम्बन्धित। हमारे पैतृक–दोष के कारण भी कुछ रोग और दोष आ सकते हैं। कुछ वो कारण भी हो सकते हैं। यह जो हेरीडिटी से आ रहा है, यह प्रारब्ध है। ऐसा नहीं होता कि पिछले जन्म के कर्मों का फल आज अचानक से ईश्वर यूँ चिपका दें। प्रारब्ध का जो फल है, वो हेरीडिटी से मिलेगा, पैतृक रोगों के रूप में मिलेगा, वहीं से आएगा जेनेटिकली।
- कहीं ***प्राकृतिक कारणों से भी हमको रोग और दुःख आ सकते हैं।*** और बहुत सारे कारण हैं।

इस जन्म के दुःख के तीन कारण है :– अपनी गलतियाँ, दूसरों के द्वारा किया गया अन्याय और प्राकृतिक दुर्घटनाएं। आनुवांशिक को मिलाकर, दुःख के चार कारण हो सकते हैं। इनमें से कौन सा कारण कितना रोग या दुःख उत्पन्न कर रहा है, यह पूरा–पूरा जानना–समझना और कहना बहुत कठिन है।

72. *शंका– महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण और अर्जुन के द्वारा सैकड़ों लोगों का वध करने पर भी उनको मोक्ष कैसे प्राप्त हुआ?*

☯ ***समाधान–*** श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों क्षत्रिय थे। दोनों ने महाभारत युद्ध किया और करवाया और सैकड़ों, हजारों लोग मरवाए। इनमें से किसी को भी मोक्ष नहीं मिला। अब देखना, झगड़ा करेंगे लोग। कहेंगे – अरे ! श्रीकृष्ण जी को मोक्ष नहीं मिला, आप क्या बोल रहे हैं। आप मेरी बात को समझने की कोशिश करेंगे:–

- 'सत्यार्थ–प्रकाश' के पाँचवे समुल्लास में महर्षि दयानंद जी लिखते हैं कि – ''मोक्ष केवल संन्यासी का होता है, और किसी का नहीं होता। और संन्यास लेने का अधिकार मुख्य रूप से ब्राह्मण को है।'' तो दो बातें हो गईं, ***मोक्ष के लिए संन्यास जरूरी है और संन्यास के लिए ब्राह्मण बनना जरूरी है।***
- ***अब यह बताइए कि श्रीकृष्ण जी ब्राह्मण थे, या क्षत्रिय थे? क्षत्रिय थे। फिर वो बाद में संन्यासी बने या नहीं बने? नहीं बने। तो बताइए, उनका मोक्ष कैसे होगा?***
- श्री कृष्ण को योगेश्वर कहते हैं। योगेश्वर का मतलब योगाभ्यास करते थे, योग–विद्या जानते थे, अभ्यास (प्रैक्टिकल) करते थे, सत्तर–अस्सी प्रतिशत तक पहुँचे, अभी बीस प्रतिशत बाकी था, सौ प्रतिशत तक नहीं पहुँचे। जो व्यक्ति गणित (मैथ्स) में एम.एस. सी कर लें, क्या उसको गणितज्ञ (मैथेमेटिशियन) नहीं कहेंगे? गणितज्ञ तो कहेंगे, पर अभी उसने मैथ्स में पी.एच.डी. नहीं की। वो थोड़ी बाकी है।

- श्रीकृष्ण जी ने सत्तर–अस्सी प्रतिशत योग्यता बनाई, दस–बीस प्रतिशत बाकी थी। वो अगले जन्म में, या और एक दो जन्म के बाद, उन्होंने पूरी कर ली होगी। जब पूरी कर ली तो उसके बाद मोक्ष हो सकता है।
- वीरगति का क्या अर्थ है? वीरगति का अर्थ–अच्छे जन्म की प्राप्ति। अगले जन्म में अच्छा उत्तम फल प्राप्त करना, यह वीरगति है।

  जो क्षत्रिय अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अर्थात् न्याय की रक्षा के लिए लड़ते हुये युद्ध में जाकर के शहीद हो जाता है, फिर चाहे हारे या जीते, उससे कोई मतलब नहीं है। उसने अपना कर्तव्य पूरा किया, वो वीरगति को प्राप्त होगा। उसको आगे अच्छा फल मिलेगा। उसने कर्तव्य का पूरा पालन किया। कोई पाप नहीं किया, बुरा काम नहीं किया, यह तो हमने बिल्कुल स्वीकार किया।
- मोक्ष की योग्यता पूरी हो जाना, यह एक अलग बात है। उसके लिए ब्राह्मण के बाद फिर संन्यासी बनना अनिवार्य है। ब्राह्मणत्व और संन्यास जब तक हम धारण नहीं करते, तब तक मोक्ष नहीं होगा। इससे पहले मोक्ष नहीं होने वाला। यह सब करने का उद्देश्य पाँच क्लेशों का नाश करना है। संन्यासी बनने के बाद समाधि लगाकर के अविद्या आदि पाँच क्लेश पूरे नष्ट होने चाहिए। यह योगदर्शनकार महर्षि पतंजलि का कहना है। जब तक पाँच क्लेश पूरे नष्ट नहीं होंगे, किसी का मोक्ष होने वाला नहीं है।
- यूँ तो सारे सम्प्रदाय वाले भ्राँति में हैं। वो सारे यह समझते हैं कि हमारा मोक्ष हो जाएगा, लेकिन हो थोड़ी जाएगा। इसलिए श्रीकृष्ण को मोक्ष नहीं मिला, इन्होंने अच्छे काम किए, कर्तव्य का पालन किया, धर्म की रक्षा की, अन्याय का विरोध किया, तो इनको अगला जन्म बहुत अच्छा मिला, यहाँ तक तो कोई आपत्ति नहीं है। यहाँ तक हमें स्वीकार है। आगे एक–दो जन्म और जोर लगाया होगा और फिर मोक्ष हो गया होगा। इसको मानने में आपत्ति नहीं है।

- श्रीराम जी का भी वही उत्तर है। श्रीराम जी भी क्षत्रिय थे, वो भी ब्राह्मण पूरे नहीं बने। उन्होंने अयोध्या में तीस वर्ष तक राज्य किया और उसके बाद उन्होंने वानप्रस्थ लिया। वानप्रस्थ श्रीराम ने भी लिया, वानप्रस्थ श्रीकृष्ण जी ने भी लिया, दोनों ने लिया। पर संन्यासी दोनों में से कोई भी नहीं बन पाया। इसलिये उस जन्म में तो उनकी मुक्ति नहीं हुई। न श्रीराम जी की हुई, न श्रीकृष्ण जी की हुई। इस पर विचार करना, झगड़ा नहीं करना।

73. शंका– कोई व्यक्ति शादी करके मोक्ष को प्राप्त कर सकता है या नहीं? राम और कृष्ण भी तो गृहस्थ ही थे। फिर उनको योगी क्यों कहा गया है?

☯ ***समाधान***– इसे ऐंसे समझें :–

- ***कोई व्यक्ति गृहस्थ में जाकर के भी मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।*** पर उसको गृहस्थ के नियमों का पालन करना पड़ेगा।
- इस प्रश्न में यह तो लिखा है कि राम और कृष्ण गृहस्थ थे। लेकिन यह नहीं लिखा कि वो कैसे गृहस्थ थे। यह नहीं पता लोगों को। आपको पता है, रामचन्द्र जी ने शादी करने के बाद कितने वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया? चौदह वर्ष वनवास में रहे, पत्नी साथ में थी। बताइए, कितनी संतान उत्पन्न की? एक भी नहीं।

  चौदह वर्ष तक श्रीराम ने गृहस्थ होते हुए, पत्नी साथ रखते हुए भी ब्रह्मचर्य का पालन किया। ऐसे ही श्रीकृष्ण जी ने भी शादी के बाद बारह साल तक तपस्या की, ब्रह्मचर्य की साधना की।
- बात करते हैं कि वो गृहस्थ थे। भई! गृहस्थ थे, तो उनके जैसे गृहस्थ बनो, फिर तो ठीक है। गृहस्थ बनकर भी उन जैसे आचरण करें। ***ऐसे गृहस्थ आप बनना चाहें तो स्वागत है, खूब बनो। और उसके बाद फिर देश–धर्म के लिय एक अच्छी बढ़िया संतान उत्पन्न करो।*** उस संतान का अच्छी तरह पालन करें, उसको विद्वान बनायें, धार्मिक बनाएं, सदाचारी, ईश्वर भक्त, ईमानदार बनाएं।

- श्रीराम और श्रीकृष्ण दोनों राजा थे, दोनों क्षत्रिय थे। और पूरा जीवन न्याय के लिए लड़ते थे। धर्म की रक्षा की, न्याय की रक्षा की, ऐसे आदर्श गृहस्थ बनना हो तो स्वागत है, खूब बनो।
- ***लोग यह तो याद रखते हैं कि राम और कृष्ण गृहस्थी थे, यह भूल जाते हैं कि उन्होंने वानप्रस्थ भी लिया।*** आज वानप्रस्थ कोई लेता नहीं? आपको वानप्रस्थ लेना पड़ेगा, तपस्या करनी पड़ेगी, साधना करनी पड़ेगी, वैराग्य ऊँचा उठाना पड़ेगा।
- उसके बाद संन्यास लेना पड़ेगा। और संन्यास के बाद पाँच क्लेश राग–द्वेष नष्ट करने पड़ेंगे। तब जाकर मोक्ष होगा। तो यह कठिन काम है, लंबा काम है पर असंभव नहीं है। ***गृहस्थी बनने के बाद भी इस तरह से चलेंगे तो मोक्ष हो सकता है।***
- यदि ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यासी बनेंगे तो थोड़ा आसान पड़ेगा। गृहस्थी में से होकर जाएंगे तो थोड़ा कठिन पड़ेगा। संभव तो है, पर आज कोई इतना काम करने के लिए तैयार नहीं। ऐसा माहौल भी नहीं, ऐसा राजा भी नहीं, ऐसी प्रजा भी नहीं, ऐसा सहयोग भी नहीं, सारा ही कुछ उल्टा है। तो आज के माहौल में गृहस्थ बनकर मोक्ष प्राप्त करना बहुत कठिन है। फिर भी चलो इस बार जो हुआ, सो हुआ, अगली बार अगले जन्म के लिए तैयारी करो।
- रही बात श्रीराम और श्रीकृष्ण जी को योगी क्यों कहा गया है? इसका उत्तर है, कि वे गृहस्थ होते हुए भी योगाभ्यास (ईश्वर का ध्यान) करते थे।
- आजकल के लोग तो यह सोचते हैं, कि गृहस्थाश्रम मौज–मस्ती के लिए है। योगाभ्यास (ईश्वर–भक्ति या ध्यान) तो बुढ़ापे में करने की चीज है। ऐसा सोचना गलत है। और कितने ही लोग तो बुढ़ापे में भी ईश्वर का ध्यान नहीं करते, जीवन का बचा–खुचा समय (बुढ़ापा) भी ताश खेलकर नष्ट कर देते हैं। इसका दण्ड तो उनको भोगना ही पड़ेगा।

74. शंका– 'मिश्रित कर्म' क्या है?

☯ ***समाधान– जब किसी कर्म में कुछ अंश तो अच्छाई का, और कुछ अंश बुराई का हो, यानी दोनों इकट्ठे होते हैं, तो उसको मिश्रित–कर्म कहते हैं।***

एक उदाहरण सुनिए – एक परिवार में सब लोग घर में रात को खाना खा चुके थे। इतने में अचानक दरवाजे पर घंटी बजी। जब दरवाजा खोला तो अपना एक रिश्तेदार बड़ी दूर से आ रहा था। वो रात को साढ़े दस बजे अचानक आ गया। उसने पहले दूरभाष के द्वारा अपने आने की सूचना भी नहीं दी।। आकर बोला – ''देखो जी, मेरी गाड़ी लेट हो गई, मेरे पास रास्ते में खाना था, वो भी खत्म हो गया। और मुझे जोर से भूख लगी है, मेरे मोबाइल फोन की बैटरी डाउन हो गई, मैं सूचना भी नहीं दे पाया। मेरे लिए खाना लाओ, नहीं तो रात को नींद नहीं आएगी।''

वह कितने बजे रात को बोला? साढ़े दस बजे। खाना खत्म हो गया था। अब बताइए, फिर दोबारा दाल बनाओ, रोटी बनाओ, सब्जी बनाओ, खाना बनाते–खिलाते रात को बजेंगे साढ़े बारह। सब काम निपटाने में एक भी बज सकता है।

रिश्तेदार है, भूखा तो सुला ही नहीं सकते। रिश्तेदार आपको भी तंग करेगा कि – ''मुझे खाने को दो, मुझे नींद नहीं आ रही है, मैं करूँ क्या। बाजार में अब क्या मिलेगा, साढ़े दस बज रहे हैं, सब दुकानें बंद हो गई।'' व्यक्ति मन में क्या सोचता है? कैसे लोग हैं, पहले से बताते भी नहीं हैं। हम पहले से बनाकर रखते। अब रात के साढ़े दस बजे आकर कहते हैं – ''जी खाना खिलाओ।''

अगर रिश्तेदार को खाना नहीं खिलाया तो 'अशुभ–कर्म' है। और खिलाया तो खिलाने के दो ऑप्शन हैं – जो यजमान रात को नए सिरे से भोजन पकाएगा वह या तो खुश होकर के खिलाएगा या दुःखी होकर खिलाएगा? अगर खुश होकर खिलाएगा, तो यह होगा 'शुभ–कर्म'। और अगर दुःखी होकर खिलाएगा, तो यह होगा 'मिश्रित– कर्म'। खाना खिलाया, यह

तो अच्छी बात है। लेकिन दुःखी होकर के खाना खिलाया, यह बुरी बात है। दोनों मिक्स हो गई न। उतना पुण्य माइनस हो जाएगा, उतना पुण्य कट जाएगा। आप सोच लेना, फिर जैसा करना हो।

75. शंका– जो मनुष्य जन्म से ही अपाहिज होता है, मंद–बुद्धि होता है। जिसका दुःख पैदा होने वाली संतान और माता–पिता दोनों को मिलता है। तो यह किसका कर्मफल है?

☯ ***समाधान– यह माता–पिता और संतान, तीनों का कर्मफल है।*** इसीलिए जन्म से ही व्यक्ति विकलांग और मंद–बुद्धि हुआ। तीनों के कर्म आपस में मिलते–जुलते हैं। इसलिए ईश्वर ने सोच–समझकर ऐसी संतान, ऐसे माता–पिता के यहाँ भेजी है। संतान के भी कर्म खराब हैं, उसको विकलांग बनाना है और माता–पिता के भी खराब हैं, उनको विकलांग संतान देनी है। तो तीनों मिलके अपना कर्मफल भोगेंगे। यह परमात्मा का कर्मफल विधान है। इसका प्रमाण 'न्याय–दर्शन' में लिखा है।

76. शंका– मनुष्य का जन्म पहला है कि अन्य प्राणियों का?

☯ ***समाधान–*** उत्तर यह है कि पहला जन्म कोई नहीं। पहला जन्म मानते ही भयंकर समस्या उत्पन्न होगी। मान लो, ईश्वर ने किसी आत्मा को पहला जन्म दिया, तो प्रश्न होगा कि, कर्म के आधार पर देगा या बिना कर्म के आधार पर देगा? अगर पहला जन्म दिया तो कर्म कहाँ से आ गया? पिछले कर्म के आधार पर तो पीछे कर्म हुआ न, तो वो पहला जन्म नहीं हुआ न। बस यही उत्तर है। ***पहला जन्म कोई नहीं है।***

जब भी जन्म मिलेगा वो कर्म के आधार पर मिलेगा। और वो कर्म कहाँ से आएगा, उससे पिछले जन्म का। और उससे पिछले जन्म में जो कर्म आया, वो कहाँ से आया, उससे पिछले का। उससे पिछले का, उससे पिछले का। इसलिए पहला जन्म कोई नहीं है।

77. शंका– आपने कहा था कि पचास प्रतिशत पाप और पचास प्रतिशत पुण्य हैं, तो साधारण मनुष्य का जन्म मिलता है। लेकिन यदि चपरासी, मजदूर आदि के यहाँ जन्म लेने के बाद चपरासी को एक करोड़ की लॉटरी लग जाए तो, इसे क्या समझना?

☯ ***समाधान***– जन्म होने के बाद चपरासी को एक करोड़ की लॉटरी लग जाए, तो उसको आधिभौतिक सुख मिलेगा।

- **पहली बात**–*एक करोड़ की लॉटरी लगना कोई कर्म–फल नहीं था।* बालक को ईश्वर ने जिस माता–पिता के यहाँ भेजा, उस दिन माता–पिता की जो स्थिति है, वहाँ तक तो उसका कर्मफल है। उसके बाद उसमें बिगाड़ भी हो सकता है, सुधार भी हो सकता है।

  मान लीजिए, एक अच्छे सेठ के यहाँ एक आत्मा को ईश्वर ने भेजा। जिस समय आत्मा को सेठ के परिवार में भेजा, उस समय सेठ बहुत संपन्न था। और उसके दो तीन दिनों बाद बेचारे का दिवाला पिट जाने से वो गरीब हो गया। *जिस समय ईश्वर ने आत्मा को उस परिवार में भेजा उस समय उस बालक के कर्मफल के अनुसार भेजा। आगे को घट भी सकता है, बढ़ भी सकता है।* उसकी गारंटी कुछ नहीं।

- **दूसरी बात**–*लॉटरी खरीदना तो जुआ है। वेद में 'जुआ खेलना' मना किया गया है।* अतः जुए से जो पैसा मिलता है, वह कोई अच्छे कर्म का फल नहीं है। जबकि लोग यह समझते हैं, कि लॉटरी लगने पर मिलने वाला धन किसी पिछले शुभ कर्म का फल है। ऐसा समझना गलत है।

78. शंका– क्या पूर्व जन्म के संस्कार से कोई चार–पांच साल का बच्चा, पच्चीस–तीस साल के साधक जितनी योग्यता प्राप्त कर सकता है?

☯ ***समाधान***– अपवाद के रूप में कभी–कभी ऐसा हो सकता है। *यह पूर्व जन्म के संस्कारों व विद्या पर निर्भर है।* पूर्व जन्म के संस्कार व विद्या इतने प्रबल हों कि पांच साल के बच्चे को पच्चीस–तीस नहीं, तो बारह–पंद्रह साल के बच्चे जितनी योग्यता प्राप्त हो जाए।

वह और मेहनत करे, तो आठ–दस साल की उम्र में पच्चीस–तीस वर्ष के बराबर योग्यता अर्जित कर सकता है।

79. शंका– क्या मनुष्यों के अतिरिक्त कुत्ते आदि पशु–पक्षियों को भी कर्म करने की स्वतंत्रता है? क्या इन्हें पुण्य–पाप लगता है?

☯ ***समाधान***– हाँ। कुत्ते आदि अन्य प्राणियों को भी कर्म करने की थोड़ी स्वतन्त्रता है। मुख्य रूप से तो वह भोग–योनि है। परन्तु गौण रूप से (थोड़ी सी) कर्म करने की स्वतंत्रता भी है। जैसे – *पुलिस वाले कुत्ते को ट्रेनिंग देते हैं, और वो ट्रेन्ड कुत्ते चोरों को पकड़वा देते हैं। यह उनकी कुछ प्रतिशत की स्वतंत्रता है और इसका उनको ईनाम मिलता है।* अच्छी बढ़िया डबल रोटी, बिस्किट खाने को मिलता है। बढ़िया शैम्पू से नहाते हैं, बढ़िया सुविधाओं में रहते हैं।

आप शाँति से अपने रास्ते में जा रहे हैं और एक कुत्ता पीछे से चुपचाप आता है और आपकी टांग पकड़ लेता है, काट लेता है तो आप उसकी डंडे से पिटाई करते हैं न। उसने अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग किया, इसीलिए तो पिटाई हुई। उसने पाप किया, इसीलिए दण्ड मिला। पुलिस के कुत्ते ने चोर को पकड़वाया, पुण्य किया। इसलिए उसको ईनाम मिला। यह है कुत्ते आदि प्राणियों की कर्म करने की दो–चार–पांच प्रतिशत की स्वतंत्रता।

80. शंका– क्या यह बात सत्य है कि अभिमन्यु माँ के पेट में ही चक्रव्यूह के अंदर जाना सीख गया था?

☯ ***समाधान***– माता के गर्भ में रहते हुए, पूरी बात वह नहीं सीख पाया। *माता के गर्भ में रहते हुए उसके कुछ–न–कुछ संस्कार जरूर पड़ते हैं।* इसमें कोई आपत्ति नहीं है। महर्षि दयानंद जी ने सोलह संस्कारों की एक पुस्तक लिखी है– 'संस्कार विधि'। उसको पढ़ने से आपको पता चलेगा कि गर्भावस्था में भी बालक पर संस्कार पड़ते हैं। इसलिए माता को कैसे उठना–बैठना, खाना–पीना, बोलना, लिखना–पढ़ना चाहिए, क्या दृश्य देखना चाहिए, क्या नहीं देखना चाहिए, कैसे सोचना चाहिए, कैसे नहीं सोचना चाहिए?

गर्भावस्था से बालक का निर्माण शुरु हो जाता है। उसका प्रभाव पड़ता है। बालक बड़ा होता जाता है, जन्म लेता है। फिर जैसे–जैसे चलना–फिरना सीखता है, उसके विकास के लिए, उसकी बुद्धि के विकास के लिए, उसके शरीर के विकास के लिए, उसकी सेहत के लिए बहुत सारे संस्कार होते हैं। तो ये संस्कार जरूर अपना प्रभाव छोड़ते हैं। बाकी यह बात सत्य है कि छोटी उम्र में उसने चक्रव्यूह में घुसना सीख लिया था।

हमारे शास्त्रों में यह भी कहा है कि विद्यार्थी जब गुरुजी के पास जाता है, तो वो भी गुरुजी के गर्भ में रहता है। अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त में ऐसी चर्चा आती है। गुरुजी के गर्भ में रहने का मतलब गुरुजी की सुरक्षा में रहता है, उनके अनुशासन में चलता है। वे जैसा सिखाते हैं, वैसा सीखता है। अभिमन्यु को छोटी उम्र में माता–पिता ने जो बातें सिखाई, उससे उसने चक्रव्यूह में घुसना सीख लिया। कुछ गर्भावस्था में और कुछ जन्म लेने के बाद में। इस तरह से उसने छोटी उम्र में सीखा। यह है इस वाक्य का अभिप्राय।

81. *शंका– अच्छे या बुरे कर्मों का फल अगले जन्म में ही मिलता है, इसी जन्म में क्यों नहीं मिलता?*

☯ ***समाधान***– अच्छे कर्मों और बुरे कर्मों का फल इस जन्म में भी मिलता है। आपको याद है दिल्ली के दो गड़बड़ व्यक्ति थे, जिनका नाम था रंगा और बिल्ला। रंगा–बिल्ला को इसी जन्म में सजा मिली या नहीं मिली? इंदिरा गाँधी जी का हत्यारा बेअंत सिंह, उसको इसी जन्म में दण्ड मिला कि नहीं मिला? और आप छब्बीस जनवरी को देखिए, कितने वीर सैनिकों को पुरस्कार मिलते हैं, परमवीर चक्र, अशोक चक्र आदि–आदि चक्र मिलते हैं। तो यह देखो, इसी जन्म में कर्म किया, इसी जन्म में फल मिला। आप लोग इसी जन्म में मेहनत करते हैं, और इसी जन्म में खूब वेतन कमाते हैं। व्यापारी लोग व्यापार में पैसे कमाते हैं। इसी जन्म में कर्म करते हैं, इसी जन्म में फल मिलता है। खूब मिलता है।

कर्मों का फल इस जन्म में भी मिलता है। ऐसा नहीं है कि, सारा अगले जन्म में ही मिलता है। कुछ यहाँ मिलता है, कुछ आगे मिलता है।

82. *शंका– संस्कार–विधि में बालक के जात–कर्म संस्कार के समय, तिथि और तिथि के देवता, नक्षत्र और नक्षत्र के देवता की आहुति का विधान किया गया है। उन्होंने लिखा है–गृहस्थ व्यक्ति यदि दैनिक यज्ञ नहीं कर सकता है, तो कम से कम पूर्णिमा व अमावस्या के दिन यज्ञ अवश्य करे। इन दो विशेष दिनों का क्या महत्व है? क्या चंद्रमा का घटना और बढ़ना हमारे जीवन पर प्रभाव डालता है?*

☯ ***समाधान***– 'सत्यार्थ प्रकाश' में बिल्कुल ठीक लिखा है कि ग्रह–नक्षत्रों का प्रभाव नहीं होता, इसलिए बालक की जन्मपत्री नहीं बनवानी चाहिए। उसका नाम शोक–पत्र है। पंडित को पैसे देकर, चाहे जैसी जन्म पत्री बनवा लो। बढ़िया पैसे दो, बढ़िया जन्मपत्री बना देगा और थोड़े पैसे दो, तो घटिया बना देगा। यह तो पैसे का खेल है और कुछ नहीं। आपकी जन्मपत्री में ऐसा कुछ नहीं लिखा कि कल आपका भविष्य कैसा होगा।

और रही बात कि 'संस्कार विधि' में तिथि और नक्षत्र के देवता आदि के लिए आहुति देना लिखा है। उसका अर्थ यह नहीं है कि उन तिथि के देवता, नक्षत्र और नक्षत्र के देवता को यदि हम आहुति देंगे, तो ये देवता प्रसन्न हो जाएंगे और हमारा भविष्य अच्छा बना देंगे। ***इतिहास की रक्षा के लिए, यह विधान किया गया है, कि उस दिन क्या तिथि थी, उस दिन नक्षत्र कौन सा था। पृथ्वी और ग्रहों की स्थिति क्या थी?*** इतिहास के स्मरण के लिए यह काम करना चाहिए।

पहले लोग तिथि और नक्षत्र आदि के हिसाब से इतिहास लिखते थे। आज तो अंग्रेजी तारीख में लिखते हैं, जैसे – 26 जनवरी 1902, 25 फरवरी 1925, इससे तारीख पता चलती है, कि इस व्यक्ति का जन्म कब हुआ था, कितने साल पहले हुआ था, आज क्या उम्र है। वह केवल इतिहास की रक्षा के लिए है। उससे हमारा भविष्य सुधरता हो, ऐसी कोई बात नहीं।

अब रही बात कि गृहस्थ व्यक्ति को प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिए। तो वो बिल्कुल ठीक लिखा है। फिर लिखा है, आपत्तिकाल में यदि वो न कर सके। मान लो गरीब आदमी है, हर रोज हवन

करने के लिए साधन नहीं है, तो कोई बात नहीं। ऐसा व्यक्ति पूर्णिमा और अमावस्या यानी पन्द्रह दिन में एक बार तो कम से कम अवश्य करे। उसके लिए यह विकल्प दिया है। कुछ न करने से, कुछ करना अच्छा है। किस दिन करें, तो एक दिन बता दिया। आजकल तो लोग संडे की छुट्टी मनाते हैं। पुराने समय में यह संडे की छुट्टी नहीं होती थी। पूर्णिमा की, अमावस्या की, और अष्टमी की, ऐसे महीने की चार छुट्टियाँ होती थीं। एक पूर्णिमा, एक अमावस्या और शुक्ल पक्ष में एक अष्टमी, कृष्ण पक्ष में एक अष्टमी आएगी। तो स्वामी दयानन्द जी ने यूँ कह दिया, कि पूर्णिमा और अमावस्या में हवन कर लो, क्योंकि उस दिन छुट्टी होती है।

समुद्र में ज्वार–भाटा तो रोज चढ़ता–घटता है। वो तो रोज चलता है। लेकिन अमावस्या और पूर्णिमा को चन्द्रमा का कुछ विशेष आकर्षण होता है। ***इसलिए उस दिन ज्वार–भाटा कुछ तेज आता है। तो उसी हिसाब से हमारे जीवन पर ज्वार–भाटे का असर होता है, वो तो ठीक है। वो तो प्राकृतिक घटना है।*** उसमें कोई आपत्ति नहीं।

ज्वार–भाटे का ऐसा कोई सूक्ष्म प्रभाव नहीं है कि, वह पूर्णिमा को किसी व्यक्ति का व्यापार बहुत अच्छा बना दे, दूसरे का व्यापार बिगाड़ दे। जैसा ये हस्तरेखा, भविष्य–फल वाले लोग बताते हैं। वो सब गड़बड़ है।

83. शंका– कर्म का फल भोगने के बाद संस्कार नष्ट हो जाते हैं या बने रहते हैं?

☯ ***समाधान***– संस्कार बने रहते हैं। इसे समझें:–

- एक व्यक्ति ने चोरी कर ली। चोरी करना अशुभ कर्म है। पुलिस ने खोजबीन की। चोर मिल गया। चोरी का सामान भी बरामद हो गया। कोर्ट में केस हुआ। जज साहब ने कहा– छह महीने की जेल दी जाएगी। छह माह की जेल हो गई। यह उसका फल हो गया। छह माह बाद वो जेल से छूटकर बाहर आया। चोरी–कर्म का दंड (फल) क्या था? छह महीना जेल में रहना। फल भोग लिया।
- फल तो भोग लिया, संस्कार बने रहेंगे। जैसे–जेल से छूटने के बाद जो चोरी करने का संस्कार है, वो अभी खत्म नहीं हुआ है।

जो बिल्कुल पेशेवर (व्यावसायिक) चोर हैं, जिनका धंधा ही चोरी करने का है, वो जेल से छूटते ही चोरी करेंगे। उनको और कोई काम आता ही नहीं, कुछ सीखा ही नहीं, वे मेहनत करना जानते ही नहीं। बस, चोरी करना जानते हैं। वे बार–बार चोरी करते हैं। उससे उनको चोरी करने की जो आदत पड़ जाती है, इसका नाम है – संस्कार। तो यह संस्कार नहीं छूटा।

- ***इस गलत संस्कार को मिटाने के लिए अलग से मेहनत करनी पड़ेगी। उसके लिए संकल्प करना पड़ेगा कि 'अब बस, बहुत चोरी कर ली। अब नहीं करूँगा।'*** ऐसा संकल्प करेगा, कुछ कष्ट उठाएगा, थोड़ी तपस्या करेगा, तो वो संस्कार छूट जाएगा। वरना ऐसे नहीं छूटेगा।

84. शंका– ईश्वर, मनुष्य जीवन का निर्माण क्यों करता है?

☯ ***समाधान***– मनुष्य जीवन का निर्माण, ईश्वर मोक्ष प्राप्ति कराने के लिए करता है। ***मनुष्य अपने पिछले कर्मों का फल भोग ले, और आगे पुरुषार्थ करके मोक्ष को प्राप्त कर ले। इसलिए मनुष्य को ईश्वर ने बनाया।***

हम मनुष्य जन्म प्राप्त करके भी अगर मोक्ष के लिए कोई विशेष प्रयत्न नहीं करते, मोक्ष की ओर दो–चार कदम आगे नहीं बढ़ाते, तो फिर हमारा जीवन सफल नहीं है। ***मनुष्य जन्म की सार्थकता यही है, कि कुछ तो मोक्ष की ओर हम आगे बढ़ें।***

जिस काम के लिए भगवान ने जन्म दिया, वो काम तो हमने किया ही नहीं। खाया–पिया और सो गए। इतना तो और प्राणी भी करते हैं। इसलिए अगर मनुष्य जन्म मिला है तो इसका पूरा लाभ उठाना चाहिए।

85. शंका– जीवात्मा शरीर छोड़ने के वक्त कहाँ जाता है? और शरीर छोड़ने के बाद उसकी स्थिति, पुर्नजन्म कैसे होता है?

☯ ***समाधान***– जैसे ही आत्मा शरीर को छोड़ेगा, वैसे ही बेहोश हो जाएगा। उसको कोई होश नहीं, कोई शक्ति नहीं। अब आत्मा आगे नहीं चल सकता। जीवात्मा स्थूल शरीर के बिना कुछ नहीं कर सकता।

- शरीर छोड़ते ही ईश्वर उसको पकड़ लेगा। वह ईश्वर के नियंत्रण में आ जाएगा। अब ईश्वर उसको ले जाएगा।

  ईश्वर उसके कर्मानुसार रूस में, जापान में, अमेरिका में जहाँ कहीं भी अगला जन्म देना होगा, अथवा भारत में ही कहीं अगला जन्म देना होगा, तो उसको वहाँ तक पहुँचाएगा। फिर वहाँ अगला जन्म देगा। उसके कर्मानुसार यह व्यवस्था रहती हैं।

- यह निश्चित है कि – ***आत्मा भूत–प्रेत बनके नहीं भटकेगा, किसी के शरीर में घुसकर उसको परेशान नहीं करेगा, यह पक्की बात है।*** यह शास्त्रों में लिखा है।

- ***अंतिम–संस्कार जिसको अंत्येष्टि कहते हैं। यह सोलह संस्कारों में अन्तिम है।*** ये शब्द ही कह रहा है कि अंत्येष्टि हो गयी यानि कि बात खत्म हो गयी। ***अंत्येष्टि के बाद मृतक के लिए हम कुछ नहीं कर सकते।*** आत्मा तो दूसरे जन्म में गया और उसका शरीर भी खत्म हो गया, सारे रिश्ते खत्म हो गये। फिर चौथा करो, दसवाँ करो, बारहवाँ करो, तेरहवाँ करो। वो जो बचे हुए जीवित लोग हैं, वो अपने लिए करते हैं, मृतक के फायदे के लिए नहीं।

86. शंका– अकाल मृत्यु हो जाती है, तो उसका जन्म कब होता है, और किस योनि में होता है?

☯ ***समाधान***– उत्तर यह है कि ***जब भी किसी की मृत्यु होती है, चाहे अकाल–मृत्यु हो या काल–मृत्यु हो, उसका जन्म तुरंत होता है।*** उसके कर्मानुसार जहाँ उसके कर्म का फल बनता है, न्याय के अनुसार ईश्वर उसको तुरंत अगला जन्म देता है।

प्रश्न यह है कि – अगला जन्म किस योनि में होता है? उत्तर यह है कि– जैसे उसके कर्म, वैसा जन्म होता है। ***अगला जन्म लेने के जैसे कर्म है, उस योनि में उसका जन्म हो जाएगा।*** इस तरह से यह कर्मों का फल हैं। वह कठिन विषय है। इसको बार–बार पढ़ना, सुनना, चिंतन करना, मनन करना, ऐसा करेंगे तो धीरे– धीरे कुछ समझ में आएगा।

87. शंका– वरदान या श्राप देना क्या संभव है? नहीं, तो फिर वह क्या है?

☯ ***समाधान***– वरदान और श्राप देना संभव है। पर वैसा नहीं जैसा आपने पुराणों में पढ़ रखा है, या पौराणिक कथाओं में सुन रखा है कि – '' जाओ, तुम्हें कोई नहीं मार सकेगा, तुम अमर हो गए हो।'' सृष्टि के नियम के विरुद्ध वरदान गलत हैं। ऐसे वरदान नहीं होते हैं।

प्रकृति के नियम से विरुद्ध जो बातें हैं, इस तरह का न वरदान होता है और न श्राप होता है। सृष्टि नियम के अनुकूल वरदान भी होता है और श्राप भी होता है।

वरदान किसको कहते हैं? आशीर्वाद का नाम वरदान हैं। ऋषि–मुनि जी क्या कहते हैं:–

"अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य बर्द्धन्त आयुर्विद्या यशो बलम्।।"

यह वरदान है कि – ''जो बड़ों का आदर सम्मान करते हैं, माता–पिता को, गुरुजनों को नमस्ते करते हैं, उनके आदेश का पालन करते हैं, उनकी सेवा करते हैं, उनकी चार चीजें बढ़ती हैं। वे हैं – आयु, विद्या, यश और बल।'' माता–पिता उनको आशीर्वाद देते हैं, गुरुजन आशीर्वाद देते हैं कि बड़ी उम्र वाले हो, खूब फलो–फूलो, आगे बढ़ो, उन्नति करो, सुखी रहो। ऐसा वरदान ठीक है।

श्राप क्या है? एक व्यक्ति ने अपराध किया और उसको कहा– देख, तूने अपराध किया है, तुझे दंड मिलेगा। इसे जेल में डाल देना चाहिए। ऐसे ही किसी ने उसको डाँट लगा दी। अब फिर वह बाद में पकड़ा भी गया, उस पर केस चला और उसको जेल भी हो गयी। उसका श्राप सिद्ध हो गया। उसने सच बात कही।

अपराधी को अपराध से बचाने के लिए अथवा उसको समझाने के लिए व्यक्ति उसको डाँटता है, रोकता है। फिर भी वह नहीं मानता है तो फिर उसको कहता है कि – देख तू नहीं मानता, तुझे दंड मिलेगा। और वो तो होता ही है।

कुछ काल्पनिक श्राप ऐसे भी बोले जाते हैं। एक मनुष्य था, वह गड़बड़ यानी बुरे काम करता था, ***उसको श्राप दिया – तू***

अभी–अभी यहाँ पर सुअर बन जा, तू अभी–अभी इसी जन्म में कुत्ता बन जा। ऐसा संभव नहीं होगा।

व्यक्ति इसी जन्म में तो कुत्ता नहीं बन सकता। हाँ, मरने के बाद भले ही वह बन जाए। भगवान उसको कर्म के अनुसार दंड दे देंगे, वो अलग बात है, पर जीते जी इसी जन्म में उसको तोड़–मरोड़ कर बिल्ली, कुत्ता नहीं बनाया जा सकता। इस तरह के कोई श्राप आपने कथाओं में सुने हों तो वो गलत हैं।

88. शंका– 'मेरी दृष्टि में स्वामी दयानंद सरस्वती और उनके कार्य' नामक अपने ग्रंथ (द्वितीय संस्करण, सं. 2050, पृ. 332–335) में लिखा है कि मृत्यु से पहले स्वामीजी ने अपनी योगशक्ति के द्वारा पं. गुरुदत्तजी विद्यार्थी पर शक्तिपात का प्रयोग कर वेदार्थ संबंधी ज्ञान संक्रमित कर दिया था। क्या यह सम्भव है?

☯ **समाधान**– श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने जो शक्तिपात के द्वारा वेदार्थ का ज्ञान कराने की बात यदि पुस्तक में लिखी है, तो मेरी दृष्टि में वह ठीक नहीं है।

स्वयं महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने वेदार्थ ज्ञान कराने की शक्तिपात वाली विधि का अपने ग्रन्थों में कहीं भी उल्लेख नहीं किया है।

वेदार्थ ज्ञान करने के लिए महर्षि ने दो विकल्प 'ऋग्वेदादिभाष्य–भूमिका' के पठनपाठन–विषय के अन्त में बताए हैंः–

1. व्याकरण अष्टाध्यायी धातुपाठ उणादिगण – चार ब्राह्मण इन सब ग्रन्थों को क्रम से पढ़ के।
2. अथवा जिन्होंने उन सम्पूर्ण ग्रन्थों को पढ़ के जो सत्य–सत्य वेद व्याख्यान किए हों, उनको देख के वेद का अर्थ यथावत् जान लेवें।

यहाँ ***शक्तिपात से वेदार्थ ज्ञान का उल्लेख कहीं भी नहीं है।*** और न ही 'सत्यार्थ प्रकाश' के तीसरे समुल्लास आदि में कहीं पर बताया है।

89. शंका– ईश्वर के द्वारा संसार बनाने से पूर्व जीव ने कर्म कहाँ किए, कर्मफल के लिये जगत् कैसे बनाया?

☯ **समाधान**– ईश्वर ने जब यह जगत् बनाया तो जिन कर्मों का फल सृष्टि के आरंभ में दिया, वो कर्म हमने इससे पिछली सृष्टि में

किए थे। अब आप यह पूछेंगे कि जब पिछली सृष्टि बनाई तब कर्म कहाँ से आए? उत्तर है कि उससे पिछली सृष्टि से आए। इसी प्रकार से उसके पीछे चलते जाओ।

एक व्यक्ति ने पूछा कि जब भगवान ने पहली बार सृष्टि बनाई, तब कर्म कहाँ से आए तो मैंने कहा – पहली बार सृष्टि बनाई ही नहीं। अब यह उत्तर समझ में नहीं आया, टेढ़ा है न ! इस बात को समझना कठिन है।

पहली बार ईश्वर ने सृष्टि कभी बनाई ही नहीं। यह अनादिकाल से चल रही है। तीन वस्तुएँ अनादि हैं– ईश्वर, जीव, प्रकृति। यह सबसे पहला सिद्धांत (प्रायमरी लॉ) है। अगर यह समझ में आएगा तो आगे बहुत सी बातें समझ में आ जाएंगी। अगर यह समझ में नहीं आएगा तो कुछ समझ में नहीं आएगा।

ईश्वर ने पहली बार कभी भी सृष्टि नहीं बनाई। ***अनादिकाल से ईश्वर सृष्टि बना रहा है और जीवात्मा अनादिकाल से कर्म कर रहा है और प्रकृति भोग दे रही है।*** प्रकृति हमारे कर्मों का फल हमको भुगवा रही है। तीनों अनादिकाल से चल रहे हैं।

विपक्ष को सोचने से बात जल्दी समझ में आती है। यह भी एक समझने का तरीका है। कल्पना कीजिए कि – पहली बार ईश्वर ने सृष्टि बनाई। जब पहली बार बनाई, तो ईश्वर केवल मनुष्य बनाएगा या गाय–घोड़ा भी बनाएगा? अकेला मनुष्य बनाएगा तो अकेला मनुष्य तो जी नहीं सकता। उसको गाय भी चाहिए, घोड़ा भी चाहिए, गधा भी चाहिए, गेहूँ भी चाहिए, चना भी चाहिए। मनुष्य का जीवन ठीक–ठाक चलाने के लिए ईश्वर भेड़–बकरी, गाय, गधा–घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली, गेहूँ, चना, सब बनाएगा। ऐसी स्थिति में प्रश्न होगा कि पहली बार ईश्वर ने किसी को मनुष्य बना दिया, किसी को बिल्ली बना दिया, किसी को कुत्ता बना दिया, किसी को वृक्ष बना दिया, तो बिना कर्म के उसने फल दिया कि नहीं दिया? इससे तो यह भी मानना पड़ेगा कि ईश्वर ने पहली बार बिना कर्म के फल दिया। और यदि यह मान लिया कि पहली बार ईश्वर ने बिना कर्म के फल दिया तो यह प्रश्न होगा – क्या ईश्वर न्यायकारी हुआ कि अन्यायकारी हुआ? तब तो वह अन्यायकारी

हुआ। जब पहली बार सृष्टि बनाते ही ईश्वर अन्यायकारी हो गया तो दूसरी बार क्या न्यायकारी रहेगा? फिर तीसरी बार क्या हम उस पर भरोसा करेंगे? क्या वह हमारे साथ न्याय करेगा? क्या आप लोग ईश्वर को अन्यायकारी मानने के लिए तैयार हैं। नहीं हैं न। इससे सिद्ध हुआ कि ईश्वर ने पहली बार सृष्टि नहीं बनाई।

ईश्वर न्यायकारी तभी बना रहेगा, जब कर्म के आधार पर फल मिलें और कर्म कहाँ से आएगा? वो पीछे से आएगा और पीछे से पीछे, पीछे से पीछे सृष्टि और कर्म मानेंगे, तब तो ईश्वर न्यायकारी बना रहेगा अन्यथा अन्यायकारी मानना पड़ेगा। तो ऐसा सोचेंगे तो थोड़ा समझ में आएगा।

90. *शंका– यह कैसे साबित हो कि अच्छे कार्य करने से व्यक्ति मोक्ष में जाता है? क्या अभी तक कोई भी व्यक्ति मोक्ष में गया है? अगर हाँ तो आपको कैसे ज्ञान हुआ कि वो व्यक्ति मोक्ष में गया है?*

☯ ***समाधान***– हम सब के सब मोक्ष में जा चुके हैं और सारे मोक्ष में से लौटकर आए हैं। यही शास्त्र भी कहता है, वेद भी कहता है कि अच्छे काम करो, निष्काम कर्म करो और मोक्ष में जाओ।

प्रश्न है – इसका पता कैसे चलेगा? आपको भी बता देता हूँ। आपको भी पता चलेगा, मुझे भी और सबको पता चलेगा। जो व्यक्ति मोक्ष में जा रहा है, वो स्वयं ज्ञान रखता है कि अब मेरा मोक्ष होगा या अभी और जन्म होगा। उसकी कसौटी यही है कि–

- ***''अगर आपके मन में सांसारिक सुख भोगने की सारी इच्छाएं समाप्त हो गईं हैं तो आपका मोक्ष हो जाएगा।''***

अगर ऐसा लगता है कि अभी और सांसारिक सुख भोगने की इच्छा बाकी है तो समझ लेना अभी और जन्म लेना पड़ेगा। यह कसौटी वेद, योग दर्शनादि शास्त्रों में लिखी है। वहाँ से हमें ज्ञान हुआ।

- अब हर एक को अपना–अपना तो पता चलता ही है। जब भूख लग रही है तो आपको पता चलता है और खाना खाते हैं, पूरा पेट भर जाता है तो आपको पता चलता है कि अब पेट भर गया है, अब और नहीं खाना। ऐसे ही इच्छाएँ समाप्त हो गईं, यह भी

पता चलेगा। अब और सांसारिक सुख नहीं भोगना, पूरा हो गया, बस तब समझ लेना कि मुझे अब मोक्ष मिल जाएगा।

- अगर अनादिकाल से आज तक एक भी मोक्ष में नहीं गया, ऐसा मानो तो, भविष्य में क्या कोई जा पाएगा? भविष्य में भी नहीं जाएगा। इसका मतलब है, भगवान यह झूठ बोलता है कि तुम मोक्ष में जाओ। लेकिन ऐसा तो नहीं है। भगवान सच बोलता है।

भगवान कहता है कि पुरुषार्थ करो और मोक्ष में जाओ। इसका मतलब मोक्ष में जाना संभव है। अगर संभव है तो पहले भी बहुत सारे लोग गए और आगे भी लोग जाएंगें। आप भी गए थे, हम भी गए थे, और फिर जाएंगे। जोर लगाएंगे तो जाएंगे।

- यह 'संन्यास' किसलिए लिया जाता है? क्या व्यापार करने के लिए, पैसे कमाने के लिए? नहीं, ***संन्यास का एक ही उद्देश्य है:– ''मोक्ष में जाना''।*** संन्यास के बाद फिर मोक्ष होता है। संन्यासी बनने से तो लोगों को डर लगता है कि हमको संन्यासी बनवा कर घर छुड़वा देंगे। मोक्ष में जाने के लिए संन्यास लेना अनिवार्य (कम्पलसरी) है। आज लो, बीस जन्म बाद लो, पचास जन्म के बाद लो, लेना तो पड़ेगा और कोई रास्ता नहीं है।

मुझे मोक्ष में जाना है, दुनिया में नहीं रहना है। मेरी समझ में आ गया। आप भी प्रयास करें, आपको भी समझ में आएगा।

- हमारे गुरुजी कहते हैं – स्वार्थी मत बनना। औरों को भी साथ लेकर जाना। इसलिए मेरी ड्यूटी लगा रखी है, जाओ प्रचार करो। ***दूसरे लोगों को भी साथ लेते चलो, अकेले मोक्ष में मत जाना।***
- घर छोड़ना पड़ेगा, संसार छोड़ना पड़ेगा, तब मोक्ष होगा। ***मेरा प्रवचन सुनकर के, आप जोश में आकर, कल ही घर मत छोड़ देना। अंततः करना यही पड़ेगा, लेकिन कब करें?*** उसके लिए तैयारी करनी पड़ेगी, योग्यता बनानी पड़ेगी।
- आज से आप सोचना शुरु करें कि हमें घर छोड़ना है, हमें वानप्रस्थ लेना है, हमें संन्यास लेना है, योग्यता बनानी है। आपको घर छोड़ने की तैयारी करने में भी पाँच–दस वर्ष निकल जाएंगे। इसलिए जोश में आकर कोई काम नहीं करना चाहिए। होश में रहकर बुद्धिमत्ता से अपने सामर्थ्य को ध्यान में रखकर के करना चाहिए। तैयारी

तो आप आज से भी शुरु कर सकते हैं, कि हम समय आने पर योग्यता बनाकर वानप्रस्थ लेंगे, संन्यास लेंगे।

91. शंका– एक महिला ने अपने पति की क्रूरता एवं अत्याचार से लाचार होकर एक रात मौका देखकर उसकी हत्या कर दी। उसके अलावा उसके पास और कोई रास्ता नहीं बचा था। क्या उसे परमात्मा दंड देगा, जो सजा यहाँ काट ली, क्या वह कम हो जाएगी?

☯ **समाधान**– इस शंका का उत्तर है:–

- वैसे तो यह वेद सम्मत नहीं है कि पत्नी, पति के अत्याचारों से परेशान हो जाए तो रात को गंडासा लेके उसे काट दे, कोई हथियार लेकर उसको मार डाले। पति को मारना तो नहीं चाहिए।
- अगर पति के अत्याचारों से परेशान है तो वो राजा को शिकायत करे, कोर्ट में जाए कि, साहब मेरा पति मुझे परेशान करता है, उसको ठीक करें, न्याय करें। दरअसल,पत्नी को ऐसा करना चाहिए।
- ***यदि पत्नी ने पति की हत्या कर ही दी तो फिर अपराध तो किया है, अतः उसका दंड भी मिलेगा।*** अब क्या दंड मिलेगा ? यह तो पूरा–पूरा भगवान ही जाने, हम पूरा–पूरा नहीं समझ पाएंगे। कर्मफल बड़ा विचित्र है, बड़ा कठिन है, गंभीर है।
- यहाँ प्रश्न यह किया है कि अगर उसको जो सजा यहाँ मिलती है और वो काट ली तो क्या वो कम (माइनस) हो जाएगी? मान लीजिए, ***दस रुपये का दंड उसको ईश्वर के न्याय के अनुसार मिलना चाहिए और यहाँ सरकार ने छह रुपए का दंड (दुःख) दे दिया तो बाकी बचा चार रुपया। बस चार रुपए भगवान उसको दंड दे देगा।*** वो छह रुपए कम क्यों हुआ? दंड भोग लिया न, भोगना ही तो था। दस का भोगना था, छह का भोग लिया, अब चार बाकी बच गया। चार और मिल जाएगा। ***इस तरह से एक अपराध का दंड एक ही बार मिलता है,*** यह न्याय कहलाता है।

92. शंका– क्या मोक्ष के बाद जन्म होता है? यदि हाँ, तो जब हमें फिर से सांसारिक दुःख उठाने पड़ेंगे तो फिर मोक्ष का लाभ ही क्या रहा?

☯ **समाधान**– मुझे भी स्वीकार है कि मोक्ष से वापस तो लौटना पड़ेगा। मोक्ष से लौट कर फिर जन्म लेंगे तो पुनः दुःख आ जायेंगे। आप

कहते हैं कि – ''जब लौट कर वापस आएंगे तो फिर मोक्ष में जाने का फायदा ही क्या हुआ?''इस शंका का उत्तर है:–

- मेरा एक प्रश्न है – दोपहर में भूख लगी तो आपने खाना खा लिया। क्या शाम को भूख नहीं लगेगी? यदि शाम को भूख लगेगी, तो फिर दोपहर में खाने का क्या लाभ हुआ? खाना, खाना बेकार हुआ न। बताइए, खाना खाया आपने, वो उपयोगी हुआ कि बेकार गया? उपयोगी हुआ। कारण कि, इससे छह घंटे तक उस भूख के दुःख से छुटकारा हो गया। दोपहर बारह बजे भूख लगी तो आपने यह सोचकर भोजन किया कि शाम को फिर भूख लगेगी तो फिर खा लेंगे। अभी छह घंटे तो कम से कम इस भूख से जान छूटे।
- ***अगर छह घंटे तक भूख के दुःख से छुटकारा पाने के लिए आप भोजन करते हैं, तो इकतीस नील दस खरब चालीस अरब वर्षों तक दुःख से छुटकारा पाने के लिए (मोक्ष के लिए) प्रयास क्यों न करें?*** करना चाहिए। इसलिए मोक्ष के लिए अभी प्रयास करो।
- ***जब दोबारा भूख लगेगी तो दोबारा खा लेंगे, और जब दोबारा मोक्ष से लौट कर आएंगे तो दोबारा फिर चले जाएंगे।***
- ऐसा तो नहीं है कि मोक्ष केवल एक ही बार मिलेगा, फिर मिलेगा ही नहीं। भगवान ने कोई रोका थोड़े ही है। वो कहता है– दोबारा फिर कर्म करो, फिर आ जाना मोक्ष में। दोबारा रास्ता खुला है। हम बार–बार मोक्ष में जाएंगे और वहाँ अपना कर्मफल भोगेंगे और फिर वापस आ जाएंगे। फिर दोबारा कर्म करेंगे, फिर चले जाएंगे। इसलिए बार–बार मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए।

93. शंका– आपने कहा था, हम लोग मोक्ष से धरती पर आए हैं। अगर हमें फिर मोक्ष मिले तो हमें मोक्ष में भी इस बात का भय, दुःख, चिंता लगी रहेगी कि हम कहीं वापस धरती पर न चले जाएं?

☯ **समाधान**– चिंता बिलकुल नहीं लगेगी। एक व्यक्ति ने अहमदाबाद से दिल्ली तक रेलवे आरक्षण कराया। उसको सीट मिल गई। उसको पता है कि मैं अहमदाबाद से बैठूँगा और दिल्ली स्टेशन पर जाकर मुझे रेलगाड़ी छोड़ देनी है। जैसे–जैसे दिल्ली का स्टेशन नजदीक

आएगा तो क्या उसकी चिंता बढ़ती है? नहीं न। तो मोक्ष में भी चिंता क्यों बढ़ेगी? उसको पता है कि इतने समय का मोक्ष है और अब इतना समय पूरा होने वाला है। जब रेलगाड़ी छोड़ने में आपको चिंता नहीं है तो मोक्ष छोड़ने में भला क्यों चिंता होगी?

अगर आप बुद्धिमान हैं और न्याय से चलते हैं तो आपको चिंता नहीं होगी। अगर आप पक्षपाती हैं, अन्याय प्रिय हैं तो आपको चिंता होगी। मोक्ष वाला व्यक्ति पक्षपाती तो होता नहीं है। वो तो न्यायप्रिय होता है और वो न्याय से चलता है। भई जितना कर्म किया था, उसका फल पूरा हो गया, फिर कर्म करो, फिर मोक्ष में आ जाना। इसलिए कोई चिंता नहीं होगी।

94. शंका– कोई धनी व्यक्ति जो कि गरीबों का खून चूसकर धन एकत्र करता है, यदि कोई व्यक्ति उसे लूटकर वो धन गरीबों में बाँट देता है तो क्या उसे भी ईश्वर के द्वारा दंड मिलेगा? इन दोनों में से अधिक दंड किसको मिलेगा?

☯ ***समाधान***– इसका समाधान है:–

- गरीबों का शोषण करना, खून चूसना यह भी एक अपराध है। ***सेठ ने जो अपराध किया, उसका दंड सेठ को मिलेगा।***
- ***किसी ने सेठ का धन लूट लिया, वह भी अपराध है। उसे लूटने का भी दंड मिलेगा।***

वह सेठ खून चूसता है या जो भी करता है, इसका जिम्मेदार दूसरा व्यक्ति नहीं है। इसका जिम्मेदार वही व्यक्ति है, जो शोषण कर रहा है। ***आपको यह अधिकार नहीं है कि आप सेठ की संपत्ति को लूट (चोर) लें।***

- यह राजा (सरकार) का काम है या परमात्मा का काम है, वो उसको दंड देगा। दूसरा व्यक्ति कानून हाथ में नहीं ले सकता।
- ***दूसरा व्यक्ति अगर गरीबों को दान देना चाहता है तो अपना धन कमाकर दान दे।*** उसे किसने रोका है? लूट करके दान देना उसका अधिकार नहीं है। अपना धन कमाओ और गरीब को दो, कौन रोकता है?
- ***दान देना 'शुभ कर्म' है, लूटमार करना 'अशुभ कर्म' है।*** दोनों कर्म अलग–अलग हैं। दोनों का अलग–अलग फल है। अब किसको

अधिक दंड मिलेगा, यह तो भगवान जाने। पूरा–पूरा हमको नहीं मालूम।

95. शंका– क्या कभी चर–अचर जीव जब मनुष्य योनि में थे, एक से अधिक बार मोक्ष भोग चुके हैं?

☯ ***समाधान***– जी हाँ। इसका आधार है:–

- सभी जीवात्माएं चाहे चर–अचर जिस भी योनि में रहें, वो चाहे वृक्ष आदि में हो, चाहे मनुष्य आदि में हों, किसी में भी हों, वो एक से अधिक बार मोक्ष भोग चुके हैं। वेद, उपनिषद्, दर्शन से यह पता चल जाता है।
- यह बताइए– जीवात्मा अनादि है या किसी काल–विशेष में उत्पन्न हुआ था? उत्तर है – ***जीवात्मा अनादि है।***
- यह सृष्टि भी अनादि है या किसी दिन पहली बार बनी थी? उत्तर है – ***सृष्टि अनादि है।*** यह सृष्टि खत्म होने वाली नहीं है। सांख्य–दर्शन में कपिल मुनि जी ने एक सूत्र बनाया – 'इदानीमिव सर्वत्र नात्यंतोच्छेदः' अर्थात ***जैसे इस समय सृष्टि चल रही है, ऐसे ही हमेशा चलती रहती है।*** यह कभी भी पूरी तरह बंद नहीं होती।
- अनादि में तो इनफाइनाइट (अनन्त) टाइम है। कोई प्रारंभ ही नहीं, कितना लंबा समय है। इतने लंबे समय में कितनी ही बार जा चुके मोक्ष में, एक बार क्यों? आगे भविष्य में कितने ही बार जायेंगे, आगे भी अनंतकाल है। टाइम की कोई सीमा नहीं है, न भूतकाल में, न भविष्य में। ***भूतकाल में कितनी ही बार हम मोक्ष में जा चुके हैं और कितनी ही बार भविष्य में फिर जाएंगे।***
- सभी जीवात्मा एक जैसे हैं। सबका स्वरूप मूल रूप से समान है। ***जिस काम को एक जीवात्मा कर सकता है, उस काम को दूसरा भी कर सकता है।*** अगर एक आत्मा 'महर्षि दयानंद' बन सकता है तो आप भी बन सकते हैं। मैं भी बन सकता हूँ। बारी–बारी से सब बन जाएंगे। एक व्यक्ति एम.ए. कर सकता है तो दूसरा क्यों नहीं कर सकता है? दूसरा भी कर सकता है, तीसरा भी कर सकता है। जो पुरुषार्थ करेगा, वह एम.ए. कर लेगा, पी.एच.डी कर लेगा, एम.एस.सी. कर लेगा, एम.टेक हो जाएगा, एम.बी.ए हो जाएगा, डॉक्टर भी बन सकता है, मोक्ष में भी जा सकता है। बारी–बारी से सब मोक्ष में जाएंगे।

- ***इतना मूर्ख कोई जीवात्मा नहीं है कि वो अनंतकाल तक मार खाता ही रहे और कभी भी उसको अक्ल नहीं आए।*** कितनी मार खाएगा, उसकी भी लिमिट रहती है। बहुत मार खाएगा, फिर खा–खा के थक जाएगा। फिर उसको अक्ल आ जाएगी कि– भई, मैं दुनिया में अब थक गया हूँ। अब और जन्म नहीं चाहिए। ***हर एक को अक्ल आ जाएगी, तो बारी–बारी से सब मोक्ष में जाएंगे।***
- ***हमारी बुद्धि भी बढ़ती–घटती है, धीरे–धीरे बुद्धि का विकास होता है।*** आज से दस वर्ष पहले क्या आपका ज्ञान इतना ही था जितना कि आज है? बढ़ गया न, और अगले दस साल में और कितना बढ़ जाएगा। ऐसे पुरुषार्थ करने से, अनुभव से, ज्ञान का स्तर बढ़ता है। आप में पुरुषार्थ की और थोड़ी ज्ञान–विज्ञान की कमी भी है। ज्ञान बढ़ेगा और व्यक्ति पुरुषार्थ करेगा तो आगे बढ़ जाएगा। और फिर ऐसा भी होता है कि ज्ञान बढ़ने के बाद भी व्यक्ति आलसी–प्रमादी हो सकता है। लेकिन अंत में पुरुषार्थ तो उसे करना पड़ेगा।
- ऐसा भी होता है कि व्यक्ति ने कुछ पुरुषार्थ किया, उसकी गति कम है। उसको थोड़ा ज्ञान हुआ, कुछ–कुछ समझ में आया फिर आगे पुरुषार्थ नहीं किया। एक व्यक्ति पुरुषार्थ तो बहुत करता है, पर बुद्धिपूर्वक नहीं करता, बुद्धि भी साथ में चाहिए। कितने ही लोग खूब मेहनत करते हैं। पर धंधे में बुद्धि से काम नहीं करते, इसलिए बहुत नहीं कमा पाते। कई लोग बुद्धि से काम लेते हैं, मेहनत कम करते हैं, वो बहुत कमा लेते हैं। इसलिए ***बुद्धि और पुरुषार्थ दोनों चाहिए। ऐसे दोनों को मिलाकर साथ चलेंगे तो फिर जल्दी विकास होगा।***

  'जड़ बुद्धि' का मतलब जिसकी बुद्धि तीव्र (Sharp) नहीं है यानी कम बुद्धि वाला है, उसका पिछला संस्कार कमजोर है, इच्छा होने पर भी वह विशेष प्रगति नहीं कर पाता तो वह कम प्रगति (प्रोग्रेस) करेगा। उसे अधिक समय लगेगा, पर सीख तो जाएगा। सीखने में रोक–टोक नहीं है। सब सीख सकते हैं।

96. शंका– यदि मनुष्य पुरुषार्थ करता है और उसका फल नहीं मिला अथवा न्यून मिला तो दोषी कौन है, भाग्य या हम?

☯ ***समाधान–*** इसका समाधान है:–

- ***यदि मनुष्य पुरुषार्थ करता है और उसका फल नहीं मिलता या कम मिलता है, तो निःसंदेह फल देने वाला दोषी है।***
- यहाँ समाज ने आपको पूरा फल नहीं दिया। नहीं दिया तो कोई बात नहीं, आपका कर्म बेकार नहीं जाएगा। ***अगर समाज ने, राजा ने, पंचायत ने, आपको कर्म का पूरा फल नहीं दिया और आपका फल बच गया, तो अंत में आपका फल ईश्वर देगा।*** उस पर पूरा–पक्का विश्वास करें। आपको फल मिलेगा, फल कहीं नहीं जाएगा।
- लोग क्या सोचते हैं? हमने अच्छे काम किए, इतनी समाज की सेवा की, इतना दान दिया, इतना पुण्य किया और हमको फल तो मिला ही नहीं। ***अच्छे कर्म का फल नहीं मिला तो शोर मचाते हैं:– देखो साहब! हमारा कर्म बेकार गया, हमारा फल नहीं मिला।***
- ***वे यह नहीं सोचते कि उन्होंने जो बुरे कर्म किए, उसका फल भी तो नहीं मिला।*** जो गड़बड़ की, जो गलती की, उसका दंड अभी नहीं मिला, तो क्या आगे भविष्य में मिलेगा या नहीं मिलेगा? ***उसके बारे में आप शोर नहीं करते कि दण्ड क्यों नहीं मिला अभी तक?***

  अगर बुरा फल मिलेगा तो अच्छा भी मिलेगा। दोनों मिलेंगे, इसलिए चिंता की कोई बात नहीं है।
- आपको अच्छा फल चाहिए कि बुरा? अच्छा चाहिए न। इसलिए अच्छा काम करो, बुरा काम नहीं करना, नहीं तो दंड मिलेगा। बार–बार दोहराता हूँ कि – ***"दंड के बिना कोई सुधरने वाला नहीं है।"*** दंड को हमेशा याद रखें, तो ही सुधार होगा।

97. शंका– जब प्रारब्ध से किसी कर्म का फल रोग के रूप में मिलना ही है, कर्म का दंड मिला है तो उसे भोगें, रोगी बने रहें, इलाज क्यों करवाते हैं?

☯ ***समाधान–*** भगवान ने हमको 'कर्म–दंड' के रूप में रोग दिया है और भगवान ने ही कहा कि इस रोग की चिकित्सा भी करवा लेना। रोगी हो जाएं, तो फिर चिकित्सा करवाएं। चिकित्सा के लिए हजारों प्रकार की औषधियाँ, वनस्पतियाँ भगवान ने बनाई हैं।

हम कर्म गड़बड़ करते हैं तो दंड मिलेगा और दंड मिलेगा तो फिर चिकित्सा कराकर और आगे अवसर भी तो मिलना चाहिए। यदि रोगी हो गए और चिकित्सा नहीं कराई तो मर जाएंगे और मर गए तो फिर आगे 'मोक्ष' के लिए अवसर आपको मिल नहीं पाएगा। इसलिए रोग की चिकित्सा भी करवानी चाहिए।

98. शंका– जब मनुष्य अच्छे कर्म करता है, ईश्वर की भक्ति करता है तो उसे मोक्ष प्राप्त होता है। मोक्ष के समय के बाद वो फिर जन्म लेता है और अच्छे कर्म करता है तो भगवान का मनुष्य को बार–बार जीवन देने का क्या उद्देश्य है?

☯ **समाधान**– मनुष्य को बार–बार जन्म देना भगवान का उद्देश्य नहीं है। उसका उद्देश्य तो 'मोक्ष' में भेजना है। पर जब हम मोक्ष वाले कर्म ही नहीं करेंगे, तो भगवान क्यों मोक्ष में डाल देगा? कमी हमारी ओर से है, भगवान की ओर से नहीं। भगवान ने तो कह रखा है, 'ब्रह्मलोक' में जाओ, 'मोक्ष' में जाओ, यहाँ संसार में मत पड़े रहो, यहाँ तो दु:ख भोगना पड़ेगा।

यह हमारी गड़बड़ है, हमारी कमी है। ***हम मोक्ष के लिए काम नहीं करते, बल्कि पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा के लिए काम करते हैं। इसलिए भगवान हमको बार–बार जन्म देता है।***

मोक्ष पाना हमारे हाथ में है, मोक्ष वाले कर्म करेंगे, तो मोक्ष मिल जाएगा। जैसे परीक्षा में अच्छे अंक लाना विद्यार्थी के हाथ में है। परीक्षक तो केवल निर्णायक है। इसी प्रकार से संसार में जन्म लेना या मोक्ष प्राप्त करना हमारे हाथ में है। ईश्वर तो केवल फलदाता निर्णायक है।

99. शंका– वेदों में प्राणी–मात्र को कर्म के अनुसार दु:ख मिलना लिखा ही है तो फिर उनको दु:ख भोगने देना चाहिए। तो वेदों में क्यों लिखा है कि प्राणी–मात्र की सेवा, सहायता करनी चाहिए?

☯ **समाधान**– इसका उत्तर है :–

- कल्पना करो कि, ***अपने कर्मानुसार हम भी कहीं दु:ख में फँस गए, तब हम क्या चाहेंगे?*** तब हम यही चाहेंगे कि दूसरा व्यक्ति

हमारी सहायता कर दे, हम भले ही दु:ख में फँस गए। जब हम चाहेंगे कि दूसरा व्यक्ति हमारी सहायता करे, तो हमको भी दूसरे की सहायता करनी चाहिए। हम भी अपने कर्मानुसार दु:ख में फँसेंगे, वो भी अपने कर्मानुसार दु:ख में फँसा है।

- ***जैसा व्यवहार हम दूसरों से अपने लिए चाहते हैं, वैसा ही हमें दूसरों के साथ करना चाहिए। यह धर्म की बात है, मनुष्यता की बात है।*** इसलिए हमें दूसरों की सहायता करनी चाहिए।
- ईश्वर ने उसके कर्मानुसार उसको दु:ख दिया। किसी को विकलांग बना दिया, किसी को रोगी बना दिया। कर्म के अनुसार दु:ख देना, यह ईश्वर का काम है। ईश्वर ने अपना काम किया।

जिस ईश्वर ने व्यक्ति को कर्मानुसार दु:ख दिया, उसी ईश्वर ने हमको यह सुझाव दिया कि, भई इस रोगी की, इस मुसीबत के मारे की सहायता करना। ईश्वर के आदेश का पालन करना हमारा धर्म है। इसलिये कोई दु:ख में फँस जाए, आपत्ति में फँस जाए, तो उसकी सेवा–सहायता जरूर करनी चाहिए।

- ***ईश्वर के दंड विधान में बाधा उत्पन्न करना तब होता, जब ईश्वर मना कर देता कि रोगी की सहायता मत करो। और फिर भी हम ऐसा करते।*** यह उसके काम में दखलंदाजी होती। पर जब ईश्वर स्वयं ही कह रहा है कि, ''तुम इसकी सहायता करो।'' इसलिए उसके काम में हमने कोई गड़बड़ नहीं की, बल्कि उसके आदेश का पालन किया। अपराधी को दंड देना ईश्वर का काम है और दंड मिलने के बाद उसकी सहायता करना हमारा काम है। क्योंकि यह काम हमको ईश्वर ने बताया है। ऐसा करने में कोई आपत्ति नहीं है।
- और एक बात जो खास समझने की है कि – जो भी दु:ख हमें प्राप्त होते हैं, वे सब हमारे कर्मों का फल नहीं है। ***कुछ दु:ख हमारे कर्मों का फल है, कुछ अन्याय से भी हमको भोगने पड़ते हैं।*** दूसरे व्यक्तियों या प्राणियों के द्वारा अन्याय हो सकता है। प्राकृतिक दुर्घटनाओं से भी हमको दु:ख भोगने पड़ते हैं। अत: सहायता करना कोई अपराध नहीं है।

100. शंका– आपके अनुसार हमें परमात्मा का साक्षात्कार और मोक्ष की प्राप्ति करनी चाहिए, परंतु शहीद भगत सिंह और अन्य स्वतंत्रता सेनानी अगर वैराग्य वाले रास्ते पर चलते, तो क्या हमें स्वतंत्रता मिलती?

☯ **समाधान–** ये पूछना चाहते हैं कि मैं उपासना के मार्ग पर चलकर परमपिता को प्राप्त करूँ या फिर भारत वर्ष के इतिहास तथा ज्ञान–गौरव की रक्षा के लिए राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार और कुरीतियों को समाप्त करने के लिये क्राँति का मार्ग अपनाऊँ? उत्तर हैः–

- जिस समय हमारा देश परतंत्र था, पराधीन था, और महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस, ये सब लोग देश रक्षा के लिए चले। इन्होंने त्याग किया, बलिदान किया। उस समय देश में ब्राह्मण, संन्यासी, उपदेशक, वेद को पढ़ाने वाले भी थे और धोबी, नाई और मिठाई बनाने वाले हलवाई भी थे।

  क्या उस परतन्त्रता के समय में धोबियों, नाइयों, हलवाइयों ने अपने–अपने कार्य छोड़ दिए थे? क्या वे सब स्वतन्त्रता की लड़ाई में कूद पड़े थे? नहीं न ! तो जब धोबी, नाई, हलवाई आदि अपना काम नहीं छोड़ते, तो ब्राह्मण अपना काम क्यों छोड़ें ? यदि ब्राह्मण अपना काम छोड़कर क्षत्रिय का काम शुरु कर देता है, तो यह बुद्धिमत्ता नहीं है। यह ब्राह्मण की उन्नति नहीं, पतन है।

- शहीद भगत सिंह आदि लोग यदि वैराग्य के रास्ते पर चलते, तो हमें स्वतंत्रता नहीं मिलती। ये बात सत्य है। परंतु यदि महर्षि दयानंद जैसे ब्राह्मण संन्यासी न होते, तब भी स्वतंत्रता नहीं मिलती। इसलिए ब्राह्मण और क्षत्रिय आदि सभी लोग चाहिए।

- भगत सिंह आदि ब्राह्मण व संन्यासी क्यों नहीं बन पाए? उनके पूर्व जन्मों के इतने वैराग्य, विद्या आदि के संस्कार नहीं थे। क्षत्रियत्व के संस्कार तो थे। इसलिए क्षत्रिय बनकर उन्होंने देश की रक्षा की। अपनी योग्यता और संस्कारों के अनुसार उन्होंने बहुत अच्छा काम किया।

- यह मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है। अंतिम लक्ष्य तो मोक्ष (सब दुःखों से छूटना एवं आनंद की प्राप्ति) है। इसलिए वही प्राप्त करना चाहिए। क्षत्रिय बनकर देश की रक्षा करना, इसमें बाधक नहीं है, बल्कि एक मध्यगत स्तर है।

- **वास्तव में समाज को सबकी जरूरत है। ब्राह्मण भी चाहिए, क्षत्रिय भी चाहिए, वैश्य भी चाहिए।** आपको अपनी क्षमता (कैपेसिटी) और अपनी योग्यता देखनी है कि, आप इनमें से क्या बन सकते हैं ?

(1) पहली प्राथमिकता है – ब्राह्मण बनने की। आज सच्चा ब्राह्मण नहीं मिलता। आज जितने ब्राह्मण हैं, एकाध को छोड़ दो, बाकी लगभग सब के सब व्यापारी बन गये हैं। सब दुकान खोलकर पैसे कमाने में लगे हैं। **आज अच्छे ब्राह्मण नहीं मिलते, इसलिए यह देश और दुनिया बिगड़ गयी।**

देश को बचाने के लिए जितनी राजाओं, क्षत्रियों, वीरों की आवश्यकता है, उससे कहीं ज्यादा आवश्यकता सच्चे ब्राह्मणों की है। जो सच्चे देशभक्त, ईमानदार, सच्चे ब्राह्मण और ईश्वर भक्त हों, पहला नंबर उनका है। वो देश को बचा सकते हैं।

आप अपनी क्षमता को देखें। अगर आप ब्राह्मण बन सकते हैं तो प्रथम वरीयता (फर्स्ट प्रिफरेन्स) है– ब्राह्मण बनिए।

(2) **अगर इतनी क्षमता, इतनी सामर्थ्य नहीं है, बुद्धि नहीं चलती, इतनी मेहनत नहीं कर सकते, विद्या नहीं पढ़ सकते, तो द्वितीय विकल्प है– अच्छे क्षत्रिय बनिए। फिर वीरों का मार्ग अपनाओ। सेनाओं में जाओ और देश की रक्षा करो।**

(3) **यदि उतनी भी क्षमता नहीं है तो फिर वैश्य बनिए। पैसे कमाइए और दान दीजिए।** अब लोग पैसे तो कमाते हैं, मगर दान नहीं देते। फिर भला देश की रक्षा कैसे होगी?

मैं जब कहता हूँ कि, 'अपरिग्रह' का पालन करो, बहुत पैसे मत कमाओ।'' तो फिर लोग कहते हैं – ''जी देखो, वेद में लिखा

है कि 'शतहस्त समाहर' यानी खूब कमाओ, सौ हाथों से कमाओ।'' मैं कहता हूँ – ''हाँ, बिल्कुल लिखा है, पर इसके आगे क्या लिखा है, वो भी तो पढ़ो।'' वेद में 'शतहस्त समाहर' के आगे लिखा है कि– "सहस्रहस्त संकिर" यानी ***सौ हाथों से कमाओ और हजार हाथों में बाँटो।*** लोग आधा पढ़ लेते हैं कि, चारों ओर से कमाओ और अगला पढ़ते नहीं। फिर ऐसे थोड़े ही देश चलता है। ऐसे देश की रक्षा नहीं होती।

मोक्ष केवल ब्राह्मण को और संन्यासी को मिलेगा। अगर मोक्ष में जाना है, तो ब्राह्मण बनना पड़ेगा। यही एक ही रास्ता है। "नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय" अर्थात् मोक्ष प्राप्ति के लिए दूसरा कोई रास्ता नहीं है। इसलिए अपनी–अपनी योग्यता बढ़ाओ, तपस्या करो, विद्या पढ़ो, ब्राह्मण बनो और विद्या का प्रचार–प्रसार करो। फिर वैराग्य बढ़ाओ, फिर संन्यासी बनो, तब कहीं मोक्ष का रास्ता खुलेगा। ऐसे नहीं खुलेगा, यह ध्यान रखना।

पहले बता रहा हूँ। घर छोड़े बिना किसी का मोक्ष होने वाला नहीं। ***अनेक पंडित लोग जनता को खुश करने के लिए बोलते हैं कि– ''साहब, घर में बैठे–बैठे भी गृहस्थ आश्रम से सीधा मोक्ष हो सकता है।'' वे बिल्कुल झूठ बोलते हैं।*** ऐसा कहीं नहीं लिखा।

'सत्यार्थ प्रकाश' के पाँचवे समुल्लास में लिखा है कि – ***''मोक्ष केवल अति उग्र तपश्चरण करने वाले संन्यासियों का ही होता है, अन्यों का नहीं।*** ''आपको मोक्ष में जाना है, तो संन्यासी बनना पड़ेगा। घर में बैठे–बैठे मोक्ष हो जाता, तो मैं ही घर क्यों छोड़ता ? और भूतकाल में लाखों संन्यासी घर क्यों छोड़ते?

''इति प्रथम भाग''

"शंका–समाधानकर्ता का संक्षिप्त परिचय"

नाम : **स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक (दर्शनाचार्य, योग विशारद)**

अध्ययन : योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त और मीमांसा दर्शन (11 उपनिषदों –ईश, केन, कठ आदि का) व ऋग्वेद और यजुर्वेद का कुछ अध्ययन किया।

वर्तमान कार्य :

1. **वेद प्रचार कार्य :–** देश भर में कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, औद्योगिक–प्रतिष्ठानों, क्लबों, छात्रालयों, न्यायालयों, वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, उच्च अधिकारियों तथा न्यायाधीशों आदि बुद्धिजीवियों में विशेष रूप से मानव–धर्म का प्रचार करते हैं।
2. **अध्यापन :–** दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़, साबरकांठा, गुजरात में दर्शन, उपनिषद एवं वेदादि शास्त्रों का अध्यापन करते हैं।
3. **शास्त्रार्थ :–** शास्त्रार्थों के माध्यम से धर्म का प्रचार करते हैं।
4. **शंका–समाधान :– स्वामी जी आध्यात्मिक शंका समाधान के विशेषज्ञ हैं।**

विदेश प्रचार यात्रा : नेपाल और इंग्लैण्ड।

लेखन कार्य: तत्त्वज्ञान, दु:ख कारण और निवारण नामक पुस्तिकाएँ, क्रोध को कैसे दूर करें, सत्य बोलने से लाभ, दर्शन–सार नामक पत्रक, विभिन्न पत्रिकाओं में योग और अध्यात्म सम्बन्धी लेख।

जीवन प्रसंग –

बाल्यकाल से ही दैनिक यज्ञ, सन्ध्या, स्वाध्याय–सत्संग, आर्य समाज में जाना, विद्वानों की सेवा इत्यादि। 3–4 बार चारों वेदों का सम्पूर्ण मन्त्र–पाठ किया।

संस्कारी परिवार :–

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक के परिवार के 7 व्यक्तियों ने पीढ़ी–दर–पीढ़ी वैदिक विद्वान बनकर वेद प्रचार किया, यह एक ऐतिहासिक–प्रेरक तथ्य है।

पुरस्कार एवं सम्मान :–

"डॉ. मुमुक्षु आर्य महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति पुरस्कार", "स्वामी सत्यानन्द स्मृति पुरस्कार", "वैदिक प्रचार प्रसार सम्मान", "आर्य विद्वान् दर्शन सम्मान", "वेद दर्शन प्रचारक संन्यासी" सम्मान प्राप्त।

संपादक